पुस्तक परिचय

सन् 1956 ई. से पहले रामायण की समीक्षा तमिल भाषा में श्री पैरियर ई. व्ही. रामास्वामी नायकर, ग्राम मालीगाई, पोस्ट पुथुर, जिला त्रिचुरापल्ली (तामिनलाडु प्रदेश) ने लिखी व छापी। दूसरा अंग्रेजी भाषा में अनुवाद 'दी रामायण ए टू रीडिंग' नाम से राशनलिस्ट पब्लिकेशन, तामिलनाडु-2 ने सन 1951 ई. में छापा। तीसरा हिन्दी भाषा में अनुवाद 'सच्ची रामायण नाम से ललईसिंह यादन, अध्यक्ष, अशोक पुस्तकालय (रजिस्टर्ड) ग्राम व पोस्ट–झींझक, जिला कानपुर (उत्तर प्रदेश) ने दि. 1.10.1968 ई. को छापा। उत्तर प्रदेश गवर्नमेंट गजेट दिनांक 20 दिसम्बर सन् 1961 की आज्ञानुसार केवल हिन्दी व अंग्रेजी एडिशन यह लिखकर जब्त कर दिए गए कि, इस पुस्तक से भारत के कुछ नागरिक समुदाय की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचती है।

उपरोक्त आज्ञा के विरुद्ध प्रकाशक ललईसिंह यादव ने हाईकोर्ट ऑफ जुडीकेचर इलाहाबाद में क्रिमिनल मिसलिनियस एप्लीकेशन प्रस्तुत की। माननीय जस्टिस श्री के.एन. श्रीवास्तव व माननीय जस्टिस श्री हरिस्वरूप अपीलांट की ओर से बनवारी लाल यादव एडवोकेट हाईकोर्ट और रिस्पान्डेट (उत्तर प्रदेश गवर्नमेंट) की ओर से गवर्नमेंट एडवोकेट तथा उनकी सहयोगी श्री पी.सी. चतुर्वेदी एडवोकेट व श्री आसिफ अंसारी एडवोकेट की बहस दि. 26, 27, व 28 अक्टूबर 1970 ई. को तीन दिन लगातार सुनी।

माननीय जस्टिस श्री ए.के. कीर्ति ने मुकदमा नंबर 412 सन 1970 ई. क्रिमिनल मिसनेनियस एप्लीकेशन-अंडर सेकशन 19 बी. क्रिमिनल प्रोसीजर कोड में दि. 19 जनवरी, सन् 1971 ई. को बहुमत का निर्णय दिया कि–

1. गवर्नमेंट ऑफ उत्तर प्रदेश की पुस्तक 'सच्ची रामायण' की जब्ती की आज्ञा निरस्त की जाती है।
2. जब्त शुदा पुस्तकें सच्ची रामायण अपीलांट ललईसिंह यादव को वापस की जाएं।
3. गवर्नमेंट ऑफ उत्तर प्रदेश की ओर से अपीलांट ललईसिंह को तीन सौ रुपए खर्चे के दिलाए जाएं।

उपरोक्त मुकदमा में अपीलांट ललईसिंह यादव की ओर से जो रीज्वाइंडर अर्थात प्रत्युत्तर किया गया था–पाठकों की विशेष मांग पर उसे 'सच्ची रामाण की चाभी' के नाम से छापा गया है।

दि. 9.12.71 रघुराजसिंह यादव

एक साथ दो किताब (टू इन वन)

सच्ची रामायण

और

सच्ची रामायण की चाभी

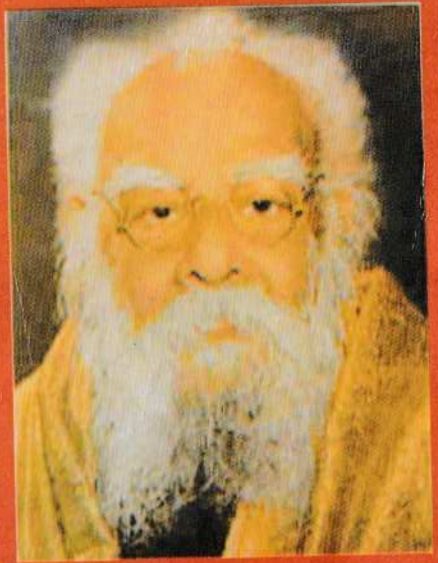

लेखक : पेरियार रामास्वामी नायकर

ललई सिंह यादव

प्रथम संस्करण : 25 मई, 2013 (बुद्धाब्द 2558)

© : सर्वाधिकार प्रकाशक

रचना : सच्ची रामायण
और
सच्ची रामायण की चाबी

रचनाकार : **रामा स्वामी पेरियार,**
ललई सिंह यादव

आवरण : अमर विशारत

सहयोग राशि : **50 रुपए**

प्रकाशक [illegible] अम्बेडकर प्रचार समिति
[illegible]स, [illegible]देव गली
मोती कटरा, [illegible]

परिचय

चौधरी ललईसिंह यादव

ललईसिंह यादव का जन्म दिनांक 1.9.11 ईस्वी को ग्राम कठारा, रेलवे स्टेशन झींझक, जिला कानपुर में समाज सुधारक, सामान्य कृषक परिवार में हुआ। पिता का नाम श्री गज्जुसिंह यादव और माता का नाम श्रीमूला देवी था। हिंदी, उर्दू मिडिल पास करने के पश्चात दिनांक 21.4.33 ईस्वी को ग्वालियर पुलिस में कान्स्टिबल पर भर्ती हुए। कांग्रेसी विचारक प्रसारक होने के कारण सन् 1935 ईस्वी में बरखास्त होकर अपील में बहाल हुए। सन 1937 ईस्वी में हेडकान्स्टिबिल बने। नौकरी से समय बचाकर विभिन्न शिक्षाएं प्राप्त की।

सन 1946 ईस्वी में नान गजेटेड मुलाजिमान पुलिस एंड आर्मी संघ ग्वालियर कायम करके उसके अध्यक्ष चुने गए। 'सोल्जर आफ दी वार' के ढंग पर हिन्दी में 'सिपाही की तबाही' किताब लिखी, जिसने मुलाजिमान को क्रांति के पथ पर विशेष अग्रसर किया।

दिनांक 29.3.47 ईस्वी को ग्वालियर स्टेट्स स्वतंत्रता संग्राम के सिलसिले में पुलिस व आर्मी में हड़ताल कराने के आरोप धारा 131 भारतीय दंड विधान (सैनिक विद्रोह) के अंतर्गत साथियों सहित राज-बन्दी बने। दिनांक 6.11.47 ईस्वी को स्पेशल क्रिमिनल सेशन जज ग्वालियर ने 5 वर्ष स-परिश्रम कारावास तथा पांच रुपए आर्थिक दंड का सर्वाधिक दंड अध्यक्ष हार्ड कमांडर ग्वालियर नेशनल आर्मी होने के कारण दी। दिनांक 12.1.48 ईस्वी को सिविल साथियों सहित बंधन मुक्त हुए जिन सैनिकों को सैनिक न्यायालय द्वारा सजा मिली थी—उन्हें संपूर्ण सजा भुगतनी पड़ी।

इन्हें दिनांक 15.8.72 ईस्वी से सेंट्रल गवर्नमेंट नई दिल्ली की ओर से

तथा दिनांक 1.3.76 ईस्वी उत्तर प्रदेश की ओर से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की पेंशन मिलती थी।

सन 1962 ईस्वी में रिपब्लिकन पार्टी (राजनैतिक दल) के पार्लियामेंट्री बोर्ड (उत्तर प्रदेश) के मंत्री चुने गए।

दिनांक 23.4.66 ईस्वी को भूख-हड़ताली 'उर्दू गुहाफिज दस्ता' उत्तर प्रदेश का सफल नेतृत्व करते हुए संसद भवन नई दिल्ली के सामने भूख हड़ताल की, माननीय जाकिर हुसेन राष्ट्रपति को ज्ञापन दिया।

इनका कहना है कि अंधविश्वास, कूप मंडूकता व मुढ़ता सबसे बड़ी बीमारी है, जिन पुजारी, पंडा मौलवी मुल्ला, पादरी तथा पूंजीपतियों को इसके द्वारा शोषण की चाट लगी है वे इस बीमारी को समाप्त नहीं होने देते है। अतः जिन्हें यह बीमारी है, वे स्वतः इससे मुक्ति ज्ञान विज्ञान द्वारा प्राप्त करें।

गौतम बुद्ध के उपदेश, कि "आप अपना दीपक स्वयं बने" के अनुसार मनुष्य अपनी फिजूल खर्ची और बुरे व्यसनों को रोक कर जो काम वह आसानी से कर सकता है, करने में सपरिवार जुट जावे, धीरे-धीरे अधिक आमदनी वाले पेशे को अपनावे।

सन 1931 ईस्वी में विवाह हुआ, सन 1925 ईस्वी में माताश्री, सन 1939 ईस्वी में पत्नीश्री, सन 1946 में ग्यारह वर्षीया पुत्री थी, सन् 1953 ईस्वी में पिताश्री क्रमशः चार महाभूतों में विलीन हो गए। पिताश्री के इकलौते पुत्र थे। निःसंतान थे। और अन्तिम समय में झींझक में रहते थे। माननीय ललई सिंह यादव जी ने यादव समुदाय में बौद्ध धर्म को फैलाने की भरसक प्रयास किए उनकी मदद से यादव समुदाय के काफी लोग बुद्धिस्ट भी बने थे। आज उनके इस महान प्रयास को यादव समुदाय में फैलाने की अति आवश्यकता है, ताकि यादव समुदाय इस महान सपूत को हमेशा याद करता रहे।

दिनांक 15.5.13 ईस्वी।

अमर विशारत

अनुक्रम

सच्ची रामायण

1. परिचय 3
2. प्रथम आवृत्ती पर ललई सिंह यादव के दो शब्द 6
3. भूमिका 9
4. प्रस्तावना 11
5. कथा प्रसंग 15
6. दशरथ 17
7. राम 22
8. सीता 30
9. अन्य जन 40
10. रावण 46
11. राम और सीता के चरित्र 49

सच्ची रामायण की चाभी 70

1. रामायण व महाभारत काव्यों पर श्री जवाहरलाल नेहरू के विचार 71
2. मुकदमों की सूची 73
3. विनम्र निवेदन 75
4. दो शब्द 77
5. प्रत्येक आयटम का उत्तर निम्नांकित है 80
6. परिशिष्ट 120
7. निष्कर्ष 135

प्रथम आवृत्ती पर ललई सिंह यादव के दो शब्द

1. राम और रामायण के सभी पात्रों को यदि भगवान का अवतार या देवीशक्ति वाला मान लिया जाए—तब तो किसी विषय पर बुद्धि-गम्य-तर्क करते हिन्दू, हिन्दू न रहकर विधर्मी कहा जावेगा। बुद्धि-युक्त सच्ची मानवता खतरे में पड़ जाएगी।
2. अतः उन्हें केवल मानव-मात्र समझकर उनके चरित्रों का विवेचन किया जाकर सच्ची रामायण की शंकाओं का समाधान किया जाता है।
3. रामचरित्र उपाध्याय कृत 'रामचरित्र चिंतामणि', मैथिलीशरण गुप्त कृत 'साकेत' केदारनाथ मिश्र कृत 'कैकेई' व बालकृष्ण शर्मा नवीन कृत 'उर्मिला' के अनुसार राम को केवल मानव-मात्र के रूप में चित्रित किया गया है।—राम कथा 301 अनुच्छेद।
4. चंद्रिकाप्रसाद जिज्ञासु कृत 'रावण और उसकी लंका' छठवी बार पेज नंबर 21 में श्री मेल्लांडी व्यंकट रत्नम द्वारा लिखित 'दी रामा ग्रेटेस्ट फैरोह आफ इजिप्ट' नामक पुस्तक में सिद्ध किया गया है, कि राम और कौसल्या, राम, लक्ष्मण, सीता व वरिष्ठ नाम के व्यक्ति भारत में कभी पैदा नहीं हुए है।

   इस मत को मान लेने से या असुरों को असीरियन कहने की शेख़ी व साहस करने से सम्पूर्ण रामायण विदेशी बनाने में राम से भी हाथ धोना पड़ेगा और सारा गुड़ गोबर हो जाएगा। अतेव आर्य पंडित की यह स्थापना भयावनी है।

रावण का द्रविडियन होना तो दक्षिणी भारत के सभी लोग स्वीकार करते हैं। अधिकांश इतिहास लेखकों का भी यही मत है, कि द्रविड लोग भारत के मूल निवासी है।

5. कामिल बुल्के कृत 'राम कथा' 110 अनुच्छेद के अनुसार राम कथा के वानर, ऋक्ष (भालू) और राक्षस बिन्ध्य प्रदेश तथा मध्य भारत की आदिवासी अनार्य जातियां थी। इसके विषय में प्रायः किसी को भी किसी प्रकार का मत भेद नहीं है। यद्यपि वाल्मीकि रामायण में इन आदिवासियों को वास्तव में वानर व ऋक्ष आदि माना गया है—फिर भी आदिकाव्य के अनेक स्थलों से पता चलता है, कि प्रारंभ में वे सब मनुष्य ही थे।

   इसका समर्थन वाल्मीकि रामायण युद्ध कांड सर्ग 66/5 से होता है। कुम्भकरण के युद्ध के समय युवराज अंगद से नल, नील, गवाक्ष और कुमुद से कहा, कि "हे वीरो, तुम लोग श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न हुए हो। इस बात को भूलकर निर्बलों की तरह कहा भागे जा रहे हो।"

   इसका समर्थन जी. रामदास कृत 'दी इवारिजिनल ट्राइब्स इन दी रामायण मेन इन इंडिया' भाग 5 पृष्ठ 28 से 55 और 'एवारिजिनल मेन्स इन दी रामायण जर्नल बिहार उड़ीसा सोसाइटी' भाग 11 पृष्ठ 41 से 53 से भी होता है। राम कथा 110 अनु।

   जैन रामायणों के अनुसार जिस जाति की ध्वजा पर बंदर का चिह्न होता था—वह वानर जाति कहलाती थी। जैसा कि आज कल रूस देश की ध्वजा पर 'रीछ' का चिह्न होने से उन्हें रशियन बीयर्स और अंग्रेज जाति की ध्वजा पर 'शेर' का चिह्न होने से उन्हें 'ब्रिटिश लायंस' कहते हैं।

   जैन ग्रंथों की राम रावणकथा में वानर चिह्नांकित ध्वजा मुकुट धारी जाति वानर वंशीय कही गई है। विभिन्न विद्वान भी इसी मत से सहमत है।

   का समर्थन शिवनंदन सहाय कृत 'तुलसीदास' पृष्ठ 496 से भी होता है। राम कथा 110 अनुच्छेद।

6. वाल्मीकि रामायण सुंदर कांड 110 सर्ग के अनुसार रावण के एक सिर व दो भुजाएं थी।

चिंताहरण चक्रवर्ती कृत 'इंडियन्स हिस्टोरिकल क्वाटरली' भाग 1 पृष्ठ 779 और एन.एन. व्यास कृत जर्नल ऑफ द इंडियन इंस्टीट्यूट, बड़ौदा' भाग 4 पृष्ठ 1 से भी समर्थन होता है। –राम कथा 112 अनु.।

7. रामकथा अनुच्छेद 112 के अनुसार रावण का दशग्रीव नाम पहिले रूपक के रूप में प्रयुक्त हुआ होगा अर्थात जिस मनुष्य की ग्रीवा दश अन्य साधारण मनुष्यों की ग्रीवा के समान बलवान हो, उसका नाम था–'दशग्रीव' 'रावण' और बाद में दशग्रीव धारण करने वाले प्राणी के अर्थ में किया जाने लगा।

–ललईसिंह यादव

भूमिका

रामायण किसी ऐतिहासिक तथ्य पर आधारित नहीं है। यह एक कल्पना तथा कथा है। इसके अनुसार राम न तो तमिलनाडू का निवासी था और न उससे किसी प्रकार संबंधित था। उसके द्वारा मारा गया रावण लंका का राजा था।

राम में तामिल-सभ्यता कण-मात्र न थी। उसकी स्त्री सीता तामिलनाड की विशेषताओं से रहित, उत्तरी-भारत की निवासिनी थी। तामिल के मनुष्यों को बन्दर और राक्षस कहकर उनका उपहास किया जाता है। यही बात स्त्रियों के प्रति भी है।

रामायण-युद्ध में उत्तरी भारत का कोई भी निवासी ब्राह्मण (आर्य) या देवता नहीं मारा गया।

एक शूद्र ने अपने जीवन का मूल्य इसलिए चुकाया था–क्योंकि एक आर्य-पुत्र बीमार होने के कारण मर गया था। (विस्तृत जानकारी के लिए 'शंबूक-बध नाटक' पढ़िए।) (वर्तमान में शम्बूक वध पर एक अच्छी किताब जिसका नाम 'एक रुका हुआ फैसला शम्बूक वध' बड़ी ही क्रांतिकारी पुस्तक है उसे जरूर पढ़े।

वे सब लोग जो इस युद्ध में मारे गए, आर्यों द्वारा राक्षस कहे जाने वाले तमिलनाडू के मनुष्य है।

रावण राम की स्त्री सीता को घर ले गया–क्योंकि राम के द्वारा उसकी बहन 'सूर्पनखा' के अंग भंग किए गए व उसका रूप बिगाड़ा गया। रावण के इस कृत्य के कारण लंका क्यों जलाई जाए? लंका निवासी क्यों मारे जाएं? इस कथा का उद्देश्य केवल दक्षिण की ओर प्रस्थान करना है। तमिलनाडू में किसी सीमा तक सम्मान के साथ इस कथा का विष-वपन

अर्थात प्रचार, उपदेश तथा वहां के निवासियों के लिए निन्ध तथा पीड़ोत्पादक रहा है।

राम और सीता में किसी प्रकार की कोई दैवी तथा स्वर्गीय शक्ति नहीं है।

इस प्रकार कथित स्वतंत्रता प्राप्त कर चुकने के पश्चात गौरांगों (आर्यों) की प्रतिमाएं तथा प्रसिद्धताएं उन स्थानों में ले जाई गई और आर्यो के देवताओं के नाम पर उनके नाम रख लिए गए। तामिलनाडू के जिन निवासियों की नसों में पवित्र द्रविड़ रूधिर खौलता है, उनका यह कर्तव्य है कि वे आर्यों की उस प्रतिष्ठा तथा सभ्यता, जो तमिलनाडू के विचारों और सम्मान को दूषित करती है। (उसे) मिटा देने की शपथ लें।

पेरियर ई.व्ही. रामास्वामी

प्रस्तावना

रामायण और बरेथम (महाभारत) आर्य-ब्राह्मणों द्वारा चालाकी और चतुरता पूर्ण निर्मित प्रारंभिक प्राचीन कल्पित कथाएं हैं। वे द्रविड़ों (शूद्रों के महाशूद्रों) की अपनी मनुष्यता को नष्ट करने के लिए, उनकी बौद्धिक शक्ति को मलिन करने के लिए, उनके अभिमान को सदैव के लिए समाप्त कर देने के लिए, उन्हें फुसला कर अपने जाल में फंसाए रखने के लिए रची गई है।

राम और कृष्ण आर्य जातियों में से 'रामायण' और 'महाभारत' के क्रमशः प्रमुख पात्र है।

पुनः ये कथाएं प्रामाणिक बताई गई है, कि उपरोक्त ग्रंथों के प्रमुख पात्र राम और कृष्ण उनके संबंधियों तथा सहायकों को अलौकिक मनुष्य एवं देवताओं की भांति समझा जाना चाहिए और मानव मात्र के पूजय समझ कर सर्व साधारण द्वारा पूजे जाने चाहिए।

मौलिक पुराणों का सचेत एवं सूक्ष्म अध्ययन प्रकट करता है, कि कल्पित एवं घटित वृत्तांत और घटनाएं असभ्यता पूर्ण, अशिष्ट तथा बर्बरता पूर्ण है। यह बात भी विचारणीय है, कि इन पुराणों में शिक्षा ग्रहण करने के लिए विशेष कर तामिलनाडू के निवासियों के लिए कोई उपयोगी तथ्य नहीं है। इनसे केवल ब्राह्मणों का ही उल्लू सीधा होता है। विशेषतया ये पुराण तामिलनाडू के मनुष्यों के लिए नितांत व्यर्थ है। धर्मोपदेश रहित है। प्रत्यक्ष रूप से ये पुराण ब्राह्मणों के महानतम बताने के लिए, स्त्री जाति को वशीभूत करने के लिए, उसे दासी बनाकर रखने के लिए रचे गए है। ब्राह्मणों के मिथ्या सिद्धांतों को और 'मनु' की धर्म-संहिता को मानने को बाध्य करने के लिए रचे गए है। जो कि मानव-मात्र के लिए अपमान जनक है। इन पुराणों के कल्पित सिद्धांत राम और कृष्ण की सत्ता को जबरन अनंत सिद्ध करते है।

मौलिक पुराण संस्कृत भाषा में रचे गए है। ये पुराण आर्यों को, उनकी बौद्धिक योग्यतानुसार भिन्न-भिन्न समयों की स्थिति विशेषानुसार, विभिन्न काल्पनिक तथ्य को, उन लोगों को संतुष्ट करने के लिए बताते है, जिनके बीच के उपदेश दिया करते थे। वे (आर्य) इनको 'वेद' कहते है। ये मुक्ति-दायक, आश्चर्यजनक तथा स्वर्ग से वंशानुक्रम गति से आए हुए बताए गए है। वे पवित्र-दैविक-धर्म-शास्त्र है, जो कि उपदेश देते है कि मनुष्य को कैसा जीवन व्यतीत करना चाहिए। ये आर्य इन पौराणिक कथाओं को वेदों का सार 'पांचवां वेद' आदि न जाने क्या-क्या कहते है। इस सफेद झूठ के द्वारा छल प्रपंच से प्राप्त की हुई, अपनी उस स्थाई महत्ता को, जिसके कि वे अधिकारी नहीं है, बनाए रखना चाहते है। इतना कहकर इतनी सफेद झूठ बोलकर भी वे यहीं पर सांस नहीं लेते, उन्होंने इन कल्पित कथाओं को धर्म में घुसेड़ दिया और वे उन्हें (पुराणों को) धर्म स्तंभ बताते है, जिन पर आर्यों का धर्म टिका हुआ है, ऐसा कहकर न केवल जनसाधारण को, बल्कि शिक्षित-वर्ग को भी बेवकूफ बनाकर ठगा गया है, उन्हें धोका दिया गया है, इन कहानियों को महत्त्वपूर्ण, उपयोगी और पवित्र बताकर उनको बचपन से ही मनुष्य के रूधिर में इन्जेक्शन की भांति समाविष्ट कर दी जाती है।

तामिलनाडू में नब्बे प्रतिशत लोग अशिक्षित है। अपने को शिक्षित मानने वाले शेष दस प्रतिशत लोग इतने अंध-विश्वासी है कि वे अपने स्वतंत्र विचार ही नहीं व्यक्त कर सकते है। वे द्रविड़ आर्यों के द्वितीय संसार (स्वग) में विश्वास करते है और इस कपोल कल्पित विश्वास के दुष्परिणाम-स्वरूप आर्यों के चिर-दास बने हुए है, संक्षेप में मुसलमानों और ईसाइयों के अतिरिक्त ये सभी (द्रविड़ लोग) रामायण के धार्मिक-भक्त हैं।

इन पुराणों में वर्णित दुराचार-पूर्ण प्रवृत्तियों, उद्देशों और उल्लंघनीय आज्ञाओं का भंडाफोड़ करना आवश्यक हो गया है—ताकि (केवल) तामिलनाडू के निवासी ही नहीं—वल्कि आर्यों द्वारा कहे जाने वाले (सम्पूर्ण) भारत के द्रविड़ (शूद्र व महाशूद्र) अपना दृढ़ विचार रख सकें। इन पुराणों में वर्णित अंध-विश्वास व मूर्खता-पूर्ण बातों से बच सकें और आर्यों के धर्म रूपी जुए से अपने आपको मुक्त कर सकें।

इस परिणाम को दृष्टि में रखते हुए, कि भविष्य में रामायण के पाठकां का समय अब इन कपोल कल्पित तथ्यों को पढ़ने में नष्ट न हो—बल्कि एक

सौ चालीस पृष्ठ की वार्तालाप के रूप में प्रकाशित 'बाल्मीकि रामायण कनवरसेशन' (अंग्रेजी) में वर्णित रामायण के संक्षिप्त और महत्त्वपूर्ण तथ्य, जो कि विचारों को कम न करते हुए लिखी गई है, पढ़नी चाहिए।

हम लोग उन घटनाओं में विश्वास नहीं करते—जो किसी समय में हुई प्रमाणित की गई है। वे घटनाएं वस्तुतः किसी समय न घट सकी थी। तब इस कथा, उपकथा या प्रासंगिक कथा का इतना अनुसंधान क्यों किया जाता है? यह सब क्यों?

इसलिए कि मैं साधारण के समक्ष अपने विचारों को रखता हूं। विशेष कर भारतीय द्रविड़ों (शूद्रों व महा-शूद्रों) के समक्ष जिनको आर्य लोग उपदेश देते हैं, प्रचार करते है और बहुत समय पूर्व उन्होंने हमारे आदमियों द्वारा ख्याति प्राप्त कर ली है। मूल रामायण में कोई प्रशंसनीय तत्त्व नहीं है, न कोई उपदेशात्मक। कंठाग्र करने योग्य तथा अनुकरणीय नहीं है—जो कि तर्क संगत हो। हमारे आदमियों द्रविड़ों (शूद्रों व महा-शूद्रों) को आंखें खोलना चाहिए और आर्यों की कथा की असत्यता तथा मिथ्या हेतु का अनुसंधान करना चाहिए—कि ये कथाएं कहां तक आर्यों का जन्म से ही दूसरे से विशिष्ट होने तथा दूसरों द्वारा सम्मानित होने में सहायक होगी।

यहां पर हम लोग आर्यों के ईश्वर को साकार रूप देने, देवताओं, ऋषियों, इंद्र तथा इसी सदृश्य दूसरे महात्माओं के गुणों को देखेंगे। आर्य, जिन्होंने द्रविड़ों (शूद्रों व महाशूद्रों) की प्राचीन भूमि पर आक्रमण किया, तपश्चात उन्हें अपमानित किया गालियां, दी, उनके साथ दुर्व्यवहार किया तथा मिथ्या और भ्रमोत्पादक वह इतिहास लिखा—जिसे वे रामायण कहते है, जिसमें राम और सीता द्वारा दूसरे प्रति आराध्य करने में सहायता देने को भी आर्य कहा गया है। रावण को राक्षस, हनुमान, सुग्रीव व बालि आदि को बन्दर (महामंत्री जामवंत को रीछ, वयोवृद्ध नेता जटायू को गीध व महान विद्वान काकभुसुण्ड को कौआ आदि) यह वह निर्णय है, कि जिस पर अनुसंधान के विद्वान विद्यार्थी पहुंच सकते है।

आर्यों को जो शक्ति दी गई है, उसके द्वारा किस अपमानित ढंग से दूसरी जातियों को तुच्छतम, स्वाभिमान से अनभिज्ञ बताकर और इतना ही नहीं—उन्हें इस प्रकार तुच्छतम, घृणित तथा निम्न स्तर के प्राणी कहकर उन द्रविड़ों (शूद्रों व महा-शूद्रों) को रामायण में वर्णित आर्य-चरित्रों का प्रेमी माना

गया है औन उन (आर्यों) ने अपने को पूज्य, सर्वश्रेष्ठ व देवता आदि बताकर तथा द्रविड़ों (शूद्रों व महाशूद्रों) को अधर्मी, छली, राज-द्रोही, कपटी वह विश्वासघाती आदि, आदि कहा है। तामिलनाडू के निवासियों तथा भारत के समस्त द्रविड़ों (शूद्रों व महाशूद्रों) के लिए यह विषय उनके जीवन-दर्पण के समान है।

सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि तमिलनाडू के निवासी विशेषतः जब रामायण पढ़ते है, 'कम्बा रामायण' तामिलनाड़ के ब्राह्मणों द्वारा जो 'कम्बा रामायण' को कंठस्थ कर, इसे दूसरों को सिखाकर और इनके संबंध में जनता के समक्ष भाषण देकर अपनी साहित्यिक योग्यता का प्रदर्शन कर अपनी जीविका चलाते है। 'बाल्मीक रामायण' की कथा को चाट कर (छिपाकर) उसकी सत्यता और मौलिकता को समाप्त कर, किस प्रकार दुष्ट एवं पाजी कम्बाओं द्वारा सूक्ष्म पर्दा डाला गया है। इसकी शिक्षा सर्वसाधारण को दी जानी चाहिए। बड़े खेद की बात है तामिलनाडू के विद्वान विद्यार्थी भी अपनी मर्यादा तथा सम्मान को हथेली पर रख 'कम्बा' के कार्यों की पवित्रता तथा महानता का उपदेश देने के लिए जनता के समक्ष उपस्थित होते है।

यदि इस पुस्तक के निष्पक्ष पाठकों को कोई अ-श्रुत व अद्भुत संकेत मिले तो वे कृपया सन 1977 ई. में श्री आनंद चैरियर, इसके पूर्व पंडित नेतसा शास्त्री, मेसर्स सी.आर. श्रीनिवास आयंगर, नरसिमा चैरियर, गोविंदराजार अनंग चैरियर तथा दूसरे ब्राह्मणों द्वारा संस्कृत में तामिल भाषा में अनुवादित पुस्तक को पढ़े। पंडित मन्मथनाथ दातार संस्कृत में एक महान बंगाली विद्वान द्वारा अनुवादित पुस्तक को भी ध्यान देकर पढ़ने की पाठकों से आशा की जाती है। श्री विल्सन का अंग्रेजी अनुवाद तथा दूसरों का सच्चा अनुवाद भी विवरण के लिए पढ़ना आवश्यक है।

—एम. एस. सिसोदिया
पत्रकार, ग्वालियर

कथा प्रसंग

रामायण की घटनाएं और कथा-क्रम बहुत कुछ 'अरबी योधा' 'मदन कामराज' और 'पंत्र-तंत्र' नामक पुस्तकों के समान कल्पित है। वे मानवमात्र की समझ और गूढ़ विचारों से दूर हैं। इसके फलस्वरूप यह दृढ़तापूर्वक कहा जा सकता है कि रामायण कोई वास्तविक कथा नहीं है। कोई भी कह सकता है, कि रामायण में वर्णित तत्त्व निराधार, निरर्थक और अनावश्यक है। तथापि उन परिस्थितियों में जिसमें सद्गुण, दूरन्देश, करुणा तथा शुभेच्छाओं की शिक्षा, जिस असत्य तथा निर्मूल रूप में दी गई है, वह मानव-शक्ति तथा समझ के परे है जबकि इस बात पर अत्याधिक जोर दिया गया है कि रामायण का प्रमुख पात्र 'राम' मनुष्य रूप में स्वर्ग से उतरा और उसे ईश्वर समझा जाना चाहिए। बाल्मीकि ने स्पष्ट कहा है कि राम विश्वास-घात, छल, कपट, लालच, कृत्रिमता, हत्या, आमिष-भोजी और निर्दोष पर तीर चलाने की साकार मूर्ति था। आगे पाठक स्पष्ट देखेंगे, कि राम तथा उसकी कथा में स्वर्गीय शक्ति नहीं है और उसके विषय में वर्णित गुण मानव-मात्र की समझ से बाहर है तथा वे तामिलनाड़ के निवासियों एवं भारत के समक्ष शूद्रों तथा महाशूद्रों के लिए शिक्षा-प्रद एवं अनुकरणीय नहीं है।

कथा श्रोत

रामायण की कथा न तो धर्म-संगत है, न चेतन प्राणी के लिए उपयुक्त है। देवताओं ने चतुर्मुख ब्रह्मा से शिकायत की कि "राक्षस लोग हमारे यज्ञों में विघ्न डालते है।" ब्रह्मा ने यह बात अपने पिता विष्णु से कही। विष्णु ने राम के रूप में पृथ्वी पर अवतार लेने तथा राक्षसों के राजा रावण को मारने का निश्चय किया। यह रामायण की कथा का श्रोत (प्रारंभ) है। (बाल कांड 15 वां अध्याय)

विष्णु ने पृथ्वी पर अवतार धारण करने के पश्चात बहुत से कष्टों और यातनाओं का अनुभव किया–जिनके कारणों को आर्यों के पवित्र पुराण वर्णन करते है। वे कारण ये हैं कि–

विष्णु ने पहिले बहुत से दुराचार्य पूर्ण घृणित अमानवीय कार्य किए थे। जिसके दंड और दुष्परिणाम स्वरूप उसे उन ऋषियों, मुनियों द्वारा श्राप दिए गए–जिनके प्रति उसने अपराध किए थे। ये श्राप क्यों? क्योंकि उस विष्णु ने (बिरहु) मुनि की स्त्री को मार डालने का घृणित पाप किया था।

उस (विष्णु) ने मनुष्यों के समख दिनदहाड़े जालंधर की स्त्री का सतीत्व छला तथा लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न यदि राजा दशरथ से पैदा न होकर, कथित पुरोहितों द्वारा पैदा हुए–तथापि आर्यधर्म के अनुसार कोई दोष या पाप न हुआ। यह बात उनके शास्त्रों में लिखी है, कि यदि कोई ब्राह्मण-स्त्री निःसंतान है–तो वह निश्चित दशाओं में किसी दूसरे आदमी से संतान उत्पन्न करा सकती है इस बात के प्रमाण तथा समर्थन के लिए आर्यों की दूसरी पुस्तक महाभारत देखी जा सकती है। बिना यज्ञ के बहाने अपने परिवार के गुरु 'व्यास' द्वारा बहुत सी विधवा स्त्रियां अनुचित एवं शास्त्र विरुद्ध संबंधों से माताएं बन गई थी। धृतराष्ट्र व पांडु इसी कोटि की संताने थी। महाभारत में इस प्रकार के बहुत से जन्म पढ़ने को मिलते है।

सीता को प्राप्त करने के लिए सीता की माता ने किसी अपरिचित मनुष्य से संभोग किया था और उत्पन्न बच्चे को एक जंगल में फेंक दिया था। सीता ने स्वयं स्वीकार किया है, कि मेरे माता-पिता के अज्ञात होने के कारण मेरा विवाह विलंब से हुआ है।

पुराणों में एक विचित्रता और पढ़ी जाती है, कि कई स्त्रियों ने मनुष्यों से नहीं–बल्कि जानवरों से भी गर्भ धारण किए थे।

इन बातों से प्रकट है, कि संतान उत्पन्न कर सकने में 'यज्ञ' का कोई महत्त्व तथा शक्ति नहीं है–बल्कि ये इच्छित आनंद, उत्सव मनाने, शराब पीने और गोस्त खाने के साधन-मात्र थे।

अब हम रामायण की विशेषताओं पर ध्यान दें–जैसा कि हम उसमें पढ़ते है।

दशरथ

यज्ञ के पश्चात हमें दशरथ के द्वारा राम-राज्याभिषेक की तैयारी की ओर दृष्टि डालनी होगी। इस संबंधित अध्याय में राजा दशरथ की स्त्रियों, पुत्रों, मंत्रियों और गुरुओं की धर्माचरण संबंधी नीचता का वर्णन किया गया है।

1. कैकेई से ब्याह करने के पहले दशरथ ने उससे प्रतिज्ञा की थी, कि उससे उत्पन्न पुत्र को अयोध्या की राजगद्दी दी जाएगी। कुछ कथाओं में वर्णन किया गया है, कि ब्याह के समय दशरथ ने अपना राज्य कैकेई को सौंप दिया था और दशरथ उसका प्रतिनिधि मात्र होकर शासन करता था।
2. डॉ. सोमसुद्रा बरेथियर एम.ए., बी.एल. की अपनी पुस्तक **'कैकेयी की शुद्धता और दशरथ की नीचता'** में मौलिक कथा का कलई खोली गई है।
3. राजा दशरथ के उक्त प्रभाव से राम और उसकी मां कौशल्या अनभिज्ञ न थी। वृद्ध राजा ने राम को प्रकट रूप से बता दिया था, कि राम राज्यतिलकोत्सव के समय कैकेई के पुत्र भरत का अपने नाना के घर चला जाना शुभ संकेत है। दशरथ ने भरत को उसके राज्याधिकार से च्युत रखने की नीचतापूर्ण उद्देश्य से उसे उसके नाना के यहां दस वर्ष तक रखा था। (अयोध्या कांड 14 अध्याय) अयोध्या में बिना कभी वापिस आए दस वर्ष के दीर्घ-काल तक भरत को अपने नाना के यहां रहने की कोई आकस्मिक आवश्यकता नहीं थी। 'मंथरा' के चरित्र के विषय में बाल्मीकि लिखते है, कि "दशरथ ने अपनी पूर्व सुनिश्चित योजनानुसार भरत को अपने नाना के यहां भेज

दिया था। भरत का अयोध्या राजधानी में शीघ्र उपस्थित उसे (भरत को) अयोध्या निवासियों की सहानुभूति प्राप्त करने में असमर्थ बना देती। दशरथ की यह भी धारणा थी, कि भरत को (यदि ठीक राज्याभिषेक के) समय पर उसके नाना के यहां पठवा देने में मुझे दशरथ की लोगों से शत्रुता बढ़ जावेगी।"

4. एक दिन पूर्व ही दशरथ ने अगले दिन राम राज्याभिषेक की झूठी घोषणा कर दी थी।
5. यद्यपि मंत्री वशिष्ठ व अन्य गुरु-जन भली भांति और स्पष्टतया जानते थे, कि भरत राज्य-गद्दी का उत्तराधिकारी है—तो भी चतुर, धूर्त व ठग लोग राम को गद्दी देने की मिथ्या हमी भर रहे थे।
6. राम की माता कौशल्या भी अपने देवी देवता को मनाया करती थी कि मेरे पुत्र राम को राज्य-गद्दी मिले।
7. पुरोहितों व पंडितों को सूचना तथा उनके परामर्श के बिना और कैकेई, जनक, भरत एवं शत्रुघ्न आदि को बिना आमंत्रित किए दशरथ ने राजतिलक का शीघ्र प्रबंध कर दिया। (अयोध्या कांड प्रथम अध्याय)
8. दशरथ ने राम से गुप्त रूप से कहा था, कि यदि भरत के लौट आने के पहिले भरत की अनुपस्थिति में ही भरत के लिए राज-तिलकोत्सव स्थगित कर देने की स्थिति उत्पन्न हुई तो मैं दशरथ इस बात को बिना किसी विरोध के शांति-पूर्वक स्वीकार कर लूंगा, क्योंकि भरत उदार व अच्छी प्रकृति का है और सज्जन होने के नाते जो कुछ पहिले हो जावेगा उसे स्वीकार कर लेगा। (अयोध्या कांड 14 अध्याय)
9. कैकेई ने हठ किया, कि उसका पुत्र राजा बनाया जावे और इसकी सुरक्षा का विश्वास दिलाने के लिए राम को बनवास दिया जाए—तो दशरथ उसे मनाने के लिए उसके पैरों पर गिर पड़ा और उससे प्रार्थना करने लगा, कि "मैं तुम्हारी इच्छानुसार कोई भी तुच्छतम कार्य करने के लिए तैयार हूं—राम को बनवास भेजने का हठ न करो।" (अयोध्या कांड 12 अध्याय)
10. दशरथ ने कैकेई से कहा कि, "तुमने पूर्व आयोजित सभी प्रयत्न विफल कर दिए" उसने इस संबंध में कैकेई से एक शब्द भी नहीं

कहा कि, "राम मेरा प्रथम पुत्र होने के कारण राज-गद्दी का वही वास्तविक उत्तराधिकारी है।" जब अंत में दशरथ कैकेई को मनाने को सभी प्रयत्न निष्फल हो गए—तब दशरथ ने राम को अपने पास बुलाया और उसके कानों में चुपके से कहा, "मेरा कोई बस न चल सकने के दुष्परिणाम-स्वरूप अब मैं भारत को राज-तिलक करने को तैयार हो गया हूं। अतः तुम्हारे ऊपर कोई बंधन नहीं है। तुम मुझे गद्दी से उतार कर अयोध्या के राजा हो सकते हो।"

11. सभी प्रयत्न निष्फल हो चुकने के पश्चात दशरथ ने 'सुमंत्र' को आज्ञा दी, कि कोषागार का संपूर्ण धन, खत्तियों का अनाज, व्यापारी, प्रजा व वेश्याएं राम के साथ बन को भिजवाने का प्रबंध करो। (अ. का. 36)
12. कैकेई ने इस पर भी आपत्ति प्रकट की और विवादास्पद तर्क उपस्थित करते हुए दशरथ को असमंजस में डाल दिया कि, "तुम केवल देश चाहते हो—न कि उसकी सम्पूर्ण संपत्ति।" (अयोध्या कांड 36)
13. दशरथ ने कोषागार में रखे हुए संपूर्ण आभूषण सीता को सौंप दिए।
14. राम और सीता को बनवास भेजने के कारण घबड़ाकर दशरथ ने कैकेई के ऊपर गालियों की बौछार की—किन्तु दशरथ को राम के साथ लक्ष्मण को बनवास भेजने में कोई बेचैनी नहीं हुई। लक्ष्मण की स्त्री का कोई वर्णन नहीं है।

स्वर्गीय श्री सी.आर. श्रीनिवास आयंगर ने सन 1925 ई. में प्रकाशित बाल्मीकि रामायण का संस्कृत से तामिल भाषा में अपने अनुवाद 'अयोध्या कांड पर टिप्पणी' नामक पुस्तक (के द्वितीय एडिशन) में लिखा है, कि दशरथ स्वात्मघाती था। दशरथ ने सुमित्रा व कैकेई के कार्यों पर हस्ताक्षर कर दिए थे। लेखक ने दशरथ पर बीस दोषारोपण किए है—

1. दशरथ ने बिना विचार किए हुए कैकेई को दो वरदान देने की भूल की।
2. कैकेई के विवाह करने के पूर्व दशरथ ने उससे उत्पन्न पुत्र को राजगद्दी देने की भूल की।

3. साठ वर्ष का दीर्घ समय व्यतीत कर चुकने के पश्चात् भी अपने पशु-वत विचारों का दास बने रहने के दुष्परिणाम स्वरूप अपनी प्रथम स्त्री कौशल्या तथा द्वितीय स्त्री सुमित्रा के साथ वह ब्योहार न कर सका–जिसकी वे अधिकारिणी थी।
4. कैकेई के दिए गए मूर्खता-पूर्ण वचनों ने उससे कैकेई की खुशामद कराई।
5. अपनी प्रज्ञा के समक्ष राम को राज-तिलक करने की घोषणा कैकेई व उसको पिता को दिए गए वचनों का उल्लंघन है।
6. कैकेई की स्वेच्छानुसार उसे दिए गए वरदानों के फल-स्वरूप राम को गद्दी देने की अपनी पूर्ण घोषणा से वह निराश हो गया।
7. इन पापों ने दशरथ द्वारा भरत को राज-गद्दी देने के असंभव वचनों को निरस्त कर दिया।
8. वशिष्ठ ने परामर्श दिया था कि इक्ष्वाकु-वंशीय-परम्परानुसार परिवार के ज्येष्ठ पुत्र को राजगद्दी मिलनी चाहिए–किंतु कैकेई के प्रेम में पागल दशरथ ने उस परामर्श को लात की ठोकर मार कर अलग कर दिया।
9. दशरथ को अपनी मूर्खता का प्रायश्चित करना तथा कुछ मूल्य चुकाना चाहिए था–किन्तु उल्टे उसने कैकेई को श्राप दिया।
10. वह भूल गया कि मैं कौन व क्या हूं तथा मेरी स्थिति क्या है और कैकेई के पैरों में गिर पड़ा।
11. सुमन्त्र और वशिष्ठ जो दशरथ के वचनों से अवगत थे। कैकेई के प्रति किए गए वचनों की ओर संकेत कर सकते थे, दशरथ को सचेत कर सकते थे, राम को राजगद्दी न देने का परामर्श दे सकते थे–किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया।
12. वशिष्ट ने जो कि भविष्य-वक्ता थे, राम राज्य-तिलकोत्सव के शुभ अवसर को शीघ्रता से निश्चय कर दिया–यद्यपि वह भलीभांति जानता था, कि यह योजना निष्फल हो जाएगी।
13. कैकेई अपना न्याय-संगत स्वत्व एवं अधिकार मांगती थी। किन्तु सिद्धार्थ, सुमन्त्र व वशिष्ठ उसे विपरीत परामर्श देने उसके पास दौड़ गए। इस पर निष्फल होने पर उन्होंने उसे फटकारा।

14. राम बन जाने के पहिले दशरथ अपनी प्रजा व ऋषियों की अनुमति ज्ञात कर चुकाथा, कि राम बन को न जावे–फिर भी उससे दूसरों की कोई चिंता किए बिना राम को बनवास भेज दिया। यह दूसरों की इच्छा का अपमान करना तथा घमंड है।
15. इसीलिए अपमानित प्रजा व ऋषियों ने इस विषय में न कोई आपत्ति की और न राम को बन जाने से रोका।
16. राम अपनी उत्पत्ति तथा दशरथ द्वारा भरत को राजगद्दी देने के, कैकेई के प्रति किए गए वचनों को भलीभांति जानता था–तथापि यह बात बिना अपने पिता को बताए मौन रहा और राजगद्दी का इच्छुक बना रहा।
17. दशरथ ने राम से कहा कि, "हमारे सभी प्रबंध और कार्यक्रम निरस्त हो जाए। दूसरे भरत उदार, सरल हृदय, धर्मात्मा तथा बुद्धिमान है। भरत को अपने नाना के यहां गए बहुत समय हो गया है। दृढ़ तथा निश्चय विचार वाले परदेशी व्यक्ति का भी मस्तिष्क परिवर्तित हो सकता है।" अतः दशरथ का यह विचार था कि भरत के आने के पहिले ही राम-राज्य तिलकोत्सव समाप्त हो जाए। (अयोध्या कांड 4 अध्याय) इस प्रकार भरत को अपना उचित अधिकार प्राप्त करने में धोखा दिया गया और चुपके से राम को राज-तिलक करने का निश्चय किया गया। राम ने भी इस षड़यंत्र को चुपचाप स्वीकार कर लिया।
18. जनक को आमंत्रण न दिया गया था–क्योंकि कदाचित भरत को राजगद्दी दे दी जाती–तो राम के राज्याधिकार होने के कारण वह असंतुष्ट हो जाता।
19. कैकेई के पिता को निमंत्रण न दिया गया था–क्योंकि यदि भरत के प्रति किए गए वचनों को न मानकर यदि राम को गद्दी दे दी जाती–तो वह नाराज हो जाता।
20. इन्हीं उपरोक्त कठिनाइयों के कारण अन्य राजाओं को राम राज-तिलकोत्सव में नहीं बुलाया गया था। कैकेई व मंथरा के उचित कार्यों तथा अधिकारों के विषय में पर्याप्त तर्क है। बिना इस पर विचार किए हुए कैकेई आदि पर दोषारोपन करना उन्हें गाली देना न्याय-संगत नहीं है।

राम

अब हमें राम और उसके चरित्र के विषय में विचार करना चाहिए।

1. राम इस बात को भली-भांति जानता था, कि कैकेई के ब्याह के पूर्व ही अयोध्या का राज्य कैकेई को सौंप दिया गया था, यह बात राम ने स्वयं भरत को बताई थी। (अयोध्या कांड 107 अध्याय)
2. 'राम को अपने पिता, कैकेई व प्रजा के प्रति सर्व-प्रिय व्यवहार, अच्छा स्वभाव एवं शील केवल राज-गद्दी को अन्याय से छीन लेने के लिए (दिखावटी) था। इस प्रकार राम सब की आस्तीन का सांप बना हुआ था।
3. भरत की अनुपस्थिति में अपने पिता द्वारा राज-गद्दी मिलने के प्रपंचों से राम स्वयं संतुष्ट था।
4. कहीं ऐसा न हो कि राजगद्दी मिलने के मेरे सौभाग्य के कारण लक्ष्मण मुझसे ईर्ष्या तथा द्वेष करने लगे इस बात से डरकर, राम ने लक्ष्मण को फांस कर उससे मीठी-मीठी बातें बनाकर उससे कहा, कि 'मैं केवल तुम्हारे लिए राज-गद्दी ले रहा हूं–किंतु अयोध्या का राज्य वास्तव में तुम्हीं करोगे।' अन्त में (राजा बन जाने के बाद राम ने) लक्ष्मण रे राजगद्दी के विषय में कोई सबंध नहींरखा। (अयोध्या कांड 4 अध्याय)
5. राज-तिलकोत्सव सफलता-पूर्वक सम्पन्न हो जाने में राम के हृदय में आद्योपान्त सन्देह बना रहा था।
6. जब दशरथ ने राम से कहा, कि "राज तिलक तुम्हें न किया जाएगा, तुम्हें वनवास जाना पड़ेगा–तब राम ने गुप्त रूप से शोक प्रकट किया था। (अयोध्या कांड 19 अध्याय)

7. उसने शोक प्रकट करते हुए अपनी माता से कहा था, कि 'ऐसा प्रबंध किया गया है, कि मुझे राज्य से हाथ धोना पड़ेगा। राज्स-वंशीय-भोग-विलास व स्वादिस्ट-गोश्त की थालियां छोड़कर मुझे वनवास जाना होगा और बन के कंद-मूल-फल खाने पड़ेंगे"–(अयोध्याकांड 20 अध्याय)
8. उसने भारी हृदय से अपनी माता व स्त्री से कहा था, कि "जो गद्दी मुझे मिलनी चाहिए थी, वह मेरे हाथों से निकल गई और वनवास जाने के लिए मेरा प्रबंध किया गया है।" (अयोध्याकांड 20, 26, 94 अध्याय)
9. उसने लक्ष्मण के पास जाकर पिता को दोषी तथा दंडनीय बताते हुए कहा कि, "क्या कोई ऐसा मूर्ख होगा–जो अपने उस पुत्र को वनवास दे–जो सदैव उसकी आज्ञाओं का पालन करता रहा है।" (अ. कां. 56)
10. राम ने बहुत सी स्त्रियों के साथ विवाह किया था। यह बात श्री सी. आर. श्रीनिवास आयंगर द्वारा सन् 1925 ई. प्रकाशित बाल्मीकि-रामायण के अनुवाद के द्वितीय संस्करण में पाई जाती है। (अयोध्या कांड 8 अध्याय, पृ. 28) राम ने सीता के साथ केवल रानी बनाने के लिए विवाह किया था। श्री मन्मथनाथ दातार लिखते है, कि आनंद लेने के लिए राम की स्त्रियां नौकरों की स्त्रियों का साथ किया करती थी। इस प्रकार कैकेई की बहू तथा भरत की स्त्री दुःख में डुबी रहती थी। राम की स्त्रियों के वर्णन रामायण के अनेकों स्थलों पर आया है। इस प्रकार राज-वंशीय नियमानुसार राम ने अपनी विषयिक इंद्रिय का आनंद लेने के लिए की दूसरी स्त्रियों के साथ विवाह किया था।
11. यद्यपि राम के प्रति कैकेई का प्रेम संदेह युक्त न था। किन्तु राम का प्रेम कैकेई के प्रति कपटी और बनावटी था।
12. राम कैकेई के प्रति स्वाभाविक एवं सच्चा होने का बहाना करता रहा और अंत में उसने कैकेई पर दुष्ट स्त्री होने का आरोप लगाया। (अयोध्याकांड 31, 53 अध्याय)
13. यद्यपि कैकेई दुष्टता-पूर्ण तथा नीच विचारों से रहित थी–तथापि राम ने उस पर दोषारोपण किया, कि वह मेरी माता के साथ नीचता-पूर्ण व्यवहार कर सकती है। –(अयोध्या कांड 31, 53, अध्याय)

14. वह मेरे बाप को मरवा सकती है। इस प्रकार उसने कैकेई पर दोषारोपण किया। (अयोध्या कांड 53 अध्याय)

15. वनवास में जब कभी राम को निकट भविष्य के दुःखपूर्ण समय से सामना करना पड़ा–तो उसने यही कहा, कि अब कैकेई की इच्छा पूर्ण हुई होगी, अब वह संतुष्ट हुई होगी।

16. राम ने लक्ष्मण से वनवास में कहा था, कि चूंकि हमारे बाप वृद्ध व निर्बल हो गए हैं, और हम लोग वहां आ गए। अब भरत अपनी स्त्री सहित बिना किसी विरोध के अयोध्या पर शासन कर रहा होगा। इस बात को उसकी राज-गद्दी और भरत के प्रति ईर्ष्या की स्वाभाविक तथा निराधार अभिलाषा प्रकट होती है। (अयोध्याकांड 53 अध्याय)

17. जब कैकेई ने राम से कहा, "हे राम! राजा ने मुझे तुम्हारे पास तुम्हें यह बताने के लिए भेजा है, कि भरत को राजगद्दी मिलेगी और तुम्हें बकवास।" तब राम ने उससे कहा, कि राजा ने मुझसे यह कभी नहीं कहा, कि "मैं भारत को राजगद्दी दूंगा।" (अयोध्या कांड 19 अध्याय)

18. उसने अपने पिता को मूर्ख और पागल कहा था। (अ. कां. 53 अ.)

19. उसने अपने पिता से प्रार्थना की थी, कि "जब तक मैं बनवास से वापिस न लौट आऊं–तब तक तुम अयोध्या का राज्य करते रहो और किसी को राजगद्दी पर न बैठने दो।" इस प्रकार उसने भरत के सिंहासनारूढ़ होने में अड़चन लगा दी।" (अयोध्याकांड 34 अध्याय)।

20. राम ने यह कह कर सत्यता व न्याय का गला घोंटा, कि "यदि मुझे क्रोध आया तो मैं स्वयं अपने शत्रुओं को मार या कुचल कर स्वयं राजा बन सकता हूं–किन्तु मैं यह सोचकर रुक जाता हूं, कि प्रजा मुझसे घृणा करने लगेगी।" (अयोध्या कांड 53 अध्याय)

21. उसने अपनी स्त्री सीता से कहा, कि "तुम बिना भरत की रुचि समझे हुए उसके लिए भोजन बनाती हो, यह बाद में हमारे लिए बहुत लाभदायक होगा।" (अयोध्या कांड 26 अध्याय)

22. राम के वनवास चले जाने का समाचार सुनकर भरत उसे अयोध्या लौटा जाने के लिए बन में उसके पास गया। भरत को देखकर राम ने उससे प्रश्न किया, कि "हे भरत! क्या तुम प्रजा द्वारा खदेड़ भगाए

गए हो? क्या तुम अनिच्छा से हमारे बाप की सहायता करने आए हो?" (अयोध्या कांड 1000 अध्याय)

23. राम ने भरत से पुनः कहा, कि "अब तुम्हारी मां का मनोरथ सिद्ध हो गया होगा, क्या वह प्रसन्न है।" (अयोध्या कांड 1000 अध्याय)

24. भरत ने राम को विश्वास दिलाया, कि "मैंने सिंहासन प्राप्त करने के स्वत्व को त्याग दिया है।" तब राम ने रहस्योद्घाटन करते हुए भरत को बताया कि "दशरथ अयोध्या का राज्य पहिले ही तुम्हारी मां को सौंप चुका है।" (अयोध्याकांड 107 अध्याय)

25. भरत वन में अयोध्या की राजगद्दी राम को सौंपकर और उसकी खड़ाऊ ले कर अयोध्या वापिस लौटा, उसने उन्हें सिंहासन पर रखकर चौदह वर्ष तक एक तपस्वी का जीवन व्यतीत किया, भरत इस चिंता में क्षीण-काय हो गया कि राम चौदह वर्ष के पश्चात भी अयोध्या में वापस न आएगा। अतः उसने चिंता में जलने की तैयारी की।

राम ने ऐसे सज्जन और सच्चे व्यक्ति पर संदेह किया, राम चौदह वर्ष बनवास भोग चुकने के पश्चात जब वापस अयोध्या के किनारे आया–तब उसने भरत को यह सूचित करने के लिए (सर्वश्रेष्ठ योद्धा) हनुमान को उसके पास भेजा। कि "अब मैं (राम) एक विशाल सेना लेकर विभीषण एवं सुग्रीव सहित आ गया हूं।" इस समाचार को सुनकर भरत के मुखारविंद पर पड़े हुए प्रभाव व सभी प्रकार के भोग तथा प्रसन्नता से परिपूर्ण अयोध्या को त्याग कर उसके (राम के) पास शीघ्र चल देने की बात पर ध्यान दीजिए–क्योंकि सभी प्रकार के भोगोपभोग और सर्व-सुख-सम्पन्न अयोध्या को छोड़कर तत्काल (राम के स्वागत हेतु) चला देना अति दुष्कर कार्य है। (उत्तर कांड 127 अध्याय)

26. राम सीता के चरित्र पर संदेह करता रहा और अग्नि-परीक्षा देकर उससे अपने सतीत्व को सिद्ध करने को कहा। राम की व्यवस्थानुसार सीता को यह कष्ट सहन करना पड़ा। तो भी राम ने सीता को गर्भवती पाया। अतः सीता के सतीत्व का संदेह प्रजा की चर्चा का विषय बना रहा। सीता के सतीत्व के संबंध में प्रजा के इस प्रकार के

विचार के कारण उसी समय सीता को वन में छोड़ देने के अपने निर्णय को बिना सीता को बताए उसे गर्भवती दशा में ही जंगल में छुड़वा दिया था।

27. जब वाल्मीकि ने सीता के पवित्र सतीत्व के विषय में दृढ़तापूर्वक राम से कहा तो भी राम को विश्वास नहीं हुआ और सीता को पृथ्वी के अंदर समा जाना पड़ा।
28. यह जानते हुए भी, कि सुग्रीव व विभीषण अपने भाईयों को मार कर राजगद्दी पर अधिकार कर लेने के उद्देश्य से उसके पास आए हैं—फिर भी राम ने उन (स्वार्थियों) से मित्रता कर ली।
29. उसने विश्वास घाती भाई की भलाई के लिए उस बालि को छिपकर मारा—जिसने पीठ पीछे भी राम का अहित नहीं किया था। उस राम की जो—बालि के सामने युद्ध करने का साहस नहीं कर सकता था, मूर्ख ब्राह्मणों द्वारा अत्याधिक प्रशंसा की गई हैं—वह भी उसे एक शूर-वीर मानकर!
30. विभीषण द्वारा उसकी (राम को) आधीनता स्वीकार कर लेने पर भी अज्ञानतावश राम ने अपनी बुरी भावनाओं तथा छल-कपट को प्रकट कर दिया। राम ने भरत की प्रशंसा की कि "भरत चाहे कितना दुष्ट व पापी क्यों न हो—किन्तु उसके सदृश्य बड़े भाई का आज्ञाकारी तथा धर्म-भक्त कोई नहीं है।" इस प्रकार राम ने व्यंग्यात्मक ढंग से भरत को दुष्ट कहा। (अयोध्या कांड 17 अध्याय)
31. बालि को मारते हुए अपने इस कार्य को न्यायोचित बताते हुए राम ने उस (बालि) से व्याख्या की—कि जहां तक जानवरों का संबंध है, वहां धर्म का विचार नहीं करना चाहिए—तो भी राम ने बालि को इस कारण मारा कि वह चेतन जीव के समान व्यवहार नहीं करता था। बालि के प्रति आरोपित दोषों के प्रति उसे कुछ भी कहने का अवसर नहीं दिया गया। राम ने बालि को पूर्णतया सुग्रीव के स्वार्थ-पूर्ण कथनानुसार मारा।
32. राम ने बहुत सी स्त्रियों के कान, नाक व स्तन इत्यादि काट कर उन्हें कुरूप बना दिया था और उन्हें बहुत यातनाएं दी। (सूर्पनखा और अयामुही)

33. राम ने बहुत सी स्त्रियों को मार डाला था। (ताड़का और थदगाई)
34. राम ने कई अवसरों पर स्त्रियों को गालियां दी।
35. राम ने स्त्रियों के प्रति ऐसा कहते हुए उन्हें अपमानित किया कि "उन पर विश्वास नहीं करना चाहिए। उन्हें गुप्त भेद नहीं बताना चाहिए।" (अयोध्या कांड 100 अध्याय)
36. राम ने हमेशा अनुचित विषय भोग में तल्लीन रहता था।
37. राम ने अनावश्यक रूप से कई जीवों को मारा व उन्हें खा गया।
38. राम ने कहा था, कि "मैं केवल राक्षसों को मारने के लिए बन गया था। दूसरे मैंने राक्षसों के संहार करने का दूसरों को वचन दिया था।" (अयोध्या कांड 100 अध्याय)
39. राम ने राक्षसों की लड़ाई में लाने का निश्चय किया और सीता के विरोध करने पर भी उसने रावण के देश में प्रवेश किया। (आरण्य 9)
40. कुम्भकरण से लड़ते हुए राम ने कहा कि "लोगों से प्रेरित होकर मैं केवल राक्षसों का वध करने हेतु वन में आया हूं।" (आरण्य 29 अध्याय)
41. स्वार्थपूर्ण उद्देश्य से राम ने अयोग्य एवं कपटी सुग्रीव को व्यर्थ ही आत्मसमर्पण कर दिया, कि "मुझे स्वीकार करो। मुझ पर दया करो।"
42. यह जानते हुए कि विभीषण ने अपने भाई रावण को धोखे से पकड़ा दिया है फिर भी राम ने विभीषण का पक्ष लिया। (युद्ध कांड 17)
43. लंका का राज्य पहिले से ही विभीषण को देने का वचन देकर राम ने आनंद को रावण के पास यह सूचना देने के लिए भेजा था, "कि यदि रावण सीता को लौटा देगा तो मैं लंका पर चढ़ाई नहीं करूंगा और लंका उसके लिए छोड़ दूंगा।" (युद्ध कांड 18 अध्याय)
44. भरत, कैकेई, प्रजा व गुरु आदि सभी बन में राम के पास गए और राम से अयोध्या लौट चलने का सत्याग्रह किया किन्तु हृदय राम ने उत्तर दिया कि "मैंने अपने पिता के वचनों का पालन करने का निश्चय कर लिया है और मैं किसी का कहना न मानूंगा।" इस प्रकार उसने लौटने से इनकार कर दिया और उसी राम ने अपने पिता के वचनों का तिरस्कार करके अयोध्या का राजा बनना स्वीकार कर

लिया। (दशरथ के प्रति भरत राजगद्दी देने का वचन) (युद्ध कांड 130 अध्याय)

45. राम न केवल गद्दी प्राप्त करने का इच्छुक था–बल्कि वह अपने पिता के वचनों के अनुसार वन जाने के समय से ही, पिता के वचनों का पालन करते हुए वन में रहकर, अयोध्या लौटने पर स्वयं राजा बनना चाहता था। राम को गद्दी पर बैठने की आशा, चिंता तथा इच्छा के अतिरिक्त कुछ ज्ञान न था। राम ने समय-समय पर ये विचार अपनी बातचीत में प्रकट किए।
46. शूद्र होकर तपस्या करने के कारण राम ने शम्बूक का कत्ल किया। (उत्तर कांड 76 अध्याय)
47. एक साधारण मनुष्य की भांति राम लक्ष्मण को एक नदी (गुप्तार घाट पर सरयू नदी) में फेंककर स्वयं (उसी) नदी में गिर कर मर गया। (उत्तर कांड 106 व 110 अध्याय) तत्पश्चात राम ने उपेंद्र (विष्णु) के रूप में अवतार लिया।
48. संस्कृत श्लोक में वर्णन है कि राम ने अपने दाहिने हाथ को संबोधन करते हुए कहा कि "क्या तू राम का अंग नहीं है? तूने बीमार ब्राह्मण-पुत्र को जीवित करने के लिए एक निर्दोष-शूद्र (शम्बूक) का बिना किसी हिचकिचाहट के निर्दयतापूर्वक वध कर दिया।
संकेत–यदि आज राम सदृश्य राजा होते–तो शूद्र कहे जाने वाले लोगों की (उपरोक्त घृणित कार्य को देखकर या सुनकर) क्या मनोदशा होती?
49. राम ने जो धनुष तोड़ा था। वह शिव का था और वह पहले से ही टूटा था। (देखिए 'अबिदहंस चिंतामणि' नामक पुस्तक के पेज 157, 331, 571, 663, 894, 1151, 1173, व 1194)
50. विभिन्न रामायणों और परशुराम के द्वारा समर्थन किया गया है जब राम ने धनुष्य तोड़ा था–उस समय राम की अवस्था माता कौसल्या के अनुसार पांच वर्ष, पिता दशरथ के अनुसार दस वर्ष और उसकी स्त्री सीता के अनुसार बारह वर्ष की थी। कुछ भी हो–विभिन्न कथाओं के अनुसार धनुष पहले से ही टूटा था।

डॉक्टर सोमसुन्द्रा बरेथियर का दृष्टिकोण–

1. बाल्मीकि-रामायण के अनुसार राम कोई धार्मिक व्यक्ति न था। उसका अनेकों कपटपूर्ण कार्यों में हाथ था।
2. राम इस बात को पूर्णतया जानता था, कि अयोध्या के राज्य का वास्तविक अधिकारी मैं (राम) न होकर भरत ही उस राज्य का कानून से अधिकारी है।
3. रमा के पिता दशरथ ने भरत की माता कैकेई से विवाह करने के पूर्व ही उसे वचन दे दिया था, कि "कैकेई के उत्पन्न पुत्र को ही अयोध्या का राजा बनाया जाएगा।" केवल इसी शर्त पर कैकेई के पिता ने दशरथ को कैकेई दी थी।
4. राम ने स्वयं भरत से इस बात कासंकेत दिया था और राम ने भरत से प्रार्थना की थी कि वह अपनी मां पर दोषारोपण न करे। उक्त बात राम की मां, ऋषियों गुरु व मंत्रियों को विदित थी।
5. संक्षेप में राम की माता, ऋषि, गुरु व मंत्री अयोध्या की राजगद्दी को भरत से छीन कर उसे राम को दिलाने में दशरथ के घृणित व कपट-पूर्ण षड़यंत्र के सह-अपराधी थे।

आबेल मेनन नामक एक अमेरिका निवासी के प्रकाशित रूसी समाचार-पत्र के अनुसार

अमेरिका निवासी व्याख्या करता है कि "शिकागो गैंगस्टर" की प्रकृति का राम और रावण नामक राक्षस द्वारा ले जाए जाने में प्रसन्न सीता तुच्छ हृदय की बालिका थी। (देखिए बीस नवंबर सन उन्नीस सौ चौवन ईस्वी) वाल्यूम नंबर 13, जिल्द नंबर 263, पृ. 2 का सोवियट यूनियम नामक समाचार-पत्र)

सीता

आओ अब हम सीता के चरित्र का निरीक्षण करें। सम्पूर्ण रामायण में मुश्किल से एक शब्द सीता की प्रशंसा में लिखा गया है–

1. वह राम की अपेक्षा आयु में बड़ी है। उसका जन्म सन्देह जनक और आपत्ति युक्त था। (अयोध्या कांड 66 अध्याय)
2. वह कहती है कि "मैं धूल में पाई गई इसीलिए मेरे माता पिता ने न होने की वजह से बहुत दिनों तक कोई मुझसे प्रेम करने को तैयार न होने के कारण मेरी अवस्था बड़ी हो गई।
3. विवाह हो जाने के पश्चात कुछ समय बाद वह भरत द्वारा अलग कर दी गई।
4. राम ने सीता को बताया कि "तुम भरत द्वारा प्रशंसा की पात्र नहीं हो। (अयोध्या कांड 26 अध्याय)
5. सीता ने राम को स्वयं बताया कि "मैं उस भरत के साथ नहीं रहना चाहती, जो मुझसे घृणा करता है।"
6. वह अपने पति (राम) को सनकी तथा मूर्ख कहा करती थी।
7. वह राम से कहती थी कि "तुम मानवीय गुणों से रहित मनुष्य हो।"
8. तुम आकर्षण-शक्ति तथा हाव-भाव से रहित हो।
9. तुम उस स्त्री व्यापारी से अच्छे नहीं हो अपनी स्त्री को किराए पर उठा कर जीविका चलाता हो, तुम मुझ से लाभ उठाना चाहते हो।
10. सीता ने यह जानकर कि राम हमेशा मेरे चरित्र के विषय में संदेह किया करता है। सीता ने कहा "राम! तुम मुझ बचाने वाले हो, मैं केवल तुम्हारे प्रेम के अतिरिक्त किसी के प्रेम पर विश्वास नहीं करती हूं, मैंने इस बात को कई बार तुम्हारी शपथ खाकर कहा–तथापि मुझ पर विश्वास नहीं करते।"

11. राम ने कहा, "मैं तुम्हारी परीक्षा कर चुका हूं।" (अ.का. 3 से 11 अ)
12. राम ने सीता का ठाठ-बाट और नीचता का स्मरण कर सीता से कहा, कि "तुम्हें अपने आभूषण उतार देने चाहिए–यदि तुम मेरे साथ वनवास चलना चाहती हो।" (अयोध्या कांड 30 अध्याय)
13. सीता ने राम के कथनानुसार ही किया–किन्तु अन्य आभूषण पहने रही। (अयोध्या कांड 39 अध्याय)
14. कौसल्या जो की सीता के चरित्र को जानती थी, सीता से एक सज्जन तथा सुचरित्रयती महिला की भांति आचरण करने को कहा, "कभी अपने पति का अपमान न करता" सीता ने अपनी सास को असभ्यतापूर्ण उत्तर देते हुए कहा कि, "मैं यह सब जानती हूं" और उसने अपने आभूषण नहीं उतारे। (अयोध्या कांड 39 अध्याय)
15. जब राम और लक्ष्मण वल्कल-वस्त्र (पेड़ों की चाल के कपड़े) धारण किए हुए थे–तब सीता ने ऐसे वस्त्र पहनने से इनकार कर दिया। (अयोध्या कांड 37 अध्याय)
16. दूसरी स्त्रियों ने जो सीता के बन जाने की अनिच्छा से अवगत थी। सीता के प्रति दयालुता प्रकट की और उसे अपने साथ न ले जाकर यहीं (अयोध्या में) छोड़ देने की राम से प्रार्थना की तो भी राम ने सीता को छाल के कपड़े पहनने के लिए बाध्य किया और उसे बन में साथ ले गए–जैसा कि कैकेई दूसरी स्त्रियों के विचारों से सहमत न थी। (अ. का., 37-38)
17. तथापि सीता ने दिए गए संपूर्ण परामर्श की ओर ध्यान न दिया। उसने सुंदर वस्त्र और आभूषण पहिने। इससे स्पष्ट है कि भरत सीता से घृणा करता था और यह कि कैकेई यह न चाहती थी, कि सीता अयोध्या में रहे। सीता को बन ले जाने की यही उपरोक्त कारण है।
18. वनवास जाते समय नदी (गंगा) पार करते हुए सीता ने गंगा नदी से प्रार्थना की थी, कि 'हे नदी गंगा! यदि मैं सकुशल लौट आऊंगी–तो मैं तुम्हें हजारों गाएं और मदिरा (शराब) से परिपूर्ण बर्तन चढ़ाऊंगी। (अयोध्या कांड 52 अध्याय)
19. वनवास में जब कभी सीता निकट भविष्य के खतरे से भयभीत होती–तो वह मन में कहा करती कि मेरे दुःखों से कैकेई प्रसन्न और

संतुष्ट होती होगी। इस प्रकार का कैकेई से अपनी शत्रुता प्रकट करती थी।

20. जब कभी राम सीता को न देखकर उदास होता, तो लक्ष्मण कहा करता था कि "तुम एक साधारण स्त्री के लिए क्यों परेशान होते हो?" (अ.का. 66 अ.)

21. लक्ष्मण कहा करता था, कि सीता का चरित्र आपत्ति जनक है। (आरण्य कांड 18 अध्याय)

22. राम हिरण की खोज में बाहर गया था। सीता राम की सहायता करने के लिए लक्ष्मण को तैयार कर रही थी। सीता ने देखा कि लक्ष्मण मुझे यहां अकेला छोड़कर जाने में हिचकिचाता है। तब सीता ने लक्ष्मण पर बुरा प्रभाव डालते हुए कहा कि "राम के जीवन को बचाने में लापरवाही करके मुझे फुसलाने के लिए तुम यहां देर कर रहे हो। क्या तुम राम के सच्चे भक्त होकर वन में आए हो? (अर्थात नहीं) तुम लुच्चे तथा दगाबाज हो। तुम मेरे साथ भोग विलास करने के उद्देश्य से राम को मार डालने के लिए यहां आए हो। क्या भरत ने इसी उद्देश्य से तुम्हें हम लोगों के साथ भेजा है? मैं तुम्हारी तथा भरत की इच्छा को कभी पूरा न होने दूंगी।"

23. जब लक्ष्मण ने सीता के प्रति मातृवत सम्मान प्रदर्शित करते हुए, सीता से कहा कि "तुम्हें ऐसी निर्लज्जता प्रकट करना शोभा नहीं देता है—तब उसने लक्ष्मण से कहा, तुम स्वावलंबी हो, तुम मेरे साथ आनंद करने के लिए मेरे साथ विश्वास-घात करते हो और इस प्रकार तुम मेरा सतीत्व नष्ट करने के लिए अवसर ढूंढ़ रहे हो।" (उपरोक्त दोनों संकेत अयोध्या कांड के 45 वे अध्याय में देखा जा सकता है।)

24. रावण ने सीता को ले जाने के उद्देश्य से उसकी मनोस्थिति को बड़े ध्यान से देखा। उसकी सुंदरता को देखकर वह उसके ऊपर मोहित हो गया और वह उसकी ओर बढ़ा। वह उसके स्तनों और जादूभरी जांघों की प्रशंसा करने लगा। इन सब बातों से सीता की क्या प्रतिक्रिया हुई होगी? क्या सीता ने रावण से घृणा की? क्या उसे अस्वीकार किया? क्या उसने उसे फटकारा? नहीं। बिलकुल नहीं। रावण की इस समय सम्मान पूर्ण आगवानी की गई (स्वागत किया

गया) विना अपनी अवस्था अधिक प्रकट किए, उसने रावण के समक्ष अपने सुंदर यौवन की प्रशंसा की। (अरण्य कांड 46, 47 अध्याय)

25. जब रावण ने सीता को बताया कि, "मैं राक्षसों का प्रधान रावण हूं—तब सीता ने उससे घृणा की।

26. जब रावण उसे अपनी गोद में लिए जा रहा था—तब वह अर्ध नग्न थी। तब वह स्वयं अपने स्तन खोले हुए थी। (आरण्य कांड 54 अध्याय)

27. जैसे ही उसने अपने पैर रावण के महल में रखे। सीता का रावण के प्रति आकर्षण उत्तरोत्तर बढ़ता गया। (आरण्य कांड 54 अध्याय)

28. रावण ने अपने यहां सीता से कहा कि "आओ हम दोनों मिलकर आनंद (संभोग) करें। तब सीता अद्धोन्मिलित आंखों-युक्त सिसकी भरती रही। (आरण्य कांड 55 अध्याय)

29. रावण ने कहा, "हे सीते! हमारा-तुम्हारा मिलन ईश्वरकृत है। यह ऋषियों की भी माया है।" (आरण्य कांड 55 अध्याय)

30. सीता ने कहा कि "तुम मेरे अंगों को आलिंगन करने के लिए स्वतंत्र हो। मुझे उसकी रक्षा करने की आवश्यकता नहीं मुझे इस बात का पश्चाताप नहीं कि मैंने भूल की है।" (आरण्य कांड 56 अध्याय) इससे इस परिणाम पर पहुंचा जा सकता है, कि सीता ने रावण को अपने साथ दुर्व्यवहार करने की अपनी (स्पष्ट) अनुमति नहीं दी।

31. राम ने सीता से कहा कि रावण ने तुम्हें बिना तुम्हारा सतीत्व नष्ट किए कैसे छोड़ा होगा। राम द्वारा इस दोषारोपित सीता से निम्नांकित उत्तर दिया—जो कि उपरोक्त कथन की पुष्टि करते।

32. सीता ने उत्तर दिया कि "तुम सत्य कहते हो—किन्तु तुम्हीं बताओ, कि मैं क्या कर सकती थी? मैं केवल अबला स्त्री हूं। मेरा शरीर उसके अधिकार में था। मैंने स्वेच्छा से कोई भूल नहीं की है—तथापि मैं मन से तुम्हारे निकट रही हूं। ईश्वर की ऐसी ही इच्छा थी" सीता ने केवल इतना ही कहा—किन्तु सीता ने दृढ़तापूर्वक यह नहीं कहा, कि "रावण ने मेरा सतीत्व नहीं भंग किया। (युद्ध कांड 118 अध्याय)

33. सीता का गर्भ देखकर राम का संदेह और पुष्ट हो गया, उसने प्रजा द्वारा सीता के प्रति लगाए गए आरोपों की शरण ली और उसने उसे

जंगल में छोड़ देने की लक्ष्मण को आज्ञा दी, तव सीता ने [illegible] को अपना पेट दिखाते हुए कहा, "देखो मैं गर्भवती हूं" (उत्तर कांड 18 अध्याय)

34. जंगल में उसने दो पुत्रों को जन्म दिया। (उत्तर कांड 66 अ अध्याय)
35. अन्त में जब राम ने इस संबंध में सीता से शपत खाने को कहा तो अस्वीकार करते हुए वह मर गई। (उत्तर कांड 97 अ.)
36. रावण ने सीता को सिर झुका कर बड़े सम्मान-पूर्वक अपनी ओर आकर्षित होने को कहा, इसका तात्पर्य यह है, कि रावण ने सीता के प्रति अपनी किसी शक्ति का प्रयोग नहीं किया—बल्कि सीता स्वयं उस पर मोहित हो गई थी, सीता ने रावण की विषयेच्छा का स्वयं अनुसरण किया था, रावण पर मोहित न होने की दशा में वह सीता को छू तक नहीं सकता था—क्योंकि रावण को श्राप दिया गया था, कि यदि वह किसी स्त्री को उसकी इच्छा के विरुद्ध छुएगा—तो उसका सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा, ब्रह्मा का भी उसे यह श्राप था—कि यदि वह क़िसी स्त्री को उसकी अनिच्छा होने पर छुएगा तो वह भस्म हो जाएगा, अतः रावण ने किसी भी स्त्री को उसकी इच्छा के विरुद्ध न तो छुआ—न कभी छू सकता था।
37. रावण ने सीता को वापस प्राप्त कर के तथा उसे अपनी स्त्री के रूप में पुनः स्वीकार करके राम अयोध्या में राज्य कर रहा था, उसकी साली 'कुकुवावती' ने राम के पास जाकर कहा, कि "हे श्रेष्ठ! तुम अपने की अपेक्षा सीता को कैसे अधिक प्यार करते हो? मेरे साथ आओ और अपनी प्यारी सीता के हृदय की वास्तविकता को देखो वह अब भी रावण को नहीं भूल सकी है, वह रावण के ऐश्वर्य पर गर्व करती हुई उसका चित्र अपने विजन (पंखा) पर बनाए हुए, उसे अपनी छाती पर चिपकाए हुए, अद्धोन्मिलित नेत्र-युक्त अपनी चारपाई पर लेटी हुई है।"

इसी समय 'दुर्मुहा' नामक एक गुप्तचर ने राम के निकट आकर उसे बताया कि, "रावण के यहां से सीता को लाकर पुनः अपनी स्त्री बना लेना प्रजा में तुम्हारी निन्दा और उपहास का विषय बना हुआ है" यह सुनते ही राम तिलमिला गया और उसे क्रोध आ गया। उस समय राम को मन ही

मन अपने अपमान और दुख का अनुभव हुआ—जो कि उसके चेहरे से प्रकट होता था उसने आहें भरी और अपनी साली के साथ सीता के कमरे में गया, राम ने सीता को अपने विजन पर रावण का चित्र बनाए हुए, उसे अपनी छाती पर चिपकाए हुए, सोती हुई पाया। यह बात 'श्रीमती चंद्रावती' द्वारा लिखित 'बंगाली रामायण'' के पृष्ठ 191 और 200 में पाई जाती है।

घटनाओं के गंभीर अध्ययन से प्रकट होता है, कि राम ने सीता में उसके गर्भवती होने में दोष पाया, राम ने रावण के यहां से सीता को वापिस लाकर पुनः उसे अपनी स्त्री के रूप में स्वीकार करके, अयोध्या वापिस आने के ठीक एक महीने के अंदर, राम द्वारा सीता के गर्भवती होने का समय हो सकता है।

38. श्री सी.आर. श्रीनिवास आयंगर की 'रामायण पर टिप्पणी' नामक पुस्तक के अनुसार राम ने सीता को रंगे हाथों पकड़ा था। क्योंकि उसने रावण का चित्र खींचा था।
39. रामायण के अनुसार हम कह सकते हैं, कि राम एक अयोग्य व्यक्ति था और सीता एक व्यभिचारिणी स्त्री थी।

राम ने सीता को अकेले जंगल में छुड़वाया, इसके प्रमाणस्वरूप बहुत से दृष्टांत है।

जहां तक सीता का संबंध है, रावण के साथ अनुचित-संसर्ग करने के कारण धर्म-नीति के अनुसार पवित्र नहीं थी, यदि राम कृत्य उचित मान लिया जाए—तो वह सभी को स्वीकार कर लेना चाहिए, कि सीता रावण द्वारा गर्भवती हुई थी।

यदि वह मानकर, कि सीता ने कोई नैतिक अपराध नहीं किया था—वह राम के द्वारा गर्भवती हुई थी, सीता की रक्षा की जाए—तो यह सभी को स्वीकार कर लेना चाहिए कि राम द्वारा अबोध गर्भवती को जंगल में अकेले छुड़वाने का कार्य मानवोचित नहीं है, राम ने सीता के गर्भ के विषय में अन्वेषण किया था—तब ही उसने दूसरे दिन प्रातःकाल उसे जंगल में छुड़वा दिया था।

ऐसी दशा में यह सिद्ध करना, कि न तो सीता भ्रष्ट थी और न राम गुंडा तथा विश्वासघाती प्रकट करता है, कि यह भ्रष्टता और नीचता क्षम्य नहीं है।

तव यह कथन कैसे सत्य कहा जा सकता है, कि राम ने आर्य-धर्म नियमानुसार मानव-मात्र को उपदेश देने के हेतु तथा सीता ने स्त्री-मात्र को सदाचरण तथा सतीत्व की शिक्षा देने के निमित्त अवतार लिए।

यदि ब्राह्मणों के इस उपदेश का प्रतिपादन करने वाले दृष्टिकोण को अपनाया जाए–कि राम और सीता ने जो कुछ किया था–वह उचित ही है–तो क्या यह बेचारे अबोध व बुद्धिहीन मानव-मात्र को पथ-भ्रष्ट करना नहीं है? सुधारक इस मूर्खता-पूर्ण हास्यास्पद मत को कैसे सहन कर सकते है? इन कारणों से हम अधिकारपूर्वक कह सकते है, कि ;

"राम और सीता चरित्र हीन थे।"

सीता का गर्भवती होना

वाल्मीकि-रामायण का गंभीर तथा सूक्ष्म अध्ययन स्पष्ट प्रकट करता है, कि सीता राम द्वारा गर्भवती हुई नहीं थी।

राव रावण को मारकर, सीता को साथ लाकर, अयोध्या लौटकर, तिलकोत्सव के पश्चात अयोध्या पर राज्य करने लगा–तब सुग्रीव, विभीषण और अन्य लोगों को अपने अपने स्थान पर वापस भेज दिया, अंत में 'पुष्पक' विमान भी वापस भेज दिया। पुष्पक विमान के चले जाने के पश्चात शीघ्र ही भरत ने दोनों हाथ जोड़कर राम से कहा, "हे नाथ! तुम स्वर्गीय-शक्ति हो। तुम्हारे शासन के एक मास के अंदर ही प्रजा सब प्रकार से आनंदित तथा संतुष्ट है।"

कहा गया है कि दस हजार वर्ष शासन कर चुकने के पश्चात एक समय राम और सीता प्रसादीय-उद्यान में बैठे हुए थे। उस समय उस (राम) ने देखा, कि सीता गर्भवती है। श्री श्रीनिवास आयंगर द्वारा वाल्मीकि रामायण का अनुवाद किया गया है। उनके द्वारा अनुवादित रामायण के 'शासन के दस हजार वर्ष पश्चात' श्लोक को उत्तरकांड के श्लोक नंबर 42 पृष्ठ 163 देखिए वे अपनी संपादकीय टिप्पणी में लिखते है, कि यह श्लोक स्वयं वाल्मीकि द्वारा नहीं रचा गया है–बल्कि बाद में जोड़ दिया गया है।

वाल्मीकि रामायण के बाल काण्ड अध्याय 2 चरण प्रथम के अनुसार राम ने सीता को जंगल में छुड़वा देने के पश्चात दस हजार वर्ष राज्य किया। उसने बहुत से अश्वमेघ यज्ञ भी किए। (देखो उत्तर कांड 99 अध्याय) यह

कहा गया है कि यह श्लोक सीता को उसकी सन्देह जनक स्थिति में त्राण देने के लिए घुसेड़ दिया गया है। इस पर सीता एक महीने के अन्दर गर्भवती पाई गई और उसे लक्ष्मण द्वारा वन में छुड़वा दिया गया। उसी समय सीता ने वन में लक्ष्मण को अपना पेट दिखाते हुए कहा था कि, "देखो यह गर्भ चार महीने का है" और उसने लक्ष्मण को अभिवादन करते हुए विदा ली। यदि यही मान लिया जाए तो एक महीने के गर्भ को चार महीने का गर्भ कैसे मान लिया जाए या यह कि यह गर्भ यम (संयम, नियम या जादू) द्वारा हुआ होगा।

लक्ष्मण

जहां तक लक्ष्मण का संबंध है, हम उसके चरित्र में कोई अपूर्व तथा अलौकिक बात नहीं पाते। रामायण में अनेक स्थलों में लक्ष्मण का वर्णन केवल इसलिए किया गया है, कि वह सदैव राम के साथ रहा। इस बात का वर्णन कहीं नहीं मिलता कि उसमें कोई अलौकिक शक्ति थी। बड़े आश्चर्य की बात है, कि उसे भी (शेष नाग के) अवतार का पद दिया गया।

1. भरत से राजगद्दी छीनने के षड़यंत्र में उसका हाथ था।
2. राम ने अपने प्रति लक्ष्मण की भक्ति पर संदेह करके, उसे छल पूर्वक फुसलाया था, कि 'राजतिलक मुझे होगा–किन्तु अयोध्या का राज वास्तव में तुम्हीं करोगे।' यह सुन कर वह राम के राजतिलक में प्रत्येक प्रकार से तन-मन से जुट गया। सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण और शत्रुघ्न ने क्रमशः राम और भरत का पक्ष लिया–क्योंकि वे जानते थे कि कदाचित हम दोनों की राजगद्दी नहीं मिलने को है।
3. लक्ष्मण ने अपने बाप दशरथ को गालियां देते हुए, उसे बुरा भला तथा विश्वासघाती कहा।
4. उसने प्रस्ताव रखा, कि "हमारे बाप को कारागार में डाल दिया जाए।"
5. उसने कहा कि "हमारे बाप को मार डाला जाए।
6. उसने कहा कि 'मनु' के अनुसार पिता को मार डालना धर्म है।
7. उसने कहा कि "मैं भरत व उसके मित्रों को बिल्कुल मिटा दूंगा।" (अयोध्या कांड 21 अध्याय श्लोक नंबर 3 से 7 तक देखें)

8. राम आहें भर रहा था, कि ईश्वर की कृपा ऐसी ही थी—कि मैं राजा न हो सका। यह देखकर उसने राम की आलोचना की, कि केवल कायर और मूर्ख ईश्वर की इच्छा के विषय में बात किया करते है।
9. लक्ष्मण ने राम को बताया, कि मैं "तुम्हें धोखा देने के लिए दशरथ और कैकेई ने अपनी पूर्व सुनिश्चित योजनानुसार, तुम्हें राजगद्दी देने में भिन्न-भिन्न मतों का अनुसरण किया है।"
10. उसने ललकार कर राम से कहा, कि "मैं दशरथ और कैकेई को वन में भेज सकता हूं और तुम्हें राजगद्दी पर बैठा सकता हूं।"
11. उसने राम से कहा कि यदि तुम अपना राजतिलक नहीं चाहते हो तो मैं राजगद्दी पर अधिकार करके अयोध्या का राज करूंगा। (अयोध्या कांड 23 अध्याय श्लोक नंबर 8 से 11)
12. बनवास के लिए देश छोड़ते समये उसने कहा कि वह धन्य है जो सर्व सुख सम्पन्न अयोध्या में राज्य करता है। (अयोध्या कांड 51 अध्याय)
13. वह इस सोच विचार में पड़ा रहा कि "क्या हम लोग अयोध्या सुरक्षित लौट आएंगे।" (अयोध्या कांड 51 अध्याय)
14. जब भरत ने बन में जाकर राम से अनुनय-विनय की "तुम लौट चलो और अयोध्या पर राज करो"—तब लक्ष्मण ने क्रोध पूर्वक कहा कि "अब मैं भरत को मारने जा रहा हूं। (अयोध्या कांड 16 अध्याय)
15. विरादन को वन में देख कर उसने कहा कि "मैं भरत से बदला लेने जा रहा हूं मैंने उसके ऊपर आरोप लगाया है कि उसने राजगद्दी हथिया ली है। (आरण्य कांड 2 अध्याय)
16. उसने सूर्पनखा से कहा कि "सीता चरित्रहीन है, उसकी छातियां ढल चुकी है। (आरण्य कांड 18 अध्याय)
17. सीता के प्रति उसका बर्ताव सीता के सन्देह का कारण बन चुका था। वह उससे प्रेम करता था और उसके साथ संभोग करना चाहता था।
18. उसने अपने जेष्ठ भाई की स्त्री के प्रति राम से कहा कि सीता को चाहे कोई भगा ले जाए चाहे वह मर जाए। यह कोई बड़ी बात नहीं है क्या हमें ऐसी नीच स्त्री के लिए कष्ट सहने चाहिए।
19. लक्ष्मण ने थदगाई, सूर्पनखा व अयोमुखी जैसी स्त्रियों के कान, नाक और स्तन काटकर उनका रूप बिगाड़ा था।

...न में खोया हुआ राम स्वयं तुम्हारी शरण में आया है, उसके साथ ...या कीजिए, ऐसा कहते हुए उसने सुग्रीव को आत्म समर्पण कर दिया।
21. इसके कुछ समय पहिले उस सुग्रीव का कत्ल करने के लिए वह राम की आज्ञा चाहता था।
22. वह राम की इच्छानुसार सीता से झूठ बोला था और गर्भवती दशा में उसे जंगल में छल पूर्वक छोड़ आया था।
23. राम और भरत दोनों उसके बड़े भाई थे—किन्तु वह राम का सहायक व भरत का विरोधी था, इसी प्रकार वह कौसल्या का भक्त तथा कैकेई से घृणा करता था।

इन सब बातों का कारण क्या था? क्या उसकी राजगद्दी प्राप्त करने की इच्छा के अतिरिक्त कोई अन्य बात हो सकती है?

अन्य जन

अब हमें भरत, कैकेई, सुग्रीव, शत्रुघ्न, सुमंत्र, अंगद, कौशल्या, वशिष्ठ, विभीषण, सुमित्रा, हनुमान, रावण बालि का संक्षिप्त अध्ययन करना चाहिए।

भरत

हम भरत में कोई महत्त्वपूर्ण बात नहीं पाते है।

1. वह अपने नाना के महल में दस वर्ष के दीर्घकाल तक खिलाड़ी लड़के की भांति बना रहा।
2. वह वहां से बुलाए जाने पर ही अयोध्या लौटा, उसने अपने पिता माता व परिवार की कोई चिंता नहीं की।
3. अपने नाना के यहां से अयोध्या लौटने पर राम के विषय में सुन उसने छान-बीन की, कि राम किसी अन्य स्त्री को बलपूर्वक तो नहीं लिए जा रहा है। (अयोध्या कांड 72 अध्याय)
4. उसने अपनी माता को बुरा भला कहा तथा उस पर गालियों की बौछार की, उसने कर्कशा, पिशाचिनी, वैश्या, दुष्टा व नख-रवट स्त्री कहा तथा यह भी कहा कि अच्छा होता—कि वह मर जाती. "राज्य से निकल जा, मुझे तेरा पुत्र होने में दुःख है।" इस प्रकार उसने अपनी माता को जिसने उसे राजगद्दी प्राप्त कराने में कठिनाइयां सही जो (कैकेई के विवाह के समय दशरथ द्वारा किए प्रण के) नियमानुसार उसी के लिए राजगद्दी थी, फटकारा और बुरा भला कहा। उसने वस्तु-स्थिति तथा अपनी माता को समझाने का प्रयत्न नहीं किया।
5. उसने अपने पिता को उपद्रवी व प्रजा-पीड़क की संज्ञा दी। (अयोध्या कांड 73, 74 चरण 4-5)

6. वन में राम से वार्तालाप करते हुए उसने उससे प्रार्थना की थी, कि अयोध्या लौट कर राजगद्दी लो और राज-वंशीय अन्य स्त्रियों के बीच आनंद मनाओ। (अयोध्या कांड 105 अध्याय)
7. भरत के भी बहुत स्त्रियां थी।

शत्रुघ्न—एक महान मूर्खता

1. उसने अपनी सौतेली माता कैकेई को गालियां दी।
2. उसने मंथरा को फटकारा, मारा अंग तोड़ दिए—क्योंकि वह आद्योपांत सब भेद जानती थी। वह न्याय स्थापित करने के लिए अपनी स्वामिनी के प्रति स्वामिभक्ता थी। कर्तव्य परायण थी।

   संकेत : इस भेद को ध्यान पूर्वक समझने की आवश्यकता है, कि भरत और शत्रुघ्न जिन्होंने अपने माता-पिता को गालियां दी और उन्हें अपमानित किया। अपने बड़े भाई राम के प्रति भक्ति प्रदर्शित करते है।

कौसल्या

1. उसके मस्तिष्क में अपने पुत्र राम को किसी न किसी प्रकार राजगद्दी मिलने की उत्कट अभिलाषा हर समय रही।
2. वह कैकेई से द्वेष रखती थी। वह उसकी शत्रु थी।
3. उसे इस बात का दुःख था कि मैं वृद्ध हो गई हूं। अब मेरे शरीर का आकर्षण समाप्त हो गया है। (अयोध्या कांड 20 अध्याय)
4. अपने पति के प्रति तनिक भी सम्मान की भावना न रखते हुए उसने उसे गालियां दी।

सुमित्रा

उसमें वर्णन करने योग्य गुण नहीं थे।

1. वह जानती थी, कि उसके पुत्र को गद्दी मिलनी नहीं है—इस कारण वह राम के राजा होने की इच्छुक थी।
2. चौदह वर्ष व्यतीत होते ही राम तुरंत लौट आएगा और भरत से राजगद्दी छीन लेगा, इस प्रकार वह कौशल्या को ढाढ़स बंधाया करती थी। इससे प्रकट होता है—कि वे दोनों भरत के प्रति दुष्टाथी।

कैकेइ

1. वह सदर वीरांगना रानी थी।
2. उसने दो अवसरों पर अपने पति की रक्षा की थी।
3. अयोध्या का राज्य उसी का था—क्योंकि उसने अपने पति का जीवन बचाया और उससे ब्याह करते समय राजा दशरथ ने अपना राज्य उसी को सौंप दिया था।
4. वह भरत से हर समय कहा करती थी, कि "मैं राम को राज्य सौंप दूंगी और मैं उसे सौंप चुकी हूं।" इस पर उसने उससे कभी आपत्ति नहीं की।
5. राजगद्दी प्राप्त करने के अपने अधिकार को लेने का उसने प्रयत्न किया। उसने दुष्टता पूर्ण विचारों को अपने हृदय में स्थान नहीं दिया और न उसने कोई तुच्छतापूर्ण कार्य किया।

सुमन्त्र

यद्यपि वह मंत्री था—किन्तु वह सच्चा व धार्मिक व्यक्ति नहीं था।

1. दशरथ के साथ उसका व्यवहार छल-कपटपूर्ण था, उसने उसे कभी भी उचित परामर्श नहीं दिया।
2. वह राजा की रानी कैकेई से उपहासास्पद वार्तालाप किया करता था। (अयोध्या कांड 35 अध्याय)
3. वह झूठ भी बोलता था।

वशिष्ठ

एक साधारण पुरोहित की भांति उसका कोई अच्छा व्यवहार नहीं था।

1. यह पहिले से जानते हुए कि राजगद्दी पर भरत का ही अधिकार है, उसने राम को राज्याभिषेक करने की युक्ति निकाली थी।
2. भरत को राजगद्दी न मिल सकने के विषय में रचे गए षड़यंत्र को सफल बनाने के लिए उसने राज्याभिषेक की तिथि शीघ्र ही निर्धारित कर दी।
3. उसने राम राज्याभिषेक की ऐसी शुभ तिथि निश्चित की—जो अन्त में राम-वनवास के रूप में परिणित हो गई।

हनुमान

यह एक साधारण व्यक्ति था, उसने कोई बुद्धिमत्ता का कार्य नहीं किया था, कहा गया है, कि उसे यश तथा प्रसिद्धता प्राप्त हुई—वह केवल उसके मन आश्चर्यजनक कार्यों के लिए जो तर्क के समक्ष क्षणमात्र भी नहीं ठहर सकते।

1. उसने अन्याय-पूर्वक लंका में आग लगा दी, उसने अनेकों असहाय व निर्दोष मनुष्यों का वध किया और इस प्रकार उसने बहुत बड़ी बरबादी की।
2. सीता से वार्तालाप करते समय उसने निर्लज्जता तथा असभ्यतापूर्ण शब्दों का प्रयोग किया था—यहां तक कि उसने मनुष्य-लिंग के विषय में भी सीता से बातचीत की थी—जो कि उसे स्त्रियों के समक्ष नहीं करनी चाहिए थी। (सुंदर कांड 35 अध्याय)

बालि

बालि किसी प्रकार भी मारने को योग्य नहीं था।

1. वह अपने भाई को नहीं मारना चाहता था।
2. सुग्रीव ने अनावश्यक रूप से उसके साथ झगड़ा खड़ाकर दिया था।
3. बालि संभवतः निष्पाप था—इस कारण कोई दोष नहीं था।
4. वह अपनी स्त्री से सुग्रीव को न मारने की प्रतिज्ञा करके युद्ध क्षेत्र में गया था।
5. वह बहुत धैर्यवान तथा शक्तिशाली था।
6. वह सच्चा, खरा व त्यागी था।
7. कोई भी मनुष्य, यहां तक कि अकेला राम भी उसके साथ आमने-सामने युद्ध करने में असमर्थ था।
8. वह बहुत से महान व्यक्तियों का प्रिय मित्र था।
9. उसे राम को सच्चा पुरुष समझने में भ्रम हो गया था।
10. बालि की मृत्यु पर सुग्रीव ने उसके गुणों की प्रशंसा की थी और कहा था, कि "मैं अपने ऐसे भाई को खोकर जीवित नहीं रहना चाहता—अब मैं चिंता में जलकर भस्म हो जाऊंगा।

वालि जैसे योग्य पुरुष को मार डालने का कार्य धर्म-संगत बताने के

लिए राम ने कहा था, कि "पशुओं को मार डालने में धर्म का विचार नहीं करना चाहिए।" क्या वह पशु था?

सुग्रीव

उसने अपने भाई को धोखा दिया था।

वह केवल अपने भाई को मार डालने हेतु राम का दास बना। अंगद में आत्म-सन्मान की भावना नहीं थी, उसने उस राम से मित्रता की—जिसने उसके पिता को मार डाला था।

1. वह अपने चाचा सुग्रीव के प्रति शेभुच्छु न था और न उससे प्रेम करता था।
2. अपने आपका ज्ञान न रखने वाले दास के तुल्य उसने व्यहवार किया।

विभीषण

1. अपने भाई रावण की मृत्यु का कारण बनकर लंका का राजा स्वयं बन जाने के लालच से प्रभावित होकर उसने अपने पारिवारिक शत्रु राम को आत्म-समर्पण कर दिया था।
2. जब इन्द्रजीत से पराजित होकर राम व लक्ष्मण धराशायी हो गए तब अपना दुःख प्रकट करते हुए उसने कहा, कि "राम व लक्ष्मण की शक्ति पर भरोसा कर मैं अपना भविष्य बनाने के लिए उनके पास गया था—किन्तु अब मेरी सम्पूर्ण आशाओं पर पानी फिर गया, राज्य खो दिया, दूसरे मैं आपत्ति में फंस गया, मेरे शत्रु रावण की प्रतिज्ञा पूरी हो जाने के कारण प्रसन्न है।" इस प्रकार उसने लंका का राजा बनने के लालच को स्पष्ट प्रकट किया था। (युद्ध कांड 49 अध्याय)
3. हनुमान, सुग्रीव तथा अन्य जनों ने राम से उक्त संकेत किया था।
4. राम ने भी, जो इस बात को जानता था, कहा था, कि "मुझे ऐसे ही नीच मनुष्य की आवश्यकता है।" (युद्ध कांड 17 अध्याय)
5. रावण के जीवित रहते ही राम ने उसे राजा बना दिया था व उसने उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया था। (युद्ध कांड 18 अध्याय)
6. इसके परिणामस्वरूप उसने राम को बहुत से गुप्त भेद बताए।

7. उसने अपने आपको राम के हवाले कर दिया और भाई को केवल यह बहाना बनाकर, कि मेरा भाई रावण सीता को हर लाया है, धोखा दिया है, लंका का राजा स्वयं बन जाने के वास्तविक कारण ने ही उसे ऐसा करने को विवश किया था—न कि इस कारण से कि वह सच्चा और न्यायी था—यह कैसे?
8. उसने रावण की वाटिका में अनाधिकृत रूप में प्रवेश करते हुए व वहां के जानवरों का शिकार करते हुए राम पर कोई ध्यान नहीं दिया था।
9. जब उसकी बहन सूर्पनखा व अन्य संबंधित स्त्रियों के नाक, कान व स्तन काट डाले गए तथा कुछ स्त्रियां मार भी डाली गई—तब उसका खून न खौला और न उसे कोई बेचैनी हुई।
10. ऐसी भयानक भूलों के कर्ता विभीषण को एक सच्चा, न्याय और वीर मनुष्य मानकर उसकी प्रशंसा करना एवं उसके भाई रावण से जिसने पूर्ण-रूप से अपनी आधीनता में हो गई सीता के साथ सम्मान-पूर्वक बर्ताव किया, एक दुष्ट मनुष्य की भांति घृणा करना। इन सब बातों में रावण को अनुचित दबाना, लंका के राज्य को अपने अधिकार में कर लेने की दूरन्देशी है। ये सब बातें स्वार्थ एवं विचारों की संकीर्णता के अतिरिक्त और क्या हो सकती है?

रावण

1. रावण में नीचे लिखी गई विशेषताएं थीं–
(1) एक महान विद्वान। (2) बहुत बड़ा सन्त। (3) वेद शास्त्रों का ज्ञाता। (4) अपने संबंधियों व प्रजा का दयालुतापूर्वक पालन-कर्ता। (5) वीर योद्धा। (6) शक्ति-शाली पुरुष। (7) शूर-वीर सिपाही। (8) पवित्र आत्मा। (9) परमात्मा का प्रिय पुत्र। (10) वरदानी पुरुष। वाल्मीकि ने रावण की उपरोक्त दस विशेषताओं का वर्णन किया है तथा उसकी प्रशंसा कई स्थलों पर की है।
2. अपने भाई रावण की संपूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्नता से द्वेष रखने वाला कमीना विभीषण उसकी मृत्यु का कारण बना। रावण शीघ्र ही मर गया–तो विभीषण उसकी अन्त्येष्टि-क्रिया पर मन मसोस कर अन्दर ही अन्दर दुखी होकर उसके योग्यता पूर्ण गुणानुवाद करता हुआ, उसके शव पर गिर पड़ा और कहा कि "तुम न्याय करने में कभी असफल नहीं रहे तथा सदैव महान पुरुषों का सम्मान किया।" (युद्ध कांड 111 अध्याय)
3. अपनी बहन सूर्पनखा के प्रति की गई असहनीय दुष्टता और अपमान से कुपित होकर उसके प्रतिकार-स्वरूप रावण सीता को लंका में ले गया था। सीता के प्रति अनुचित प्रेम होने के कारण नहीं–न दूसरे की स्त्री का सतीत्व भंग करने के उद्देश्य से।
4. हनुमान ने स्वयं रावण के प्रेम के विषय में सफाई देते हुए कहा कि "रावण के महल की सभी स्त्रियों ने स्वेच्छापूर्वक उसकी रानियां होना स्वीकार किया था। उसने किसी भी स्त्री को बिना उसकी इच्छा के छुआ तक नहीं। (सुंदर कांड 9 अध्याय)

5. रावण देवताओं और ऋषियों से घृणा करता था। क्यों? क्योंकि वे यज्ञ के नाम पर छल-कपट पूर्ण स्वधर्म नियमानुसार गूंगे पशुओं को आग में बलि देकर हृदय विदारक जघन्य-अपराध करते थे। वह किसी अन्य कारणों से घृणा नहीं करता था।
6. वाल्मीकि ने खुद कहा है, कि राम व लक्ष्मण के द्वारा सूर्पनखा के प्रति किए गए दुर्व्यवहार के दुष्परिणाम-स्वरूप गंभीर चिढ़ तथा अनुत्तर-दायित्व पूर्ण उकसाए जाने पर भी रावण ने अपनी बहिन सूर्पनखा के प्रतिकार-स्वरूप सीता की छातियां, नाक और कान नहीं काटे।
7. पूर्व आयोजित ध्येयानुसार सीता को एकांकी जंगल में छोड़ दिया गया था–ताकि उस सीता को रावण द्वारा ले जाए जाने में सुविधा हो–क्योंकि सीता की भी अभिलाषा थी, कि रावण उसे ले जावे, इसीलिए उसने तैयारियां भी की थी इस विषय पर कई अनुवादकों की व्याख्या से यह दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाता है।
8. उसने अपने मंत्रियों की जो सभाएं आमंत्रित की थी–उसमें हुए विचार विमर्श उसके दयाशील शासन के उदाहरण है।

संकेत : रामायण में चरित्र, आचरण और योग्यता का निरूपण वाल्मीकि द्वारा निर्मित 'रामायण' तथा स्वयं ब्राह्मणों द्वारा तामिल भाषा में अनुवादित पुस्तकों पर आधारित है, इससे पाठक विश्वास कर लेंगे, कि रामायण के वे आदर्श चरित्र जिनको कि पाठक ग्रहण किए हुए है। स्पष्ट और संक्षिप्त बात यह कि रामायण में ठीक तथा उचित विचारकों को अयोग्य, अधर्मी और इसके विपरीत मिथ्यावादी, विश्वासघाती एवं गुंडों को ऊंचा उठाया गया है। सम्मानित किया गया है, उनमें स्वर्गीय शक्ति मानी गई है।

इस पुस्तक का उद्देश्य इन मिथ्या विचारों को भोले-भाले आदमियों से हटाना तथा यह बताना है, कि केवल भेष से कोई साधु नहीं हो जाता है।

बंगाली रामायण

'बंगाली रामाण' के 'लंकावतार सूत्र' में वर्णन किया गया है, कि रावण द्रविड़ राजा था, जिसने बौद्ध-धर्म स्वीकार कर रखा था और वह 'अरस्तू' तथा 'प्लेटो' के समान दर्शनशास्त्र का ज्ञाता था, चूंकि बौद्ध-साहित्य में

रावण की अति प्रशंसा की गई है। इसी कारण ब्राह्मणों तथा पंडितों द्वारा निर्मित रामायण में उसकी अनुचित ढंग से आलोचना तथा निन्दा की गई है। रामायण में 'कीरथवास' नामक विद्वान ने कहा, कि रावण प्रेम एवं सम्मानपूर्वक अपने देश में शासन करता था।

रावण ने रण-क्षेत्र में मरते समय राम को अपने पास बुलाकर दयालुता के सिद्धांतों तथा राम द्वारा उसके साथ किए गए छल-कपट युद्ध के विषय में उसके कानों में बताया था। इस प्रकार हम 'कीरथवास-रामायण' में पाते है कि रावण सत्यता का उपदेश देता था। और वह न्यायी था। (पृ. 124)

रामायण-काल के माद पेय पदार्थ

डॉक्टर एस.एन.व्यास ने दिल्ली में दिनांक पंद्रह अगस्त सन उन्नीस सौ चौवन ईस्वी में 'कारवां' नामक प्रकाशित पुस्तिका में रामायण काल के मादक पेयों का वर्णन किया है।

1. किथ्यसुरा–यह कुछ वस्तुओं को उबाल कर बनाई जाती है।
2. मोगव्या–यह मसालों से तैयार की जाती है।
3. मद्य–बेहोश तथा मतवाला बना देने वाला पेय पदार्थ।
4. मन्धा–यह साधारण मादक पेय पदार्थ था। यह पिथमंध भी कहलाता था। यह अधिक नशीली न होती थी। इसे पीना सभी पसंद करते थे।
5. सुरा या सुराबानम–यह उपरोक्त पेयों से भिन्न थी। यह कृत्रिम विधि से निधार कर बनाई जाती थी तथा यह प्राकृतिक मादक पेय थी। यह सर्व साधारण का पेय पदार्थ थी। पुराणों में इस विषय में बहुत वर्णन है।
6. सिंधु–यह गुड़ के शीरे से बनाई जाती थी।
7. सोव्वक्राक–यह धन हीनों की पेय थी।
8. वारुणी–यह पेय पदार्थों में सब से कड़ी और गहरी होती थी। इसे पीते ही लोग लड़खड़ाने लगते थे और धनवान इसका प्रयोग करते थे।

राम और सीता के चरित्र

(वाल्मीकि रामायण के आधार पर श्री पेरियार ई.व्ही. रामास्वामी नायकर द्वारा संग्रहित)

ब्राह्मणों के साथ ही साथ छापे खाने (प्रिंटिंग प्रेस) भी हम लोगों के रामायण के वर्णित मिथ्या तथा दुराचार पूर्ण बातों के प्रकट करने में हमारे शत्रु है। वे समाचार पत्रों में जो कुछ मैं तर्कपूर्ण बातें उपस्थित करता हूं–बिना उससे संबंधित तर्क-पूर्ण संदर्भ को प्रकट करते हुए (मेरे लिखे हुए) समाचार के एक या दो पत्र फाड़कर (शेष अधूरे लेख को) भोलेपन से यह छपवा देंगे, कि 'पेरियार ई.व्ही. रामास्वामी नायकर' कहते है, कि "राम गुंडा तथा सीता वैश्या थी" इसका अर्थ क्यां है? इसका तात्पर्य केवल यह है, "कि भ्रमोत्पादक काट-छाट और (भ्रमोत्पादक) तर्क से लोगों को हमारे विरुद्ध खड़ा करना।

रामायण केवल कपोल कल्पित गप्प है, यह ईश्वर की कथा नहीं है, जैसा कि सर्व साधारण लोगों द्वारा समझी जाती है, इस बात की बहुत पुरुषों द्वारा स्वीकार किया गया है, श्री गांधी ने स्वयं कहा था, कि "मेरा 'राम' रामायण के राम के समान नहीं है।"

श्री टी.के. चिदंबरनाथ मुदलियर जिनका उन्हें चिढ़ाने वाला उपनाम 'कलियुग कम्बा' है, ने घोषणा की है, कि रामायण कोई स्वर्गीय कथा नहीं है। 'बिड़ला' जैसे धनवान एवं विद्वानों की सहायता से संचालित बम्बई की 'भारत इतिक्षा समाधि' के सदस्यों ने 'वैदिक युग' नामक स्वलिखित पुस्तक में वर्णन किया गया है कि किसी भी 'पुराण' की न कोई ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि है, न वे शिक्षा-प्रद हैं, न उसके पात्रों के चरित्र अनुकरणीय है। केवल मिथ्या गप्प है। श्री सी. राजगोपालाचार्य ने घोषित किया है कि राम ईश्वर नहीं है–वह केवल एक योद्धा है।

क्या राम ईश्वर का अवतार है?

अनुसंधान के अन्य विद्यार्थी तथा विद्वान इसी विचार के समर्थक है, वे राम को न तो ईश्वर का अवतार मानते है व न रामायण को इस प्रकार के स्वर्गीय-पुरुष का जीवन-इतिहास। वाल्मीकि के साथ ही साथ मौलिक रामायण के अन्य लेखक ने भी अपनी पुस्तक में राम को उतना सम्मानित नहीं किया है—जितना कि उसे ईश्वर का अवमान मान कर सम्मानित किया जाना चाहिए था।

सर्वप्रथम उदगम पृष्ठभूमि जहां से कथा प्रारंभ होती है। अनर्थक तथा हास्यास्पद है। यहां वर्णन किया गया है कि विष्णु ने 'बिरहू' मुनि की स्त्री को मार डाला। इसके दुष्परिणाम-स्वरूप मुनि ने उसे श्राप दिया कि "तू भविष्य में मनुष्य के रूप में पैदा होगा और तेरी स्त्री हर ली जावेगी और इस प्रकार मेरी भांति तू भी स्त्री-वियोग का दारुण दुःख सहेगा।" एक कथा तो इस प्रकार है।

दूसरी कथा इस प्रकार चलती है कि वही विष्णु जलंधर की पत्नी 'वृंदा' पर मोहित हो गया और वह उसके प्रति जलंधर को छल-कपटपूर्वक मार डालने में सफल हो गया—तब उसने जलंधर का भेष धारण कर उसकी स्त्री का सतीत्व लूटा। विष्णु द्वारा इस प्रकार ठगी जाने का रहस्य जान कर जालंधर की स्त्री ने उसे श्राप दिया कि, "ठीक यही दुःखद घटना तेरी स्त्री के प्रति हो।" इसी श्राप के फलस्वरूप उसे पृथ्वी पर पुनर्जन्म ग्रहण करना पड़ा।

तीसरी कथा का स्रोत इस प्रकार है कि एक बार विष्णु अपनी 'थिरुमगल' का नाम की पत्नी के साथ दिन-दहाड़े रति-क्रिड़ा में विमग्न था। उसी समय शिव का प्रधान गण वहां आन पहुंचा। इस पर तनिक भी ध्यान न देते हुए विष्णु अपने विषय भोग में लगा रहा। अपने इस अपमान से कुपित होकर वह गण नंदी के पास ग्रया और अपने अपमान का सम्पूर्ण समाचार शिव से निवेदन किया इस पर शंकर ने उसे श्राप दिया कि वह पुनः पृथ्वी पर जन्म ले और अपनी स्त्री के हरण किए जाने का शोक सहन करे। इस कारण उसने पृथ्वी पर पुनः अवतार लिया।

राम के पृथ्वी पर अवतार धारण करने के कारण कितने निरर्थक तथा हास्यास्पद है।

अब हमें उस परिवार को देखना है, जिसमें राम ने अवतार लिया। राम के पिता राजा दशरथ की अपनी तीन राज-वंशीय स्त्रियों के अतिरिक्त साठ हजार स्त्रियां थी, यह व आदर्श पिता है, जिसका पुत्र राम हुआ। रामायण में वर्णन किया गया है कि राम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न यज्ञ की विधिवत सम्पूर्ति और समाप्ति के फल-स्वरूप पैदा हुए।

अब हम यज्ञ की विशेषताओं पर ध्यान दे। कई प्रकार की चिड़ियां, जानवर, कीड़े-मकोड़े और जंगली जानवर मारे जाते थे और नि सभी मृत जीवों का आग में भूनकर कबाब बना दिया जाता था और ब्राह्मण लोग उसे खाते थे। तत्पश्चात दशरथ की तीनों स्त्रियों उन पुरोहितों को सौंप दी गई जिन्होंने यज्ञ किया था।

रामायण के अनुवादक बंगाल निवासी पंडित मन्मथनाथ दातार लिखते है कि कौशल्या ने बड़ी उत्सुकतापूर्वक एक घोड़े के तीन टुकड़े कर डाले और बिना किसी मनोव्यंथा के उस मृत घोड़े के साथ सम्पूर्ण रात बिता दी। 'होता', 'अदवर्य', 'उक्था', और अन्य 'रिकविका' पुरोहितों ने तीनों रानियों के साभ संभोग किया इस प्रकार दशरथ के पुत्रों की जन्म-कथा है।

क्या यह कोई अवतार लेने के ढंग है? क्या कोई कथा इस प्रकार बेढंगे तरीके से लिखी जानी चाहिए?

दशरथ का कमीनापन

कौशल देश के मूर्खतापूर्ण उद्देश्यों एवं प्रयत्नों पर राम को राजगद्दी देने तथा तत्संबंधी योजनाओं व प्रबंधों पर यदि हम विचार करते है—तो दशरथ का कमीनापन प्रकट हो जाता है। भरत को उसके नाना के यहां भेज दिया गया था और लगभग दस वर्ष तक नहीं बुलाया गया था—ताकि कहीं ऐसा न हो, कि उसकी उपस्थिति राम के राज्याभिषेक में रोडा न बन जाए, इसीलिए राज्याभिषेक का प्रबंध कर दिया गया था, कैकय देश के राजा को कोई आमंत्रण नहीं दिया था, इस उत्सव की सूचना भरत को भी नहीं दी गई थी, दशरथ ने अपनी गुप्त वार्ता में राम से कहा था, कि भरत का अपने नाना के घर में होने के कारण उसकी अयोध्या में अनुपस्थिति तुम्हारे राज्याभिषेक ने निर्विघ्नतापूर्वक हो जाने के पक्ष में है, यह काम भरत के लौट जाने के पहिले ही हो जाना चाहिए, कल ही वह कार्य होना है, तुम्हारे मित्र तुम्हारी

रक्षा करेंगे—ताकि आज रात को कोई अप्रिय घटना न होने पाए, राजवंशीय लोगों के साथ ही साथ लोग इस उत्सव पर प्रसन्न थे, कैकेई तक को, जो कि राम तथा भरत को समान रूप से चाहती थी, दशरथ द्वारा अंधकार में रखी गई थी—तो भी दशरथ के कपट-पूर्ण प्रबंध को जान कर उसने स्वयं हट किया, कि "भारत को राजगद्दी दी जाए और राम को वनवास।" कैकेई को बिना कोई सूचना दिए इस मामले को गोपनीय रखने के लिए दशरथ ने उसे कोई समुचित उत्तर नहीं दिया—किन्तु निर्लज्जतापूर्वक कैकेई के चरणों गिर पड़ा और गिड़गिड़ा कर कहने लगा कि "ये दोनों वरदान न मांगो।" दशरथ ने कैकेई पर दोषारोपण किया, कि उसने उत्सव संबंधी सभी योजनाओं को विफल कर दिया।

दशरथ ने राम से गुप्त-रूप से बताया, कि "मेरी इच्छा तुम्हें बनवास देने की नहीं है—किन्तु यह सब केवल प्रकट रूप से दिखावे के लिए है, कि मैं कैकेई के प्रति किए वचनों को पूरा करने के लिए तैयार हूं।" आगे दशरथ ने राम को यह भी उकसाया, कि "तुम मेरी आज्ञाओं को न मानकर गद्दी पर अधिकार कर सकते हो।" वह चाहताथा कि, राज्य का सभी खजाना, सेना व सामान आदि राम के साथ बन जाए।

कैकेई के साथ विवाह करते समय दशरथ ने उसे वचन दिया था कि उससे उत्पन्न पुत्र को ही अयोध्या की राजगद्दी दी जाएगी। अपने इस न्यायसंगत वचन का खंडन कर उसने राम को राजगद्दी देने की योजना बना डाली और यह जानते हुए कि अयोध्या के राज्य का अधिकारी भरत है सत्यवादी व न्यायी परमात्मा राम राजगद्दी लेने को तैय्यार हो गया था। दशरथ के गुरु, मंत्रीगण सुमंत्र व वशिष्ठ आदि ने भी दशरथ को धर्म-विरुद्ध परामर्श दिया। दशरथ द्वारा राम को वनवास की घोषणा कर दिए जाने के पश्चात लक्ष्मण अपने बाप दशरथ पर कुपित हुआ और बोला, "मैं तुम्हें मार डालूंगा।" कौशल्या ने भी अपने पुत्र राम से दशरथ की आज्ञा न मानने वाली तथा अयोध्या में रहने की बात कही थी।

एक साधारण श्रेणी में राम

इस प्रकार रामायण में कई स्थलों पर राम को साधारण कोटी का मनुष्य कहा गया है।

जहां तक राम की विशेषताओं का संबंध है, हमें यह कहना पड़ता है कि उसने अबोध 'ताड़का का छल से कठोरतापूर्वक वध कर दिया—क्योंकि वह अपने राज्य में अनधिकृत रूप से प्रवेश करके वहां पर यज्ञ संपादन करने वाले पुराहितों को ऐसा करने के लिए मना करती थी।"

जब राम वनवास जाने को था—तब उसने गंभीर दुःख का अनुभव किया और उसने अपनी माता व स्त्री को बताया, कि—"जो राज्य मुझे मिलने वाला था—वह मेरे हाथों से निकल गया और मुझे वनवास दे दिया गया है।"

राम ने लक्ष्मण से वनवास में कहा था, कि 'क्या कोई ऐसा मूर्ख होगा—जो कर्तव्य-परायण तथा आज्ञा-पालक अपने पुत्र को बन में भेज दे? इस प्रकार अयोध्या का राज्य न मिल सकने के कारण शोक-विमग्न राम ने अपने पिता को निंदनीय शब्द कहे।

बनवास में राम ने सूर्पनखा के कान और नाक काट लेने का अपराध किया—क्योंकि वह उससे प्रेम करती थी, बन में आकर राक्षसों का वध करने के निश्चय को अपना लक्ष्य बनाकर उसने स्वेच्छापूर्वक व्यर्थ में लड़ाई मोल ली, सुग्रीव की भलाई के लिए उसने आड़ में छिपकर कायरता-पूर्वक बालि को मारा—जिसने राम के प्रति अपकार नहीं किया था, इस बात को भली भांति तथा पूर्णतया यह जानते हुए कि "दुष्ट और विश्वासघाती विभीषण अपने भाई रावण का वध कर स्वयं लंका का राज्य हथियाने के कपटपूर्ण उद्देश्य से मेरी शरण में आया है। राम ने लंका पर राज्य करते हुए रावण का वध करके विभीषण को वहां का राजा बनाया था।

राम का कपट पूर्ण विचार

सम्पूर्ण रामायण में देखा जा सकता है, कि राम पाखंडी, छली, कपटी और दुष्ट था, वह अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए कोई भी घृणित कार्य करने पर उतारू हो जो के उद्देश्य से तैयार कर दिया गया था।

जब सीता उसके स्थान वन में जाने को प्रस्तुत थी—तब राम ने अपनी इच्छा प्रकट की थी, कि "तुम भरत की सभी प्रकार की इच्छानुसार अयोध्या के महलों में रहो—क्योंकि इस प्रकार हम लोग कुछ अधिक प्राप्त कर सकने में सफल हो सकेंगे।" इस पर सीता ने राम को राम पर क्रोध करते हुए फटकारा और कहा कि "तुम कायर तथा अशक्त हो। तुम मनुष्य के भेष में

स्त्री हो। मेरे पिता ने मेरा विवाह तुम्हारे साथ कियां है। तुम अपनी स्त्री को दूसरों को सौंपकर अनुचित जीव को पैदा करने वाले मनुष्यों में से हो।" इस पर राम ने अपने असली विचारों को छिपाते हुए कहा, कि "मैं केवल तुम्हारे मन की स्थिति का परीक्षण कर रहा था।" तब वह उसे अपने साथ वनवास को ले गया।

जब कभी राम वनवास में अनुभव करता, कि भविष्य में कोई घटना होने वाली है—तब वह कैकेई पर बुरी तरह से दोषारोपण करता, कि "मेरे दुःख से अब कैकेई सुख व प्रसन्नता का अनुभव करती होगी।" वह मन ही मन असंतुष्टता-पूर्वक बड़बड़ाया करता था कि "मैं यहां वन में चला आया हूं, मेरा पिता वृद्ध हो गया है, अब भरत पूर्ण रूपेण स्वतंत्रतापूर्वक राज्य कर रहा होगा, उसके विरुद्ध कोई कुछ नहीं कर सकता है।"

आगे राम ने और क्या किया। शूद्र होकर तपस्या करने के कारण उसने शम्बूक का वध किया। ऐसा अयोग्य, नीच व छली व्यक्ति को ईश्वर का अवतार कैसा माना जाए। धूर्त ब्राह्मणों ने झूठे अशक्त, अयोग्य व चरित्रहीन एक साधारण व्यक्ति को ईश्वर बताकर हम लोगों को उससे प्रेम करने और उसकी पूजा करने को बाध्य किया है। क्या हम लोगों को यह उचित नहीं है, कि हम लोगों को समझ और बुद्धि पर जो मिथ्या बातें बलात लादी गई है हम उसका गंभीरतापूर्वक निरीक्षण करें। ये राम के चरित्र है।

सीता का पैदायश

अब हमें सीता की ओर अपना ध्यान आकर्षित करना चाहिए उसे सम्पूर्ण रामायण में कुलीन वंश के उचित गुणों—रहित एक साधारण स्त्री माना गया है। उसके माता-पिता ने सन्देह है। नहीं पता कि उसके माता-पिता कौन है?

ऐसा वर्णन किया गया है कि राजा जनक ने हल चलाते हुए उसे पृथ्वी में पाया था। उसे कलंक से बचाने के लिए साहित्यिक भाषा का प्रयोग करते हुए वर्णन किया गया है कि वह महालक्ष्मी पैदा भी नहीं हुई—बल्कि वह पृथ्वी पर एक स्वयं बालिका के रूप में प्रकट हुई।

उसके माता व पिता के विषय में संदेह होने के कारण पूर्ण यौवनावस्था प्राप्त कर चुकने के पश्चात भी वह कई वर्षों तक कुंवारी बनी रही थी, उसने

इस बात को वन में दुख प्रकट करते हुए स्वयं स्वीकार किया था, क्या कहा जाए, महालक्ष्मी का जन्म भी निराधार तथा हास्यास्पद है, रामायण की सम्पूर्ण कथा में उसके चरित्र के विषय में कोई प्रशंसनीय बात नहीं है।

सीता की मूर्खता

जब राम ने वनवास जाने का निश्चय किया जा चुका—तब सीता ने कहा कि मेरे विषय में भविष्य वक्ताओं ने पहिले ही कहा था कि मुझे वन में रहना होगा। उसने यह भी कहा कि मैं अपनी पति के साथ वनवास जाना चाहती हूं। राम और लक्ष्मण बल्कल वस्त्र धारण किए हुए थे—किन्तु सीता ने वह भेष पसंद नहीं किया। इस पर दशरथ ने आज्ञा दी कि आवश्यकीय वस्त्र और आभूषण जितने चौदह वर्ष के लिए परियाप्त हो सीता के प्रयोग के लिए उसके साथ भेज दिए जाए। उसने अति प्रसन्नता पूर्वक उन्हें पहिना और अपने आप को सुन्दरता पूर्वक सुसज्जित किया—किन्तु पति का तापस-भेष और उसकी स्त्री का राजवंशीय भेष इस प्रकार से वनवास को चल दिए। चूंकि दशरथ ने केवल राम को बनवास दिया था—सीता को नहीं। इसलिए वन जाते समय वशिष्ठ, सुमन्त व अन्य पुरुषों ने सीता वन जाने से रोका—किन्तु इस पर कैकेई सहमत नहीं हुई। अतः उसे अपने पति के साथ जाना पड़ा। इस प्रकार सती तथा आदर्श कहलाने वाली सीता के कार्य-कलाप यही पर समाप्त नहीं हो जाते। राम की माता अर्थात सीता की सास ने सीता की आभूषणों व बहू-मूल्य वस्त्रों और रुचि देखकर यह कहते हुए उसने सीता को शिक्षा दी की "अपने पति की प्रेम-पात्र होने योग्य काम करो। मति-हीन न बनो।" इस पर सीता ने अपनी सास को तपाक से उत्तर दिया, कि "मैं प्रत्येक बात जानती हूं, मुझे तुम से सीखना कुछ भी अवशेष नहीं है।"

सीता के लिए भरत के साथ रहने की इच्छा प्रकट करते हुए राम ने सीता से कहा, कि "तुम भरत के साथ रहो।" इस पर उसने राम को निंदनीय उत्तर दिया, "मैं उस भरत के साथ नहीं रहना चाहती—जो मुझसे घृणा करता है।"

वनवास में जब कभी उस पर किसी कठिनता या अन्य कष्ट का सामना करना पड़ता तब वह बुरी तरह से केकेई पर दोषा-रोपण किया करती थी।

सीता के वचनों से शक्तिशाली भी कांपना

जब राम ने मृग का पीछा किया व मृग अति पीड़ा से चिल्लाया, "सीता! लक्ष्मण!!" तब सीता ने लक्ष्मण से राम के पास जाने तथा उसकी सहायता करने को कहा, इस पर लक्ष्मण ने उसको उत्तर दिया, कि "मेरे भाई के ऊपर कोई दुख नहीं आ सकता हैं, इस पर वह क्रोधित होकर उबल पड़ी और लक्ष्मण पर दोष लगाया कि क्या राम की मृत्यु हो जाने पर तुम मुझे फुसलाना और पथ-भ्रष्ट करना चाहते हो? क्या तुम इसी उद्देश्य से बन में आए हो? मैं तुम्हें जानती हूं और भरत ने मुझे बिघाड़ने का षड़यंत्र रचा हैं इस पर लक्ष्मण कांपने लगा और उसने हाथ जोड़कर कहा कि, हे माता! मैंने तुम्हारे पैरों के अतिरिक्त तुम्हारा कोई अंग नहीं देखा है। कृपा करके ऐसी बात न करो। सीता ने इसी कौम को कैसे पूरा किया? उसने पुनः लक्ष्मण से प्रश्न किया, क्या तुम मुझ पर अपनी आंखें गड़ाए रहकर केवल समय व्यतीत करना चाहते हो?

जगत माता तथा देवी के मुख से निकले हुए उपरोक्त शब्दों को सुनिए, एक शक्तिशालिनी स्त्री भी इस प्रकार बातें कर सकती है—तो भी सीता ने ऐसे शब्द कहे और वह शक्ति-शालिनी स्त्री, सर्वव्यापी एवं त्रिकाल दर्शी की अर्द्धांगिनी कही जाती है वह लोगों को आदर्श जीवन व्यतीत करने हेतु शिक्षा देने के लिए अवतरित समझी जाती है। सीता के जीवन की महत्ता इतनी ही नहीं है, जितनी यहां की कई है—किंतु अभी बहुत कुछ और भी है।

रावण द्वारा सीता की सुंदरता की प्रशंसा

सीता रावण को भोजन भी परोसती थी। सीता की तुच्छता पर कुपित होकर उसमें कोई सुशीलता तथा महानता न पाकर लक्ष्मण ने उससे मुख मोड़ लिया था। रावण मानो अपनी पूर्व आयोजित योजनानुसार साधु भेष में शीघ्रतापूर्वक प्रकट हुआ। सीता ने उसका हृदय से सत्कार किया। इस पर रावण सीता की आंखों, दांतों, चेहरे तथा जंघाओं की प्रशंसा करने लगा और उसके स्तन की तुलना नारियल से करने लगा। वह सीता के शरीर की प्रशंसा करता हुआ कहने लगा कि ज्यों ज्यों मैं तुम्हारे अंगों-प्रत्यगों को देखता हूं त्यों त्यों अपने आप को संभालने में असमर्थ हो जाता हूं। तुम्हारी सुंदरता मेरे हृदय को खरोंचे डाल रही है। जैसे नदी का कोई नाला नदी के किनारे को खरोंच डालता है।

इस प्रकार वह सीता के एक एक अंग की प्रशंसा करता रहा। यदि वास्तव में सीता आदर्श चरित्र वाली सती स्त्री होती तो वह प्रत्येक की ईर्ष्या का कारण बन जाती। उसने क्या किया है? क्या कोई मनुष्य हमारी स्त्रियों से इस प्रकार की बातें कर सकता है? और यदि वह ऐसा करता है—तो क्या वह बच सकता है? किन्तु सीता ने क्या किया? रावण द्वारा अपने शरीर की सुंदरता का बखान सुनकर निहाल सीता रावण को खाना परोसती थी।

सीता अपने को युवती बताकर रावण से अवस्था छिपाती थी

खाना परोस चुकने के पश्चात सीता रावण से बातें किया करती थी कि, मैं जनक की पुत्री और राम की स्त्री हूं। उसने रावण को अपनी वास्तविक अवस्था से कम अवस्था बताई थी। जब वह वन में आई और रावण से बातें कर रही थी—तब वह तेरह वर्ष की थी, उसने पुनः उसे बताया, कि मेरा विवाह हो जाने के बाद मैं बारह वर्ष अयोध्या में रही, उसने पुनः कहा, कि जब मैं बनवास में आई—तब मैं अठारह वर्ष की थी, यह कैसी है अनुकूलता? वह अपने विवाह के पश्चात बारह वर्ष अयोध्या में रही उसके शब्दों के अनुसार पूर्ण-यौवनावस्था को प्राप्त हो चुकने के कई वर्ष बाद तक कुंवारी दशा में वह अपने पिता के घर रही—किन्तु रावण के सम्मुख जो कुछ उसने कहा, उसके अनुसार उसका विवाह छठवी वर्ष में हो गया होगा। क्या सीता केवल छह वर्ष में यौवनावस्था प्राप्त कर सकती थी। छह वर्ष में यौवनावस्था को प्राप्त करने के पश्चात कई वर्षों तक क्वारी दशा में उसके अपने पिता के घर रहने की बात यदि स्वीकार कर भी ली जाए—तो उसने इस प्रकार केवल हां हूं क्यों की? वह केवल अपनी वृद्धावस्था को छिपाना है।

वह साधारण तौर पर पैतालिस वर्ष की थी—चूंकि युवती हो जाने के कई वर्ष बाद तक अपने पिता के घर रही। इसलिए विवाह के समय व बीस वर्ष की रही होगी। (बारह वर्ष अयोध्या में, तेरह वर्ष वनवास में, बीस वर्ष अपने पिता के घर में। अतः इस प्रकार पैतालीस वर्ष हो गए।)

लक्ष्मण ने भी यह बात दृढ़तापूर्व कही थी कि सीता बड़े पेट वाली एक वयोवृद्धा स्त्री है। यह बात उसने कब कही? सूर्पनखा राम से प्रेम करती थी, और उससे विवाह करना चाहती थी। राम ने इस पर कहा कि, मेरा विवाह पहिले ही हो चुका है। तू क्वारि लक्ष्मण के पास जा।

अतः वह उसके पास गई–किन्तु लक्ष्मण ने इस कारण से उससे विवाह करना इन्कार कर दिया कि मैं राम का दास हूं और यह कहते हुए कि राम की स्त्री बड़े पेट वाली वृद्धा है, अतः तू उसी के पास लौट कर जा। वह तुझसे विवाह कर लेगा।

जैसा कुछ हो कथा के अनुसार जब रावण सीता को मिला–तब वह सुंदर, किन्तु वृद्धा थी। वृद्धा होते हुए भी जब रावण आनंद लेता हुआ उसके अंगो-प्रत्यंगो की प्रशंसा करने लगा था–तब उसने अपनी अवस्था क्यों छिपाई? पाठक तनिक इस पर विचार करें। क्या एक सती दैवी शक्ति की कथा ऐसी ही है। तत्पश्चात क्या हुआ। रावण ने अपने आपको प्रकट किया। (कपट भेष उतार दिया का तात्पर्य है पूर्ण परिचय दिया) और सीता से उसके साथ लंका को चलने को कहा। सीता ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। रावण ने क्षमा भर में एक हाथ से उसके बाल पकड़े तथा दूसरे हाथ से उसकी जांघों को पकड़कर उठा लिया और अपनी जांघों पर बैठाकर उसे ले गया। वह चिल्लाती है। इस प्रकार कथा चलती है।

मेरा भौतिक शरीर कहीं–किन्तु मन तुम्हारे साथ

द्वितीय ध्यान देने योग्य बात यह है कि रावण को दो श्राप दिए गए थे। प्रथम यह कि यदि वह किसी स्त्री को बिना उसकी आज्ञा के छुएगा–तो वह भस्म हो जाएगा। द्वितीय यह है कि उसके हृदय में किसी स्त्री के प्रति कुविचार उत्पन्न होते ही उसके सिर के सहस्त्रों टुकड़े हो जाएंगे।

तामिलनाडू का कवि कम्बा लिखता है कि रावण सीता को बिना अपने हाथों से स्पर्श किए जिस स्थान पर वह खड़ी थी उस स्थान सहित उसे ले गया।

इन श्रापों के प्रमाण स्वरूप द्वितीय श्लोक में कहा गया है, कि रावण वास्तविक सीता को नहीं ले गया था–अपितु वह उसकी मायावी प्रतिमा पात्र ले गया था–किन्तु वाल्मीकि की मौलिक पुस्तक में स्पष्ट वर्णन है कि रावण सीता को अपनी गोद में दबाए हुए उसके शरीर को पूर्णतया स्पर्श करते हुए ले गया।

यदि इन श्रापों में कोई शक्ति होती–तो सीता को ले जाते हुए रावण का शरीर और सिर मिट्टी में मिल जाता–किन्तु उसके प्रति कोई घटना न

घटी। वह लंका में सुरक्षित पहुंच गया था और वहां पहुंच कर उसने सीता को अपने महल के चारों ओर घुमाया। वहां भी रावण के प्रति कोई दुर्घटना न हुई। तब श्राप का क्या अर्थ है?

कलकत्ता विश्वविद्यालय के सदस्य तथा बंगाली इतिहास के अनुसंधान के प्रतिष्ठित विद्यार्थी राय साहब दिनेशचंद्र सेन, बी.ए. इस पर यह लिखते है कि मेरा यह निर्णय है कि इस बात में कोई सत्यता नहीं है कि रावण सीता को बलात हर ले गया। मेरे इस निर्णय पर कट्टर हिंदू धर्मावलंबी व्यक्ति क्रोध से भड़क सकते है–किन्तु इस पर मैं अपना दृष्टिकोण परिवर्तित नहीं कर सकता। यदि पाठक इस पुराण अर्थात रामायण की साहित्यिक सुन्दरता का पर्दा हटा दे–तो उसमें देखने को ढांचा मात्र रह जाएगा।

लंका में सीता सहित बैठे हुए रावण ने उससे कहा, सीते! लज्जा न करो। हमारा तथा तुम्हारा मिलाप दैवी योजनानुसार है। इसका स्वागत सम्पूर्ण ऋषि और मुनि करेंगे। इस पर सीता ने उत्तर दिया, कि तुम मेरे शरीर को यथेच्छ भोग कर सकते हो। मुझे अपने शरीर की चिंता नहीं।

रावण को मार कर सीता सहित लौटते हुए राम ने सीता से पूछा, कि तुम रावण के संरक्षण में बहुत दिनों तक रही हो। उसने बिना तुम्हें स्पर्श किए तथा बिना तुम्हारे साथ संभोग किए, तुम्हें कैसे छोड़ा होगा। सीता ने उत्तर दिया, "मैं क्या कर सकती थी। मैं एकाकी थी। दूसरे मैं अबला स्त्री हूं। वह शक्तिशाली है मेरी स्वेच्छानुसार कोई काम नहीं हुआ है। मेरे शरीर के सिवाय मेरा मन तुम्हारे साथ था और रहेगा।"

उसने कोई यथार्थ बात नहीं बताई। वह बगले झांक रही थी और उत्तर दिया, "मेरा अपने शरीर पर कोई अधिकार न रह गया था। किन्तु मैं अपने मन की पवित्रता के संबंध में तुम्हें विश्वास दिला सकती हूं।"

इन सुसज्जित शब्दों के साथ उसने उत्तर दिया। अन्त में अयोध्या आ जाने पर राम ने सीता से उसकी पूर्ण पवित्रता की शपथ ग्रहण करने को कहा। उसने ऐसा नहीं किया किन्तु वह पृथ्वी में समाकर आलोप हो गई थी। दूसरे शब्दों में उसने आत्महत्या कर ली थी।

राम के अनुचर निंदनीय है

जहां तक सीता के पति राम का संबंध है वह पाखंडी, कपटी, विश्वास-घाती, स्त्रीवत-निर्बल, किंबहुना, मेहरा और झूठा था।

उसका भाई लक्ष्मण उपद्रवी व प्रजा-पीड़क था—जिसने अपने पिता को मारने का साहस किया था। वह लुच्चा व लंपट था—जो गद्दी प्राप्त करने हेतु कोई भी कार्य करने में न हिचकिचाया।

साठ वर्ष की अवस्था के बाद भी उसका पिता भ्रष्ट था। उसने अपने पुत्रों को समान रूप से प्यार न करते हुए एक को प्यार किया तथा दूसरे से घृणा की।

राम की माता अपने पति के प्रति कोई प्रेम नहीं करती थी। यही बात सुमित्रा के विषय में थी, जब दशरथ मृत्यु-शैया पर लेटा था तब निकट ही कौशल्या और सुमित्रा गंभीर निद्रा-विभूति थी। उसकी मृत्यु से शोकाकुल रोते हुए व्यक्तियों द्वारा वे जगाई गई। इससे स्पष्ट है कि वे अपने पति के प्रति कितनी उदासीन रहती थी।

सुग्रीव व विभीषण जिन्होंने अपने अपने भाईयों को धोखे से मरवा कर उनका राज्य कपट-छल तथा धोखे से छीन लेने के घृणित उद्देश्य से राम से मित्रता की। विश्वासघाती व आलसी थे।

राम की सम्पूर्ण मंडली में इस प्रकार के धूर्त, ठग, अधर्मी, विश्वासघाती तथा भातृद्रोही भरे पड़े थे। तो भी वे देवता माने गए है। किन्तु रामायण की कथा के अनुसार इन कथित दैवीशक्ति के विरोधियों (सुग्रीव आदि सभी) को सत्यवादी और सभ्य कहकर उनकी प्रशंसा की गई।

रावण की महानता

रावण की वीरता की प्रशंसा सर्वव्यापी थी, उसके महल की भव्यता और विशालता की प्रशंसा स्वयं हनुमान ने की है। उसने अपने शयनागार में सुन्दर महिलाओं के मध्य शयन करते हुए रावण की उपमा तारागणों के मध्य विचरण करते हुए चंद्रमा से दी है। हनुमान ने कहा है कि ये सभी स्त्रियां रावण की सुंदरता, बुद्धिमता व वीरता से आकर्षित होकर स्वेच्छापूर्वक उसके पास आ गई थी। उनमें से कोई भी स्त्री बलात नहीं लाई गई थी। कहा गया है, कि हनुमान स्वयं इस बात में विचार विमग्न हो गया था, कि यदि सीता अपने विवाह के पूर्व ही रावण द्वारा ले जाती—तो यह अति प्रशंसनीय होती।

वाल्मीकि ने रावण के विषय में कई स्थलों पर उसकी प्रशंसा के पुल आसमान में बांध दिए है। यथा—रावण एक महान विद्यार्थी था। उसने कई

घोर तपस्याएं की थी। वह वेदों का ज्ञाता अपनी प्रजा तथा संबंधियों का सत्य पालक था। वह एक वीर योद्धा था वह शक्ति-शाली व हष्ट-पुष्ट था। निष्कपट-भक्त, ईश्वर-कृपा पात्र और वरदानी था।

राम की भांति रावण को कही तुच्छ नहीं बताया है, जिस प्रकार राम ने सूर्पनखा के अंग भंग कर उसका रूप बिगाड़ दिया था—उसी प्रकार रावण भी सीता के साथ व्यवहार कर सकता था किन्तु इसकी प्रतिक्रिया-स्वरूप ऐसा करने का कोई भी विचार वह अपने मन में नहीं लाया। रावण ने सीता को अपनी भतीजी के संरक्षता में अशोक वन में रखा था। वह बहुत भला और सज्जन पुरुष था। वाल्मीकि ने कहा है, रावण ब्राह्मणों को यज्ञ करने से तथा उन्हें सोम रस पीने से रोकता था।

ऐसा सज्जन, रावण तथा उसके लोगों को इस कारण मात्र से कि वे ब्राह्मणों के शत्रु थे, दुष्ट राक्षस कहा गया है।

बाल्मीकि रामायण

रामायण की कथा कदापि सत्य नहीं है, यही विचार कई धर्म धुरंधरों तथा बुद्धिमानों द्वारा व्यक्त किए गए है।

बाल्मीकि ने स्वयं कहा है कि राम न तो ईश्वर था, न उसमें कोई स्वर्गीय शक्ति थी। ऐसी स्थिति में भी हिन्दू रामायण तथा उसमें वर्णित आर्य-पात्रों को महत्त्वपूर्ण समझते है।

ऐसा क्यों ताकि ब्राह्मण लोग, ब्राह्मणों के अतिरिक्त दूसरे मनुष्यों से सम्मान पाने का प्रचार कर सकें, कुछ भी हो, हमें रामायण निम्नांकित बातों का पुनर्निरीक्षण करना चाहिए।

1. क्या राम स्वर्गीय शक्ति हैं तथ्या क्या वह साधारण मानव मात्र से विशेष है। 2. क्या राम सत्यवादी है? 3. क्या वह वीर योद्धा है? 4. क्या राम एक बुद्धिमान पुरुष है? क्या वह नीच वर्णो से उच्च है? 5. क्या सीता सच्चरित-स्त्री है? 6. क्या सीता में साधारण स्त्रियों से न्यूनतम साधारण गुण है? क्या रावण दुष्ट है? 7. कया रावण सीता को हर ले गया? 8. क्या रावण ने सीता का सतीत्व बिगाड़ा?

भागवत में वर्णित विष्णु के सम्पूर्ण अवतारों में से जो रावण राक्षस को मारने के उद्देश्य से विष्णु का अवतार हुआ है। वही वैशवती राम है। तलना कीजिए।

विष्णु के अवतार

1. मच्छ अवतार, 2. कच्छप अवतार, 3. शूकर अवतार, 4. गंगा अवतार, 5. वामन अवतार, 6. परशुराम अवतार, 7. राम अवतार, 8. कृष्ण अवतार, 9. बलराम अवतार।

यह वर्णन किया गया है कि ये सभी नौ अवतारों का अर्थ ब्राह्मणों के हित में उनके शत्रु द्रविड़ राजाओं (शूद्र, महाशूद्र राजाओं) का संहार करना है। इन नौ अवतारों में से ब्राह्मणों ने राम के अवतार को अपनी रामायण की कल्पित कथा का आधार बनाया है। रामायण की यह कथा नम्बियान्दर नम्बी तथा दूसरे सैवित सन्तों पर आधारित 'पैरिया पुराण' के समकक्ष है।

'लीला-मृदु' के समकक्ष यह 'पैरिया पुराण' ईश्वर-भक्ति हैतु सैवितों द्वारा रची गई, में पूर्व प्रकाशित वैशवती सन्तों की कथा है।

किन्तु रामायण की कथा सैवितों के स्कन्द-पुराण से ली गई है–जिसका नाम परिवर्तित कर 'रामायण' रख दिया गया है। स्कन्द पुराण में आर्यों द्वारा कहे जाने वाले द्रविड़ राक्षसों (शूद्रों) के प्रति दर्शाई गई घृणा की अपेक्षा रामायण में उन्हें (आर्यों) को अत्याधिक माने जाने का दृष्टिकोण अपनाया गया है।

रामायण की अपेक्षा स्कंध पुराण का निर्माण बहुत समय पूर्व हुआ। इसी कारण से वह केवल एक व्यक्ति द्वारा लिखी गई थी।

चूंकि रामायण बहुत समय पश्चात लिखी गई, वह भी भिन्न समय में भिन्न-भिन्न लेखकों द्वारा। फलस्वरूप कई स्थलों पर भिन्न-भिन्न विचार एक दूसरे लेखक से विभिन्न प्रकट किए गए है। रामायण के प्रमुख पात्र राम और सीता के विषय में दिए गए वर्णनानुसार उन्हें चरित्रहीन बताया गया है।

छह वर्ष की अवस्था में ब्याह हो जाने तथा पांच वर्ष की अवस्था में किसी स्थान पर छिप कर 'ताड़का' का वध कर डालने से बालक राम की कथा प्रारंभ होती है।

उपरोक्त दो घटनाओं के कारण बालक राम को प्रकाश में लाने का कोई कारण नहीं रहा है। जब राम अठारह वर्ष का था–तब उसके पिता दशरथ ने उसे अयोध्या का राज्य देने के तिलकोत्सव संस्कार मानने का षडयंत्र को गुप्त रूप से उससे मिलकर रचा था। तथापि लोक भली-भांति जानते थे–कि दशरथ द्वारा कैकेई को दिए गए वरदान या वचन के अनुसार कैकेई तथा उसका पुत्र राजगद्दी का कृत्रिम अधिकारी है।

हमारा यहां पर दशरथ के कटपूर्ण षड्यंत्र से कोई संबंध नहीं है। क्योंकि दशरथ को न उत्तम व्यक्तित्व-युक्त और न कोई सैद्धांतिक पुरुष कहा गया है। यहां हमारा संबंध उस राम से है जिसको निपदों-चरित्र युक्त कहा गया है तथा जिसके आदर्शों का अनुसरण सर्व साधारण द्वारा सच्चा-वीर योद्धा समझकर किया जाना चाहिए–किन्तु रामायण वक्ताओं तथा धर्म के प्रमुख ठेकेदारों ब्राह्मणों ने इस समस्या को संतोष जनक ढंग से नहीं सुलझाया है।

श्री सी. राजगोपालाचार्य ने अंग्रेजी पुस्तक 'सम्राट का पुत्र' में संतोष जनक ढंग से उपरोक्त त्रुटियों का वर्णन किया है। अतः हम केवल इस निर्णय पर पहुंचते हैं–कि राम केवल एक साधारण मनुष्य है तथा मध्य श्रेणी के मनुष्य से भी हीन है।

निम्नलिखित तथ्य प्रकट करते है कि राम शूर वीर नहीं अपितु कायर है। उसने सुशील तथा लज्जती स्त्रियों को न केवल छेड़ा–बल्कि उन्हें मार डाला है। उसने बिना किसी प्रामाणिक कारण के ताड़ के पेड़ो की ओट में छिप कर बालि को मारा। वह भी जब बालि दूसरे व्यक्ति से लड़ने में संलग्न था। रामायण की सम्पूर्ण कथा में यह कही नहीं प्रकट होता है कि राम कोई विवेकशील मनुष्य था।

दशरथ ने राम को निम्नलिखित लालचपूर्ण परामर्श किया था। कि हे राम! मैंने अपनी मूर्खता-वश अपना राज्य कैकेई को देने का वचन दे दिया है। इसी के दुष्परिणामस्वरूप मैं अपनी इच्छा के विरुद्ध तुम से वनवास जाने को कह रहा हूं–किन्तु मैं तो अपने वचनों के अनुसार ऐसा करने को बाध्य हूं–परंतु तुम ऐसा करने को बाध्य नहीं हो। अतः मेरे द्वारा वनवास दिए जाने पर भी तुम यह घोषणा कर दो, कि मैंने अपने पिता को गद्दी से उतार दिया है। अब मैं राज्य करूंगा।

दशरथ द्वारा राम को ऐसा परामर्श देने पर तथा यह जानते हुए कि यह उचित नहीं है। राम ने कहा, यदि मैं ऐसा करता हूं–तो जब वास्तविकता समझ लेगी–तो वह मेरे प्रति विद्रोह कर देगी। अतः उसने अपने पिता से (पुनः स्पष्ट) कहा कि तुम राज्य करते रहो और मेरा राजतिलकोत्सव स्थगित कर दो।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि राम बुद्धिमान नहीं था–बल्कि वह पद-लोलुप था। आगे और सुनिए। जब 'मारीच' कपट-भेष धारण कर

स्वर्ण-हिरण वन कर राम, लक्ष्मण और सीता के समक्ष दंडक-वन से होकर निकला—तब उस हिरण के लिए सीता की प्रार्थना पर उसने उसे पकड़ना चाहा। यद्यपि हिरण के पकड़ने के फलस्वरूप भविष्य की दुर्घटना के विषय में लक्ष्मण ने राम को संकेत किया था—तो भी वह उसके पीछे उसे पकड़ने चला गया।

इन बातों से स्पष्ट हो जाता है कि राम के मस्तिष्क नहीं था। हम किस कारण से यहां उपरोक्त बातें करते हैं? इस प्रयोजन से कि हमें देखना है कि, क्या रामायण और राम हमारी श्रद्धा तथा सम्मान के पात्र है और यह बताने के लिए कि किस प्रकार ब्राह्मण ने ब्राह्मण न कहे जाने वाले सम्पूर्ण लोगों को धोखा दिया है। ठगा है। बेवकूफ बनाया है तथा अपने तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति के लिए अपनी स्थिति और अज्ञानता को अद्भुत ढंग से वर्णन किया है। वे आज भी इस वैज्ञानिक सभ्य युग में वही खेल (रामलीला) तथा नाटक खेल रहे है। हम चाहते है कि लोग इन त्रुटियों के संबंध में रामायण वक्ताओं से प्रश्न करें।

आओ। अब हम लोग सीता की ओर अपना ध्यान आकृष्ट करें। सीता का जन्म ही अनिश्चित तथा संदेह-युक्त है अर्थात उसके माता-पिता का ही पता नहीं है। वह जंगल में पड़ी पाई गई थी। इस संबंध में कई श्लोक है। वाल्मीकि ने वर्णन किया है कि सीता ने स्वयं कहा था कि ज्यों ही मैं पैदा हुई—मुझे बन में फेंक दिया गया था। राजा जनक ने मुझे पा लिया और मेरा पालन पोषण किया। तरुणावस्था प्राप्त कर चुकने के पश्चात मेरे साथ लगे हुए उपरोक्त कलंक के कारण किसी भी राजकुमार ने मेरे साथ विवाह करकने की इच्छा न की। ढूंढ़ने पर सीता के लिए कोई योग्य वर न मिल सकने के कारण राजा जनक अपने मित्र विश्वामित्र के पास इस संबंध में गया। विश्वामित्र ने इस पांच वर्ष के राम का विवाह इस पच्चीस वर्ष की सीता के साथ करा दिया और सीता ने इस छोटे तथा अयोग्य वर (पति) पर कोई आपत्ति नहीं की।

वाल्मीकि रामायण के अतिरिक्त दूसरी रामायण में कहा गया है कि राम तथा सीता का विवाह-संस्कार हो जाने के पूर्व जनक की स्त्री स्वयंवर-स्थल पर आई और वहां एकत्रित जनसमूह के सामने चिल्लाकर घोषणा की, कि "सज्जनो! आप लोग यहां उपस्थित रहते हुए भी किस प्रकार यह हेय तथा घृणित उत्सव (स्वयंवर) देख रहे हो।"

जैसे ही सीता सहित सब बराती अयोध्या लौटकर गए। भरत ने सीता से घृणा की। वाल्मीकि ने कहा है कि सीता ने स्वयं इस बात को कहा था।

बनवास जाने के पहिले जब राम ने सीता को अयोध्या में ही रहने तथा जिस प्रकार भरत सीता से प्रसन्न रहे—वैसा भरत के प्रति व्यवहार करने को सीता को परामर्श दिया, तब उसने राम के असभ्यता तथा घमंड पूर्वक उत्तर दिया। मुझे क्या करना चाहिए भरत मुझ से घृणा करता है। मैं उसके साथ कैसे रह सकती हूं। सीता ने इन शब्दों का वर्णन उसके ही शब्दों में वाल्मीकि करते है, हे राम! तुम वीर योद्धा नहीं। कायर तथा अशक्त हो। तुम मुझसे भरत द्वारा व्यभिचार कराना चाहते हो। मानो मैं वैश्या हूं। ताकि तुम अयोध्या का राजा बनने का लाभ उठा सको। उस समय राम सत्तरह वर्ष का था।

वाल्मीकि द्वारा श्लोको के रूप में कौशल्या के मुख से निम्न तथ्य वर्णन किया गया है। जब राम बन जाने के लिए अपनी माता कौशल्या से आज्ञा लेने गए—तब वह कहती है हे राम! मैं तेरे पिता अर्थात अपने पति और अपनी सौत कैकेई द्वारा अपमानित की गई हूं। मैंने इस सत्तरह वर्षों में बहुत कष्ट सहा है—किन्तु मैं तुम्हारे लिए मरने को तैयार हूं। इससे हम निर्णय निकालते है, कि उस समय राम सत्तरह वर्ष का था।

जब विश्वामित्र ने दारथ से प्रार्थना की राम को ताड़का का वध करने के लिए मेरे साथ भेज दीजिए। तब दशरथ ने उसे निम्न उत्तर दिया। हे ऋषि, मेरी गोद में खेलता हुआ राम अभी शिशु है। अभी उसका मुंडन-संस्कार भी नहीं हुआ। मैं छोटे शिशु को युद्ध आदि कार्यों के लिए कैसे भेज सकता हूं। इससे स्पष्ट है कि विवाह के समय राम केवल पांच वर्ष का था।

इससे स्पष्ट है कि पूण यौवनावस्था प्राप्त सीता तथा राम जैसे शिशु के साथ विवाह करने के लिए समहत हो गई। यही कारण है, कि सीता, राम के साथ असभ्यतापूर्वक व्यवहार करती थी।

और भी बनवास जाने के पहिले जब राम ने सीता से बहु-मूल्य वस्त्र तथा आभूषण त्यागने व तपस्वी के समान वत्कल चीर धारण करने को कहा तब उसने अस्वीकार कर दिया। तब उसकी सास कैकेई ने राम को तापस भेष में देखकर, अपनी बहू सीता से कहा, "पहिले से पहिने हुए बहुमूल्य वस्त्र तथा आभूषणों के ऊपर तापसोसिच वस्त्र पहिन लो।"

जब राम ने शिकार करने के लिए कपटी हिरन का पीछा किया और उसे मार डाला, तब हिरण हा लक्ष्मणा; हा लक्ष्मण; चिल्लाया। तब सीता ने लक्ष्मण को संबोधित करते हुए कहा कि मुझे ऐसा लगता है कि राम के प्रति कोई दुर्घटना हो गई है, शीघ्र जाओ और देखो क्या बात है। इस पर लक्ष्मण ने उसे उत्तर दिया, हे माता! यह उसी कपटी हिरन का शब्द है, चिंता न करो, किसमे शक्ति है, जो राम का कुछ भी अहित कर सके, वह बहुत शक्तिशाली है, मेरे भाई ने उस हिरन को मार डाला होगा और वही हिरन इस प्रकार चिल्ला रहा है। लक्ष्मण ने अपनी यथा शक्ति तथा योग्यतानुसार उत्तर दिया और सीता को समझाया—किन्तु वह उसके समझाने पर संतुष्ट न हुई और सीता ने कहा, "अरें पापी; क्या तू समझता है कि राम की मृत्यु के पश्चात तू मेरे साथ संभोग का आनंद ले सकता है? क्या भरत ने इसी उद्देश्य से तुझे मेरे साथ वन में भेजा है? कि भरत और तू स्वयं मुझे अपनी स्त्री बनाएगा?" यह सुनकर लक्ष्मण शीघ्र ही राम की सहायता करने चला गया।

सीता

जब हम लोग से संबंधित चरित्र का प्रकाश करते है—उस समय हमारा उद्देश्य सीता का अपमान करना नहीं है। पाठक इस पर ध्यान दे। यह बात गंभीरतापूर्वक कही जाती है।

हम विशेषतया रामायण में वर्णित सीता की स्थिति पर विश्वास नहीं करते है कि कथित सीता कल्पित सीता है। यह कल्पना-मूर्खता पूर्ण वर्णन पर आधारित है। ध्यान दीजिए कि रामायण लेखक को यह लिखने से तनिक भी कष्ट का अनुभव नहीं हुआ कि सीता, सती वीरांगना, बुद्धिमती तथा अपने सतीत्व की रक्षा करने वाली थी। दूसरी ओर यह भी वर्णन पाया जाता है कि सीता एक चरित्रहीन स्त्री थी। इससे भिन्न रामायण न केवल कल्पित कथा है—बल्कि उसका आधार ही काल्पनिक तथा असंभव पृष्ठभूमि है।

रामायण में सीता का वर्णन साधारण स्त्री की भांति किया गया है। रामायण के अनुसार सीता के जन्म से लेकर, जनक द्वारा उसके पृथ्वी में पाए जाने, पृथ्वी में समा जाने तथा आत्महत्या कर लेने तक हम उसमें केवल साधारण स्त्री-मात्र की ही विशेषताएं पाते हैं। हम उसमें कोई स्वर्गीय व उच्च माननीय गुणों को नहीं पाते हैं। अतः रामायण की सीता एक साधारण स्त्री है।

यह सुनकर कि उसने अपनी अस्तीत्व को प्रमाणित करने के लिए अग्निकुंड में प्रवेश किया। कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है—क्योंकि हम आज के युग में मंदिरों में मनाए जाने वाले त्योहारों के अवसर पर साधारण मनुष्यों को भी आग पर चलते हुए देखते है। न केवल वेश्याएं बल्कि लुच्चे व दुष्ट प्रकृति वाले आज भी आग में चलते हुए देखे जाते हैं।

हम यदि वाल्मीकि रामायण का सतर्कता-पूर्वक अध्ययन करें तो हम उस समय सीता को तीन मास की गर्भवती पाते है। अब हम इसकी व्याख्या करेंगे, कि वह तीन मास की गर्भवती कैसे थी? जैसे ही सीता की अग्नि-परीक्षा का कार्य समाप्त हो गया। राम सीता को अयोध्या ले गया। एक मास तक अयोध्या का राज्य कर चुकने के पश्चात एक दिन राम और सीता दोनों प्रेमी-प्रेमिका की भांति एक पुष्प वाटिका में बैठे हुए आनंद से समय व्यतीत कर रहे थे—कि अचानक राम की दृष्टि सीता के पेट पर, जो कि बड़ा और उभरा हुआ था पड़ी। राम ने तुरंत सीता से पूछा कि, "तुम्हारा पेट इतना बड़ा क्यों है?" इस पर सीता ने उसे उत्तर दिया "यह चार या पांच मास का गर्भ है" यह सुनकर राम चिंता और दुःख से शीघ्र वहां से चला आया और उसे जंगल में छोड़ देने पर विचार करने लगा। वहां से उठकर वह अपने महल के सामने के आंगन में बैठा हुआ पाया गया। तब महल के उज्जड़ तथा मूर्ख लोगों ने प्रहसन पूर्ण वार्तालाप करते हुए उसकी मनोदशा को परिवर्तित करने का प्रयत्न किया तो भी राम उसी स्थिति में बना रहा इस बात को उसके भाइयों ने भी देखा—तो व्रे उसके उदास होने के कारण का पता लगाने लगे। इस राम ने अपने भाइयों से कहा कि तुम लोग सीता के विषय में क्या दृष्टिकोण रखते हो।" उन्होंने उत्तर दिया कि लोग यह कह रहे है कि राम का सीता के साथ रहना अपमानजनक है। ऐसा सुनकर राम ने तुरंत अपने भाई लक्ष्मण को बुलाया और उससे कहा कि वह सीता को दूसरे दिन प्रातःकाल जंगल में किसी अज्ञात स्थान में छोड़ आए। राम के कथनानुसार लक्ष्मण ने ऐसा ही किया अर्थात सीता अकेले जंगल में छोड़ दी गई। लक्ष्मण ने लोकापवाद के भय से राम द्वारा सीता को जंगल में छोड़ देने की आलोचना की। किन्तु सीता ने उत्तर दिया कि आलोचना करना उचित नहीं है—क्योंकि वह गर्भ पांच मास का है, यह मेरे कर्म का दोष है। सीता ने लक्ष्मण को पेट भी दिखाया।

अतः हम इस बात पर विश्वास नहीं कर सकते कि सभी स्त्रियां जो कि आग पर चलने की बात करती है। सत्यवती व पतिव्रता है या उसमें कोई स्वर्गीय-शक्ति है। अतः सीता एक साधारण स्त्री मात्र हैं

अतएव सीता-सदृश्य एक साधारण स्त्री अधिकतम सौ वर्ष या इससे अधिक दस बीस वर्ष और जीवित रह सकती है–यदि वह इष्ट-पुष्ट तथा स्वस्थ है। किन्तु रामायण के ढूंढ़ने से पता चलता है कि सीता सहस्त्रो वर्ष जीवित रही।

तत्पश्चात राम की कथा के विषय में विचार करें। रामायण के अध्ययन करने से पता चलता है कि राम सहस्त्र वर्ष जीवित रहा–किन्तु हम लोग समझ या कह नहीं सकते कि यह सीता, राम के साथ इतने दीर्घ काल तक कैसे जीवित रही। इतने दीर्घ काल तक जीवित बने रहने का वरदान उसको किससे द्वारा दिया गया? वह इतने समय तक जीवित रहने योग्य कैसे हो गई? हम रामायण में इन प्रश्नों को उचित उत्तर न पा सके।

इन बातों को छोड़कर अब हम रामायण के अंश पर विचार करेंगे–जहां पर सीता व रावण का संबंध है। वहां हम सीता में एक सती स्त्री की भांति शुद्ध रूप से कोई विशेषताएं नहीं पाते है।

यदि हम रावण के प्रति निर्दिष्ट इस अभियोग का मामला, कि उसने सीता का सतीत्व भ्रष्ट किया। वह उसे छल से ले गया। खुफिया विभाग के किसी अधिकारी को अनुसंधान के लिए सौंप दे तथा खुफिया विभाग की रिपोर्ट किसी निष्पक्ष न्यायाधीश के समक्ष निर्णय के लिए प्रस्तुत की जाए और यदि राम को अभियोगी तथा रावण को अभियुक्त समझकर राम की सुविधानुसार ही मामले का निर्णय दिया जाय–तो हमें पूर्ण विश्वास है, कि न्यायाधीश रावण के पक्ष में ही अपना यह निर्णय देगा कि रावण निर्दोष तथा निष्कलंक है–उसे डरा व धमका कर निष्प्रयोजन फांस दिया।

और भी यदि कोई शिकारी किसी शेर को प्रलोभन देकर उसे फांसने के उद्देश्य से एक मोटे-ताजे हिरन को किसी पिंजड़े में बंद कर के पिंजड़े को जंगल में रख दे वह यदि कोई शेर पिंजड़े के अंदर घुस आए और पिंजड़ा बंद हो जाए–तो यही कहा जाएगा कि शेर स्वेच्छापूर्वक पिंजड़े में घुसा। खुफिया विभाग की उपरोक्त यही रिपोर्ट होगी।

सच्ची रामायण की चाभी

लेखक ललई सिंह यादव

कोर्ट का आदेश

सन् 1956 ई. से पहले रामायण की समीक्षा तमिल भाषा में श्री पैरियर ई. व्ही. रामास्वामी नांयकर, ग्राम मालीगाई, पोस्ट पुथुर, जिला त्रिचुरापल्ली (तामिनलाडु प्रदेश) ने लिखी व छापी। दूसरा अंग्रेजी भाषा में अनुवाद 'दी रामायण ए टू रीडिंग' नाम से राशनलिस्ट पब्लिकेशन, तामिलनाडु-2 ने सन 1951 ई. में छापा। तीसरा हिन्दी भाषा में अनुवाद 'सच्ची रामायण नाम से ललईसिंह यादन, अध्यक्ष, अशोक पुस्तकालय (रजिस्टर्ड) ग्राम व पोस्ट–झींझक, जिला कानपुर (उत्तर प्रदेश) ने दि. 1.10.1968 ई. को छापा। उत्तर प्रदेश गवर्नमेंट गजेट दिनांक 20 दिसम्बर सन् 1961 की आज्ञानुसार केवल हिन्दी व अंग्रेजी एडिशन यह लिखकर जब्त कर दिए गए कि, इस पुस्तक से भारत के कुछ नागरिक समुदाय की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचती है।

उपरोक्त आज्ञा के विरुद्ध प्रकाशक ललईसिंह यादव ने हाईकोर्ट ऑफ जुडीकेचर इलाहाबाद में क्रिमिनल मिसलिनियस एप्लीकेशन प्रस्तुत की। माननीय जस्टिस श्री के.एन. श्रीवास्तव व माननीय जस्टिस श्री हरिस्वरूप अपीलांट की ओर से बनवारी लाल यादव एडवोकेट हाईकोर्ट और रिस्पान्डेट (उत्तर प्रदेश गवर्नमेंट) की ओर से गवर्नमेंट एडवोकेट तथा उनकी सहयोगी श्री पी.सी. चतुर्वेदी एडवोकेट व श्री आसिफ अंसारी एडवोकेट की बहस दि. 26, 27, व 28 अक्टूबर 1970 ई. को तीन दिन लगातार सुनी।

माननीय जस्टिस श्री ए.के. कीर्ति ने मुकदमा नंबर 412 सन 1970 ई. क्रिमिनल मिसनेनियस एप्लीकेशन-अंडर सेकशन 19 बी. क्रिमिनल प्रोसीजर कोड में दि. 19 जनवरी, सन् 1971 ई. को बहुमत का निर्णय दिया कि–

1. गवर्नमेंट ऑफ उत्तर प्रदेश की पुस्तक 'सच्ची रामायण' की जब्ती की आज्ञा निरस्त की जाती है।
2. जब्त शुदा पुस्तकें सच्ची रामायण अपीलांट ललईसिंह यादव को वापस की जाएं।
3. गवर्नमेंट ऑफ उत्तर प्रदेश की ओर से अपीलांट ललईसिंह को तीन सौ रुपए खर्चे के दिलाए जाएं।

उपरोक्त मुकदमा में अपीलांट ललईसिंह यादव की ओर से जो रीज्वाइंडर अर्थात प्रत्युत्तर किया गया था–पाठकों की विशेष मांग पर उसे 'सच्ची रामाण की चाभी' के नाम से छापा गया है।

दि. 9.12.71 —ललई सिंह यादव

रामायण व महाभारत काव्यों पर श्री जवाहरलाल नेहरू के विचार

(नई दिल्ली दिनांक 14-15, दिसंबर सन 1954 ईस्वी के 'दि मेल' नामक समाचार पत्र से उद्धृत)

प्रधानमंत्री ने तामिलनाडू में रामायण पर हास्य-पूर्ण व्यंग्यात्मक खेले जानेवाले नाटकों के विषय में बोलते हुए कहा है "कि दक्षिण में ये आंदोलन न केवल भाषा–बल्कि जीवन के दूसरे क्षेत्रों में भी उत्तरी भारत के लोगों के अनुचित उत्पीड़न तथा दबाव के दुष्परिणाम स्वरूप है। यह यहां के मनुष्यों के हृदयों में बना हुआ स्थायीभाव है–जिसे गंभीरतापूर्वक समझना चाहिए और हिन्दी के वे नेता जिन्होंने तामिलनाडू के लोगों तथा उनकी भाषा से घृणा की। हिन्दी तथा राष्ट्र के मूल सहायक नहीं है।" प्रधानमंत्री ने कहा कि **"यदि हम कोई गलत कदम उठाते है–तो हमारी परेशानियां बढ़ जाएगी। स्थायी भाव से महान शक्ति होती है और जब अनुचित दबाव के भय का स्थायी भाव पैदा हो जाता है–तो उसका प्रतिघात बहुत बुरा होता है।"**

श्री नेहरू ने तामिलनाडू में रामायण पर व्यंग्यात्मक हास्यपूर्ण ढंग से खेले जाने वाले नाटक की ओर संकेत किया और कहा हमें खोज करना चाहिए कि इन आंदोलनों की पृष्ठभूमि क्या है? रामायण पर खेले जाने वाले ये हास्यपूर्ण व्यंग्यात्मक नाटक श्रोताओं तथा द्रष्टा के समक्ष इस बात के उदाहरण स्वरूप है कि उत्तरी भारत के लोगों ने दक्षिणी भारत के लोगों के न केवल आज, बल्कि सहस्त्रों वर्ष पूर्व पराजित किया। सताया और यदि उनहें अवसर मिले तो ऐसा करते रहेंगे।

जो कुछ उन्होंने उड़ीसा में देखा, उससे बहुत दुखी हुए।

अपने भाषण को चालू रखते हुए श्री नेहरू ने कहा–"दो दिन पूर्व मैं उड़ीसा में था। वहां पर मैंने **'एकलव्य'** के विषय में एक नाटक देखा।" यह महाभारत की एक कथा है कि गरीब के पुत्र एकलव्य ने क्षत्रियों के धनुर्विद्या के शिक्षक गुरु 'द्रोणाचार्य' से बाण विद्या सीखने की सहायता मांगी। गुरु द्रोणाचार्य ने उसे बाण विद्या सीखाने से इन्कार कर दिया–क्योंकि वह क्षत्रिय पुत्र नहीं था–किन्तु एकलव्य द्रोणाचार्य की मिट्टी की प्रतिमा बनाकर और उसे गुरु सदृश्य समझ कर बाण विद्या का अभ्यास करने लगा। यहां तक कि वह इस विद्या में इतना निपुण हो गया, कि वह अर्जुन की अपेक्षा अधिक विख्यात हो गया। जब गुरु द्रोणाचार्य को ज्ञात हुआ, कि वह मेरे शिष्य अर्जुन से भी धनुर्विद्या में श्रेष्ठ (दक्ष) हो गया है–तब उसने उसे बुलाया और उससे गुरु दक्षिणा मांगी–क्योंकि उसने उसकी प्रतिमा से बाण विद्या सीखी थी। द्रोणाचार्य ने एकलव्य से उसके हाथ का दाहिना अंगूठा मांगा–जिसे उसने उसे दे दिया। महाभारत में एकलव्य की यह कथा अति मर्म-स्पर्शी है।

उन्होंने कहा कि मैंने इस घटना के विषय में कुछ विचार न किया। क्योंकि इस घटना से मेरे हृदय में गहरा आघात हुआ? उड़ीसा में रहने वाली (महाशूद्र) जाति के लोगों ने मुझे बताया, कि इस प्रकार हमें कितना सताया गया है। हमें इन बातों की प्रतिक्रियाओं से सावधान रहना चाहिए। वास्तव में है कि इतिहास एक पक्ष के लोगों ने अर्थात ब्राह्मणों ने लिखा है। लोग आज भी अज्ञानतावश उन्हीं घटनाओं के आधार पर कविता करते या लेख लिखते है। हमें यह न सोचना चाहिए कि ये कथाएं दूसरों द्वारा बनाई गई है। जब मैं गंभीरतापूर्वक विचार करता हूं तब मेरा क्रोध बढ़ जाता है, कि ब्राह्मणों ने किस प्रकार दूसरे लोगों को अपने बराबर होने देने में रोक लगा दी है।

मुकदमों की सूची

1. 'सच्ची रामायण' की निगरानी उत्तर प्रदेश गवर्नमेंट ने हाईकोर्ट ऑफ जुडीकेचर इलाहाबाद की आज्ञा के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट नई दिल्ली में दायर की।
2. 'सम्मान के लिए धर्म परिवर्तन करें' नामक पुस्तक जिसमें डॉक्टर अम्बेडकर के कुछ भाषण थे, उत्तर प्रदेश गवर्नमेंट के दिनांक 16 सितंबर सन 1970 ई. की आज्ञानुसार जब्त हुई।

   डॉक्टर अम्बेडकर साहित्य रक्षक परिषद (रजि.) झींझक ज़िला कानपुर के अध्यक्ष की हैसियत से हाईकोर्ट ऑफ जुडीकेचर इलाहाबाद में क्रिमिनल मिसलेनियस एप्लीकेशन, अंडर सेक्शन 19 बी. क्रिमिनल प्रोसिजर को, 22 दिन लेट पेश की। दिन 19 अप्रैल सन् 1971 को माननीय जस्टिस श्री विलियम ब्रूम, माननीय जस्टिस श्री यशोदानन्दन, माननीय जस्टिस श्री सुधी मलिक ने एडमिशन की बहस के समय 22 दिन लेट की क्षमा प्रदान करके उपरोक्त एप्लीकेशन एडमिट कर ली। दिनांक 3 मई व 10 मई 1971 ई. को माननीय उपरोक्त जस्टिस महोदयों ने अपीलांट की ओर से श्री बनवारीलाल यादव एडवोकेट हाईकोर्ट व रिस्पाण्डेट (उत्तर प्रदेश गवर्नमेंट) की ओर से गवर्नमेंट एडवोकेट की बहस सुनी। माननीय जस्टिस विलियम ब्रूम ने मुकदमा नंबर 3221 सन 1970 ई. क्रिमिनल मिसलेनियस एप्लीकेशन, सेक्शन 19 बी. क्रिमिनल प्रोसीजर कोड के अन्तर्गत दिनांक 14 मई 1971 ई. को सर्वसम्मति से निर्णय दिया कि–

1. गवर्नमेंट ऑफ उत्तर प्रदेश की 'सम्मान के लिए धर्म परिवर्तन करें' नामक पुस्तक की जब्ती की आज्ञा निरस्त की जाती है।

2. गवर्नमेंट ऑफ उत्तर प्रदेशक की ओर से अपीलांट ललई सिंह यादव को तीन सौ रुपए खर्चे के दिलाए जाएं।
3. गवर्नमेंट ऑफ उत्तर प्रदेश ने स्पेशल आर्डर मार्फत निदेशक हरिजन तथा समाज कल्याण विभाग उत्तर प्रदेश 32-68/2 शिक्षा—ब दि. 10 मार्च 1970 ई. के अनुसार डॉक्टर अम्बेडकर का लाहौर का भाषण 'जातिभेद का उच्छेद' जो 'एन्हीलेशन आफ कास्ट का अक्षरशः अनुवादक हैं—आदि कुछ किताबें खतरनाक बताकर सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के सहायता प्राप्त सार्वजनिक पुस्तकालयों (लाईब्रेरियों) से वापस मंगा लिया।

बौद्ध धर्म, समता एवं प्रगतिशील साहित्य प्रचारक तथा रक्षक परिषद (रजिस्टर्ड) झींझक, जिला कानपुर के अध्यक्ष की हैसियत से मैंने दि. 21 मई 1971 को हाईकोर्ट ऑफ जुड़ीकेचर, इलाहाबाद में सिविल मिसलेनियस एप्लीकेशन, भारतीय संविधान की धारा 226 के अन्तर्गत प्रस्तुत की।

दि. 1.12.71

सोनेलाल शंखवार
कोषाध्यक्ष

विनम्र निवेदन

1. सम्पूर्ण भारत में पहले द्रविड़ तथा उनकी शाखाएं नाग, दैत्य, दानव, असुर, गंधर्व, किन्नर, ऋक्ष, वानर, राक्षस, दास, गोंड, भील, संथाल, पणि, वाल्हीक व अर्जिक आदि जातियां रहती थी। इनके छोटे-छोटे असंगठित राज्य थे। राज्यवस्था अच्छी थी।
2. 1800 वर्ष ईसा पूर्व मध्य एशिया की तरफ से आर्य नामक एक जाति भारत में चारागाहों की तलाश में आई। बाद में लुटेरा बन गई। इन आर्यों ने पंजाब व उत्तर प्रदेश से प्राचीन मूल निवासियों को हरा कर, फुसलाकर व खूबसूरत लड़कियां आदि देकर प्रवज्चों द्वारा अपने छोटे-छोटे किंतु संगठित राज्य स्थापित किए।
3. उत्तर प्रदेश में सरयू नदी के किनारे 'अयोध्या' का छोटा राज्य आर्यों का था। इक्ष्वाकु वंशीय राज्य करते थे। उनकी संतान राम थे।
4. संपूर्ण भारत पर अभी तक आर्यों का अधिकार नहीं हो पाया था। राम-रावण युद्ध का कारण आर्यों की विजय-यात्रा थी।
5. इतिहास अंधकारमय है। सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग की हजारों वर्षों के अंतरावली कल्पनाएं तथा श्रीमद्भागवत महा-पुराण व महाभारत आदि की पीढ़ियों वाली वंशावलियां केवल कल्पनाएं हैं। झूठी हैं—क्योंकि वे आपस में मिलती नहीं है।
6. वाल्मीकि रामायण बाल कांड सर्ग 2 अनुसार ब्रह्मा ने वाल्मीकिं को जो राम-चरित्र वह जानते थे, उन्हें सुनाकर राम का चरित्र नारद ने जो वह जानते थे, वाल्मीकि को सुनाया। वाल्मिकी ने कुछ यात्रियों से और अधिक ज्ञात करके राम का चरित्र लिखा।

सबने सुनी सुनाई बातें वाल्मिकी को बताई, क्योंकि सुनी-सुनाई बातों में कुछ सत्य और कुछ झूठ होती है। इनमें झूठ की अधिकता इसलिए

अधिक हो जाती है—क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ झूठ बात रोचता बढ़ाने के लिए जोड़ता चला जाता है। अतः इन सुनी सुनाई बातों पर विश्वास अपनी ढपली-अपना अपना राग अलग-अलग अलापते रहे हैं और भविष्य में भी अपना-अपना राग अलग अलापते रहेंगे।

7. इन रागों के कुछ नमूने नीचे दिए जाते हैं—

(1) 'श्री रामावतार भजन तरङ्गिणी का नीचे लिखा पद राम तथा सीता की ललित कथाओं का दिग्दर्शन कराता है।

सीता कहती हैं कि—

हमारे प्रिय ठाढ़े सरजू तीर ॥ टेक ॥
छोड़ि लाज मैं जाय मिली, जहां खड़े लखने के बीर ॥ 1॥
मृदु मुसुकाय पकरि कर मेरी, खेच लियो तव चीर ॥
झाऊ वृक्ष की झाड़ी भीतर, करन लगे रति धीर।

(2) अ 'कृपा निवास पदावली' में राम सीताविषयक पद :

नीबी करषति वरजति प्यारी।
रस लम्पट सम्पुट कर जोरत,
पद परसत पुनि लै बलिहारी।

ब. **पिय हंसि रस रस कंचुकि खोले।**
चमकि निवारि पानि लाडिली,
मुरक मुरक मुख बोले।

नोट—उपरोक्त पद पं. रामचंद्र शुक्ल कृत 'हिंदी साहित्य का इतिहास' से उद्धृत किए गए है।

जिन बातों ने दिमाग को गुलाम बनाकर अपनी बात को मानने के लिए जबरन जोर दिया है, उनसे अपने दिमाग को स्वतंत्र करके अपनी रोटी, कपड़ा, मकान व इज्जत की समस्या हल करने की तरकीब ढूंढ़ने में लग जाएं।

सब सुखी व स्वस्थ रहें। सब को अनंत धन्यवाद!

भवतु सब्बं मंगलं

दि. 1.12.71 ई. सबका

ललई सिंह यादव

दो शब्द

1. राम और रामायण के सभी पात्रों को यदि भगवान का अवतार या दैवी-शक्तिवाला मान लिया जाए—तब तो किसी विषय पर बुद्धिगम्य तर्क करनेवाले हिन्दू को हिन्दू न कहकर विधर्मी कहा जाएगा। बुद्धियुक्त सच्ची मानवता खतरे में पड़ जाएगी।
2. अतः उन्हें केवल मानव-मात्र समझकर उनके चरित्रों का विवेचन कर सच्ची रामायण की शंकाओं का समाधान किया जा सकता है।
3. रामचरित्र उपाध्याय कृत 'रामचरित चिंतामणि' मैथिलीशरण गुप्त कृत 'साकेत' केदारनाथ मिश्र कृत 'कैकेई' व बालकृष्ण शर्मा नवीन कृत 'उर्मिला' के अनुसार राम को केवल मानव मात्र के रूप में चित्रित किया गया है।—रामकथा अनुच्छेद 301
4. चंद्रिकाप्रसाद जिज्ञासु कृत 'रावण और उसकी लंका' छठवीं बार पेज नंबर 21 में श्री मेल्लाण्डी व्यंकट रत्नम द्वारा लिखित "दी रामा ग्रेटेस्ट फैरोह ऑफ इंजिप्ट" नामक पुस्तक में सिद्ध किया गया है, कि राम और रावण की सारी कथा मिस्र देश के 'रामेसस द्वितीय' की कहानी हैं। दशरथ, कौशल्या, राम, लक्ष्मण, सीता व वशिष्ठ नाम के व्यक्ति भारत में कभी पैदा नहीं हुए हैं।

   इस मत को मान लेने से या असुरों को असीरियन कहने की शेखो वसाहत करने से सारी रामायण विदेशी बनाने में राम से भी हाथ धोना पड़ेगा और सारा गुड़ गोबर हो जाएगा। अतएव आर्य पंडित की यह स्थापना भयावनी है।

   रावण का द्राविडियन होना तो दक्षिणी भारत के लोग भी स्वीकार करते हैं। अधिकांश लेखकों का भी यही मत है, कि भारत के मूल निवासी हैं।

5. फादर कामिल बुल्के कृत रामकथा अनुच्छेद 110 के अनुसार की कथा के बानर, श्रद्धा (भालू) और राक्षस विन्ध्य प्रदेश भारत की आदिवासी अनार्य जातियां थीं। इसके विषय में प्रायः किसी को भी किसी प्रकार का संदेह नहीं है। यद्यपि वाल्मीकि रामायण में इन आदिवासियों को वास्तव में बानर व ऋक्ष आदि माना गया फिर भी आदि-काव्य के अनेक स्थलों से पता चलता है, कि ये सब मनुष्य ही थे। इसका समर्थन वाल्मिकी रामायण युद्ध काण्ड सर्ग 66/5 से होता है। कुम्भकरण के युद्ध के समय युवराज अंगद ने नल, नील, गवाक्ष और कुमुद से कहा—हे वीरो, तुम लोग श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न हो। इस बात को भूल कर निर्बलों की तरह कहां भागे जा रहे हो।

इसका समर्थन जी. रामदास कृत 'दी ओरिजिनल ट्राईब्स इन रामायण मेन इन इंडिया भाग 5, पृष्ठ 28 से 55 और 'ओरिजिन नेम्स इन दी रामायण जर्नल बिहार उड़ीसा रिसर्च सोसायटी में 11, पृष्ठ 41 से 53 से भी होता है। रामकथा अनु. 110।

जैन रामायणों के अनुसार जिस जाति की ध्वजा पर बंदर का चिह्न था—वह बानर जाति कहलाती थी। जैसा कि आज रूस देश की ध्वजा पर रीछ का चिह्न होने से उन्हें 'रशियन बीयर्स और अंग्रेज जाति की ध्वजा पर शेर का चिह्न से उन्हें ब्रिटिश कहते हैं।

जैन ग्रंथों की राम-रावण कथा में बानर चिह्नांकित ध्वजा मुकुटधारी जाति वानर वंशीय कही गई है। विभिन्न विद्वान भी इस मत से सहमत हैं। इसका समर्थन शिवनंदन सहाय कृत 'तुलसीदास' पृष्ठ 496 से भी होता है। रामकथा अनु. 110।

6. वाल्मिकी रामायण सुन्दर कांड सर्ग 110 के अनुसार रावण के एक सिर व दो भुजाएं थी।

चिंताहरण चक्रवर्ती कृत 'इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली' भाग 1 पृष्ठ 779 और एस.एन. व्योम कृत 'जर्नल ऑफ दी इंडियन इंस्टिट्यूट बड़ौदा, भाग 4 पृष्ठ 1 से भी समर्थन होता है।—रामकथा अनु. 112।

7. रामकथा अनुच्छेद 112 के अनुसार रावण का दशग्रीव नाम पहले रूपक के रूप में प्रयुक्त हीगा। अर्थात जिस मनुष्य की ग्रीवा अन्य

साधारण मनुष्यों की ग्रीवा से दसगुनी बलवान हो, उसका नाम था—'दशग्रीव रावण' और बाद में दशग्रीव धारण करनेवाली प्राणी के अर्थ में लिया जाने लगा।

8. रामकथा अनुच्छेद 101 के अनुसार जैन रामकथा में राम की अपेक्षा राक्षस तथा बानर अधिक लोकप्रिय थे।

—ललईसिंह यादव

प्रत्येक आयटम का उत्तर निम्नांकित है

आयटम नं. 1

1. यह (रामायण) एक पवित्र पुस्तक नहीं है।
2. राम और सीता के चरित्र घृणित हैं। उनके चरित्र संसार के तुच्छतम मानव के एक चतुर्थांश के लिए भी अनुकरणीय नहीं है।

आयटम नं. 2

राम विश्वासघात, छल, कपट, लालच, कृतिमता; हत्या आमिषभोजी और निर्दोष पर तीर चलाने की साकार मूर्ति था।

आयटम नं. 3

इन बातों से पता चलता है, कि रामायण बेहूदगी, अनर्थकता और मूर्खता से परिपूर्ण है।

आयटम नं. 4

"राजा दशरथ ने अपनी रानियां अपने पुरोहितों को भेट कर दी इन तीनों पुरोहितों ने अपने पाशविक स्वभावानुसार तीनों रानियों के साथ न्याय करके उन्हें राजा दशरथ को वापस कर दिया और राजा दशरथ ने उस पर कोई आपत्ति नहीं की। (बाल काण्ड अध्याय 14) इसके बाद रानियां गर्भवती हो गई।"

1. वाल्मीकि रामायण बाल कांड सर्ग 8/2 और 23 से 25 के अनुसार राजा दशरथ ने सोचा—कि पुत्रोत्पत्ती के लिए अश्वमेध क्यों न करूं?" उन्होंने भवन में जाते ही अपनी प्रियतमा रानियों से कहा—"तुम लोग दीक्षा

लेने को तैयार हो जाओ—हम पुत्र प्राप्ति के लिए यज्ञ करेंगे।" महाराज के अति प्रिय वचन सुनकर रानियों के मुख इस तरह खिल उठे—जैसे हेमंत ऋतु के बाद कमल विकसित हो जाते हैं।

पुनः बाल कांड सर्ग 13/39 के अनुसार—जब सब लोग यज्ञशाला में पहुंच गए, तब अपनी रानियों के साथ महाराज यज्ञशाला में पहुंच गए, तब अपनी रानियों के साथ महाराज दशरथ ने शास्त्रविधि के अनुसार यज्ञ की दीक्षा ली।"

पुनः बालकाण्ड सर्ग 14/33 से 35 के अनुसार—"तब महारानी कौशल्या ने बड़े प्रसन्न मन से उस घोड़े की पूजा की और तीन बार तलवार चलाकार उस घोड़े का वध किया। तदनुसार धर्म की कामना से महारानी स्थिर चित्त होकर एक रात्रि इस घोड़े के पास ही रहीं। इसके बाद होता, 'अध्वर्यु' तथा उद्‌गाता' की आज्ञा से महाराज की अन्य महिषियों (क्षत्री जाति की रानियों) वावाताओं (वैश्य जाति की स्त्रियों और परिवृत्तियों) (शूद्र जाति की स्त्रियों) को घोड़े के अंग से स्पर्श कराया गया।

पुनः बाल कांड सर्ग 14/43 से 45 के अनुसार अपने कुल की उन्नति चाहने वाले महाराज दशरथ ने उस यज्ञ में "होता को पूर्व दिशा का, 'अध्वर्यू' को पश्चिम दिशा का, 'ब्रह्मा' को दक्षिण दिशा का और 'उद्‌गाता' को उत्तर दिशा और ऋत्विजो को सम्पूर्ण पृथ्वी का राज्य दे डाला।"

पुनः बाल कांड सर्ग 14/58-59 के अनुसार—जब महाराज दशरथ के वह अश्वमेध यज्ञ समाप्त हो गया और देवता अपना-अपना भाग लेकर अपने-अपने स्थान को चले गए, जब रानियों समेत राजा ने दीक्षा व्रत का उद्यापान कर दिया—तब वे अपनी सेना और वाहन के साथ अयोध्यापुरी लौटे।"

नोट : कामिल बुल्के द्वारा लिखित रामकथा अनुच्छेद 333 व 334 के अनुसार अश्वमेध यज्ञवाले सर्ग 14 और सर्ग 18 के बीच में सर्ग 15, 16 व 17 जिनमें अग्निदेव द्वारा पायस (खीर) का जिक्र है, प्रक्षिप्त है।

2. भट्टि काव्य व रामायण के अनुसार दशरथ के यज्ञ के वर्णन में किसी दिव्य पुरुष का वर्णन नहीं है।... रामकथा अनु. 358

भट्टि काव्य (सर्ग 1) के अनुसार दशरथ की रानियां यज्ञ के पश्चात पायस (खीर) के स्थान पर हुतोच्छिष्ट का कुछ अंश खाती हैं। उसके फलस्वरूप गर्भवती होती है।—रामकथा अनुच्छेद : 335

आयटम नं. 5

"सीता को प्राप्त करने के लिए सीता की माता ने किसी अपरिचित मनुष्य से संभोग किया था और उत्पन्न बच्चे को एक जंगल में फेंक दिया था। सीता ने स्वयं स्वीकार किया है—**"मेरे माता पिता के अज्ञात होने के कारण मेरा विवाह विलंब से हुआ है।"**

वाल्मिकी रामायण अयोध्या कांड 118/28 पे 17 के अनुसार सीता ने अनुसुइया से कहा—"एक बार अकाल पड़ने पर राजा जनक हल लेकर स्वयं खेत जोत रहे थे। इसी समय पृथ्वी फोड़ कर मैं निकल आई और आगे चल कर मैं उन महाराज की राजकन्या बनी। जब महाराज जनक मुट्ठी में लेकर बीज बो रहे थे—तब धूल में सनी मुझ कन्या को देखकर बड़े प्रेम से मुझे उठा लिया और कहा कि यह मेरी पुत्री है। जब मैं सयानी होकर पति के योग्य हो गई। पिताजी ने बहुत सोचा-विचारा—पर कोई योग्य वर न पा सके—क्योंकि मैं मानव योनि से उत्पन्न नहीं हुई थी।

कामिल बुल्के द्वारा लिखित रामकथा अनु. 406 में सीता की जन्मकथा के आठ रूप प्रचलित हैं।

1. जनकात्मजा, 2. भूमिजा, 3. रावणात्मजा, 4. पद्मजा, 5. रक्ता, 6. अग्निजा, 7. फलजा और 8. दशरात्मजा।

आयटम नं. 6

सभी प्रयत्न विफल हो चुकने के पश्चात दशरथ ने सुमन्त्र को आज्ञा दी—"कोषागार का सम्पूर्ण धन, खेतियों का अनाज, व्यापारी, प्रज्ञा व वेश्याएं राम के साथ वन को भिजवाने का प्रबंध करो।" अयोध्या सर्ग 36 अध्याय 1

वाल्मिकी रामायण अयोध्या कांड सर्ग 36/1 से 9 के अनुसार—महाराज दशरथ ने आंसू बहाते हुए लम्बी सांस ली और यह बात कही—"हे सूत (सुमन्त) सब रत्नों से भलीभांति सम्पन्न मेरी चतुरंगिणी सेना राम के पीछे-पीछे जाने के लिए तैयार कर दो। मिठी बातें करने में निपुण वेश्याएं और बड़े धनी वैश्य, राजकुमार का अनुसरण करनेवाली सेना की शोभा बढ़ावें।

...मेरा सारा धान्यकोष राम के साथ रहेगा।...महाबाहु भरत अयोध्या का पालन करेंगे, तो राम के लिए भी किसी वस्तु की कमी न करके उन्हें भी सब सुविधाएं मिलनी चाहिए।"

आयटम नं. 7

7. राम ने शोक प्रकट करते हुए अपनी माता से कहा था, कि ऐसा प्रबंध किया गया है कि, मुझे राज्य से हाथ धोना पड़ेगा। राज्यवंशीय भोगविलास व स्वादिष्ट गोश्त की थालियां छोड़कर मुझे वनवास जाना पड़ेगा और वन के कंदमूल व फल खाने पड़ेंगे। (अयोध्या काण्ड अध्याय 2)
8. राम ने भारी हृदय से अपनी माता व स्त्री से कहा था कि जो गद्दी मुझे मिलनी चाहिए थी, वह मेरे हाथों से निकल गई और मेरे वनवास जाने के लिए प्रबंध किया गया है। (अयोध्या काण्ड 20, 26, 14)
9. राम ने लक्ष्मण के पास जाकर पिता दशरथ को दोषी तथा दंडनीय बताते हुए कहा—"क्या कोई ऐसा भी मूर्ख होगा जो अपने उस पुत्र को वनवास दे, जो सदैव उसकी आज्ञाओं का पालन करता रहा? (अयोध्या काण्ड अध्याय 53)

वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 20/28, 29 के अनुसार राम ने अपने माता पिता से कहा—"मैं तो दंडकारण्य जाने को तैयार हूं। फिर इस आसन से क्या सरोकार, अब तो मेरे लिए विष्टर (मुनियों वाले आसन) का समय उपस्थित हुआ है। अब मैं सभी सांसारिक भागों का त्याग कर चौदह वर्ष तक कंदमूल-फल खाते हुए मुनियों के साथ रहकर मुनियों के समान जीवन बिताऊंगा।"

स्पष्टीकरण—सांसारिक भोग का अर्थ है, राजवंशीय भोग विलास व स्वादिष्ट गोष्त की थालियां।

वाल्मिकी रामायण उत्तर काण्ड सर्ग 42/17 से 22 के अनुसार राजधानी अयोध्या की उस विशाल अशोक वाटिका में जाकर रामचन्द्र उत्तर और पुष्प बिछे आसन पर बैठे। उस पर अच्छे बिछौने बिछे थे। रामचन्द्र उसी तरह सीता को शुद्ध मद्य (शराब) पिलाई जिस तरह इन्द्र शची को पिलाते हैं। तभी रामचन्द्र के सेवक भोजन के लिए अनेक तरह के मांस और मिठे फल ले आए। नाचने और गानेवाले वहां आकर नाचने लगे। उदार स्वभाववाली

सुन्दरी स्त्रियों ने आकर मद्य (शराब) पिया और नाचने लगी। सबको आनन्द देनेवाले रामचन्द्र ने उन स्त्रियों को सुख दिया अर्थात रमण किया। वाल्मिकी रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 26/21 से 23 के अनुसार राम ने सीता से कहा—"आज जब महाराज दशरथ मेरा अभिषेक करने को उद्यत हुए, तब कैकेई ने अपने वर मांग लिए और धर्म के समक्ष महाराज को परास्त होना पड़ा। तदनुसार मुझे चौदह वर्ष दंडक वन में रहना होगा। पिताजी ने भरत को युवराज बना लिया है।" वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 53/10 के अनुसार राम ने कहा—"हे लक्ष्मण! संसार में ऐसा अपढ़ (मूर्ख) मनुष्य भी भला कौन होगा—जो अपनी स्त्री के लिए मेरे जैसे आज्ञाकारी पुत्र को त्याग देगा?"

आयटम नं. 8

10. ...राम ने सीता के साथ केवल रानी बनाने के लिए विवाह किया था। मन्मथनाथ दातार लिखते हैं—"आनंद लेने के लिए राम की स्त्रियां नौकरों की स्त्रियों के साथ किया करती थी। इस प्रकार कैकेई की बहूत तथा भरत की स्त्री दुःख में डुबी रहती थी।" राम की स्त्रियों का वर्णन रामायण में अनेक स्थलों पर आया है।

1. विमलसूचिकृत 'पउमचरिय' के अनुसार सीता हरण एवं खोज (पर्व 43-45) के अनुसार सुग्रीव राम के प्रति अपनी तेरह कन्याओं को समर्पित करते है। —रामकथा अनु. 60

इसी ग्रंथ के उत्तर चरित (पर्व 85-19) के अनुसार लक्ष्मण की सोलह हजार पत्नियां, जिनमें विशल्या आदि आठ पटरानियां हैं तथा राम की आठ हजार पत्नियां बताई जाती हैं। जिनमें से सीता, प्रभावती रतिनिभा तथा श्रीदामा प्रधान है। —रामकथा अनु. 60

2. गुणभद्र कृत 'उत्तर पुराण' के अनुसार लक्ष्मण की सोलह हजार और राम की आठ हजार रानियां बनाई जाती है। —रामकथा अनु. 63

3. भुषुण्डी रामायण में राम की दो पटरानियों के अतिरिक्त सहस्त्रों पत्नियां का उल्लेख है। बृहत्कोशल खण्ड में भी राम के बहुत से विवाहों का वर्णन किया गया है। खोतानी रामायण में सीता राम तथा लक्ष्मण दोनों से विवाह करती है। —रामकथा अनु. 404

4. कामिल बुल्के द्वारा लिखित रामकथा अनु. 404 के अनुसार वाल्मिकी की रचना में यत्र तत्र ऐसी युक्तियां मिल जाती हैं, जो परवर्ती रामकथाओं के मर्यादावाद को आघात पहुंचाती हैं। कैकेई को उभाड़ती हुई मंथरा कहती है—राम के अभिषेक के बाद उनकी स्त्रियां फूली नहीं समाएंगी।"

'दृष्टा खलु भविष्यन्ति रामस्य परमाः।' अयोध्या कांड सर्ग 8/12 तथा समुद्र तट पर प्रायोपवेशन के वर्णन में अनेकधा परम नारियों की भुजाओं से स्पष्ट राम की बांह का उल्लेख हैं—

भुजेः परमानारीणामभिमृष्टनेकधा।' युद्धकाण्ड सर्ग 21/3

आयटम नं. 9

12. राम कैकेई के प्रति स्वाभाविक एवं सच्चा होने का बहाना करता रहा और अन्त में उसने कैकेई पर दुष्ट स्त्री होने का आरोप लगाया। —अयोध्या काण्ड अध्याय 31, 53
13. यद्यपि कैकेई दुष्टतापूर्वक तथा नीच विचारों से रहित थी। तथापि राम ने उस पर दोषारोपण किया, कि "वह मेरी माता के साथ नीचता का व्यवहार कर सकती हैं।" अयोध्या काण्ड अध्याय 31, 53
14. राम ने कहा कि कैकेई मेरे बाप को मरवा सकती है। इस प्रकार उसने कैकेई पर दोषारोपण किया। (अयोध्या काण्ड अध्याय 53)

1. वाल्मिकी रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 31/13 व 17 के अनुसार राम ने लक्ष्मण से कहा—"राजा अश्वपति की पुत्री कैकेई राज्य पाकर अपनी दुखिया सौतों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करेंगी। 13 हम लोगों काबिछोह हो जाने पर माता कौशल्या को बड़ा कष्ट होगा।
2. वाल्मिकी रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 53/6, 7, 14 के अनुसार राम ने लक्ष्मण से कहा—"कामना पूर्ण हो जाने पर कैकेई बहुत प्रसन्न होगी। मुझे यही चिंता है कि, भरत को देखकर पूरा राज्य हस्तगत करने के लिए कहीं महाराज दशरथ के प्राण न ले ले। 6, 7। हे सौम्य! मेरा तो ख्याल है कि, महाराज दशरथ के मरण, मेरे बनवास और भरत को राजा बनाने के लिए ही कैकेई का जन्म हुआ है। 14। कैकेई खोटे कर्मवाली स्त्री है, इसलिए वह हमारी व तुम्हारी मां को विष भी दे सकती है।

आयटम नं. 10

16. अब भरत अपनी स्त्री सहित बिना किसी विरोध के अयोध्या पर शासन कर रहा होगा। इस बात से उस (राम) की राजगद्दी और भरत के प्रति ईर्ष्या के स्वाभाविक तथा निराधार अभिलाषा प्रकट होती है। –(अयोध्या काण्ड अध्याय 53)
17. वाल्मिकी रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 53/1-12 के अनुसार राम ने लक्ष्मण से कहा–"सौभाग्यवती स्त्री मांडवी का पति और रानी कैकेई का पुत्र भरत ही सुखी है, क्योंकि वह सम्राट की तरह कोसल प्रदेश को भोगेगा। पिताजी वृद्ध है और मैं बन को चला आया हूं। अतएव राज्य का सारा सुख अकेले भरत को मिलेगा।"

स्पष्टीकरण : "राज्य का सारा सुख अकेले भरत को मिलेगा" तात्पर्य है भरत के प्रति ईर्ष्या की स्वाभाविक तथा निराधार अभिलाषा।

आयटम नं. 11

18. उस (राम) ने अपने पिता को मूर्ख और पागल कहा था। –अयोध्या काण्ड अध्याय 53)
1. अवलोकन कीजिए वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 53/8 से 17 राम ने लक्ष्मण से कहा–"कामी महाराज दशरथ कैकेई के वंश में हैं। वे वृद्ध है ही और मेरे न रहने से अनाथ भी है। वे बेचारे क्या करेंगे। अपने घर आए हुए इस महान दुःख और महाराज का बुद्धिश्रम (पागलपन) देखकर मुझे लगता है, कि अर्थ और धर्म की अपेक्षा काम ही श्रेष्ठ है। लक्ष्मण ऐसा अपढ़ (मूर्ख मनुष्य भी भला कौन होगा जो स्त्री कैकेई) के लिए मेरे जैसे आज्ञाकारी पुत्र को त्याग देगा?

आयटम नं. 12

32. राम ने बहुत सी स्त्रियों के कान, नाक व स्तन इत्यादि काट कर उन्हें कुरूप बना दिया था और उन्हें बहुत यातनाएं दी–सूर्पनखा और अयोमुखी।
33. राम ने बहुत सी स्त्रियों को मार डाला था–ताड़का, थदगाई।
1. वालमीकि रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 18/20-21 के अनुसार राम ने

लक्ष्मण से कहा 'इस सूर्पनखा राक्षसी कोविरूप कर दो। राम के ऐसा करने पर महाबली लक्ष्मण क्रुद्ध हो गए और उन्होंने अपनी तलवार से उसके नाक और कान काट लिए।"

2. अरण्य काण्ड सर्ग 69. 16-17 के अनुसार अयोमुखी ने लक्ष्मण से कहा–"मेरे साथ रमण करते हुए लंबी आयु बिताओ।" उसके ऐसे वचन सुनकर शत्रु का नाश करनेवाले क्रुद्ध लक्ष्मण ने अपनी तलवार निकाली और उसके नाक, कान और स्तन काट दिए।
3. बाल काण्ड सर्ग 17-18 व 26 के अनुसार विश्वामित्र की आज्ञानुसार राम ने बाण से ताड़का की दोनों भुजाएं और लक्ष्मण ने नाक व कान काट डाले। 17-18 तत्पश्चात राम ने बाण द्वारा उसे मार डाला।

3. अ ब्रह्मचक्र के अनुसार सूर्पनखा अपनी दो पुत्रियों के साथ लंका और किष्किन्धा की सीमाओं की रखवाली करती थी।

4. सेरीराम के अनुसार राम ने जगीन (ताडका) के अतिरिक्त गंडे (गोंड) नामक आदिवासी जाति के राजा और सूर नागिन (नाग जाति की रानी) का वध किया। –रामकथा अनुच्छेद 389
5. 'मउमचरियं' (43-48) के अनुसार लक्ष्मण चंद्रनखा (सूर्पनखा) का रूप देखकर मोहित हुए थे और उन्होंने किसी बहाने से राम को छोड़कर वन में उसकी खोज की थी–किन्तु उसे न पाकर लौटे। –रामकथा अनुच्छेद 433
6. सरलदास कृत महाभारत (वन पर्व) के अनुसार सीतासुख पाने की इच्छा से चाहती है कि लक्ष्मण सूर्पनखा से विवाह करें और राम भी इसके लिए अनुरोध करते हैं–किन्तु लक्ष्मण अस्वीकार करते है। बाद में लक्ष्मण कान व नाक काट लेते हैं। –रामकथा अनुच्छेद 463
7. भागवत पुराण (9,10) गरुड़, पुराण (अध्याय 143) पद्म पुराण (पाताल खण्ड अध्याय 36 और उत्तर खण्ड अध्याय 269) व देवी भागवत पुराण (3, 28) के अनुसार राम ने सूर्पनखा के नाक, कान काट कर विरूपण किया। –रामकथा अनु. 464
8. नरसिंह पुराण (अध्याय 49) भावार्थ रामायण (3-8) तथा पाश्चात्य वृत्तान्त नं. 3 (अध्याय 4) के अनुसार राम के पत्र के आदेशानुसार लक्ष्मण ने सूर्पनखा की नाक कान काट ली। –रामकथा अनु 464

9. सेरीराम के अनुसार राम के पत्र के आदेशानुसार लक्ष्मण ने सूर्पनखा की नाक कान काट लिए।–रामकथा अनु 646
10. कम्ब रामायण (3, 5) आनन्द रामायण (1,7,55) मलयाली अध्यात्म रामायण और पाश्चात्य वृत्तांत नं. 1 व 20 अनुसार लक्ष्मण ने स्तन भी काट लिए। –रामकथा अनु. 464
11. पाश्चात्य वृत्तांत नं. 1 (पृष्ठ 80) के अनुसार लक्ष्मण ने सूर्पनखा के नाक व कान के अतिरिक्त स्तन व बाल भी काट लिए। स्तन के रक्त से जो कि उत्पन्न हुई। –रामकथा अनु. 464

नोट : "जोंके उत्पन्न हुई का तात्पर्य है कि स्तन का घाव सड़ गया। पीव अर्थात मवाद पड़ गया और उसमें कीड़े पड़ गए। जोंके का मतलब है–कीड़ा।
12. रामकियेन (अध्याय 1) के अनुसार लक्ष्मण ने सूर्पनखा के नाक, कान, हाथ और पैर भी काट लिए। रामकथा अनुच्छेद 464

आयटम नं. 13

35. राम हमेशा अनुचित विषय भोग में तल्लीन रहता था।
36. राम ने अनावश्यक रूप से कई जीवों को मारा व उन्हें खा गया
1. प्रथम पैराग्राफ के लिए अवलोकन कीजिए–आयटम नं. 7 का द्वितीय पैराग्राफ। वाल्मिकी रामायण उत्तर काण्ड सर्ग 42/17 से 22 तक।
2. द्वितीय पैराग्राफ के लिए अवलोकन कीजिए–वाल्मिकी रामायण काबाल काण्ड सर्ग 18, 30।
3. लड़कपन में जब घोड़े पर सवार होकर मृगया। (हिरण आदि का शिकार) हेतु गए–तब लक्ष्मण हाथ में धनुष लिए उनकी रक्षा करते हुए पीछे चलते थे। बाल काण्ड 18/30
4. अयोध्याकाण्ड सर्ग 55/33 के अनुसार वनवास के समय राम व लक्ष्मण बहुत से पवित्र पशुओं का वध कर उसी तटवर्ती वन में विचरने लगे।
5. अयोध्या काण्ड सर्ग 56/21 से 325 के अनुसार चित्रकुट की नवनिर्मित पर्णशाला गृह प्रवेश के समय राम ने लक्ष्मण से कहा–"अब मृग मांस

लेकर इस पर्णशाला में वास्तुशान्ति करनी होगी। तुम शीघ्र एक मृग मार लाओ। हमें धर्म का ख्याल रखते हुए शास्त्र की आज्ञा का पालन करना चाहिए।" तत्काल भ्राता की आज्ञा का पालन लक्ष्मण ने किया। तब राम ने कहा–"लक्ष्मण, तुम मृग का मांस पकाओ। इससे हम वास्तु-देवता का पूजन करेंगे, जाओ जल्दी करो। आज सौम्य मुहूर्त और ध्रुवसंज्ञक दिन है।" तदनुसार लक्ष्मण काला मृग मार ले आए और उसे धधकती आग में डाल दिया। जब लक्ष्मण ने समझा लिया, कि वह सर्वांग पक गया है और उसमें से रूधिर नहीं निकलता है–तब उन्होंने पुरुष-पुंगव राम से कहा–हे देव शदृश्य राम! यह मृग (हिरण) अपने अड़ग-उपांगों समेत पक गया है। आप इससे वास्तु देव की पूजा करें। आप इस कार्य में पूर्ण निपुण हैं...।"

पूजा करके राम ने पर्णशाला में प्रवेश किया उस समय उनका हृदय बहुत प्रसन्न था। भीतर जाकर उन्होंने बलिवैश्वदेव कर्म किया। रूद्र और विष्णु को बलि अर्पण किया और नए घर के दोषों को दूर करनेवाला भौगोलिक कृत्य उन्होंने पूर्ण किया। तदनन्तर राम ने विधिवत मन्त्र जप करके नदी में स्नान किया और दोष दूर करनेवाली उत्तम बलि दी। उसी आश्रम में उन्होंने उचित स्थानों पर वेदी (बलि स्थान) चैत्य (गणपति स्थान) और आयतन (विष्णु पूजन) का स्थान नियत किया। वन्य माला, फल, मूल, पके मांस, जल, वेदोक्त मंत्री कुशाओं और समिधाओं द्वारा सभी देवताओं का सीता के साथ राम ने पूजन करके सब को तृप्त किया। इसके बाद उस शुर्भ पर्णशाला में प्रविष्ट हुए।
6. अयोध्या काण्ड सर्ग 16/1-2 के अनुसार भरत के आगमन के पहले चित्रकूट में राम सीता के साथ एक विशाल शिला पर बैठे। मांस द्वारा उन्हें प्रसन्न करते हुए कहने लगे–"यह मांस बड़ा पवित्र तथा स्वादिष्ट है और आंच पर भली भांति पकाया गया है।"
7. अरण्य काण्ड सर्ग 44/28 के अनुसार "पंचवटी के समीप जंगल के कनक मृग (हिरण) को मारा और उसका मांस लेकर शीघ्रता के साथ कदम बढ़ाते हुए जन स्थान अपने आश्रम पंचवटी की पर्णशाला की ओर चले।"

8. अरण्य काण्ड सर्ग 47/22-23 के अनुसार पंचवटी की पर्णशाला में सीता ने रावण से कहा–"आप चाहे तो थोड़ी देर विश्राम कर सकते हैं। थोड़ी देर में पतिदेव बहुत से बन फल तथा रुरु (बढ़िया किस्म वाला हिरण) गोह और वराह (सुअर) मारकर पुष्कल (बहुत सा) मांस लिए आ रहे होंगे।"
9. अरण्य काण्ड सर्ग 68/32-33 के अनुसार जटायु का दाह संस्कार करने के बाद–"बलवान राम भाई लक्ष्मण के साथबन गए और मोटे मृगों को मारकर ले आए। फिर भूमि में हरी घास बिछाई और उस हिरण को मांस का गोल पिंड बनाकर यशस्वी राम ने गिद्धराज (जटायू) को पिंड दान दिया।"
10. अरण्य काण्ड सर्ग 73/12 से 16 के अनुसार कबन्ध ने राम से कहा–"उस सरोवर (पम्पा सरोवर) में हंस, मेंढ़क क्रौच तथा कुरर आदि पक्षी मिठी बोलियां बोलते रहते हैं। वे कभी किसी मनुष्य को देखकर डरते नहीं–क्योंकि उन्हें मालूम है कि कोई किसी का वध भी करता है। घृत-पिंड के समान उन पक्षियों को आप खाईएगा। उसमें रहनेवाले रोहित (एक किस्म की मछली–रोहू) आदि मछलियों को बाणों से मारकर उनकी त्वचा तथा पखने निकालकर आग में भूनकर तथा कांटे निकालकर कर आपके भ्राता लक्ष्मण आपकों देंगे। आप उन्हें खूब खाईएगा।"

आयटम नं. 14

वह (सीता) राम की अपेक्षा आयु में बड़ी है। उसका जन्म सन्देह युक्त व आपत्ति युक्त था। (बाल काण्ड अध्याय 66)

1. वाल्मिकी रामायण बाल काण्ड सर्ग 66/14-15 के अनुसार राजा जनक ने विश्वामित्र से कहा–"एक बार मैं खेत शोधन करता हुआ, हल जोत रहा था। उस समय फल के नीचे की भूमि से सीता नाम की पुत्री निकल आई। उसे मैंने अपनी कन्या मान ली और वह बढ़ने लगी है। हे भगवान! वह सयानी हो गई है और मैंने अपनी अयोनिजा कन्या का शुल्क केवल पराक्रम रखा है।
2. तुलसीदास कृत रामचरित मानस बाल काण्ड के अनुसार–

श्याम और मृद वयस किशोरा। लोचन सुखद विश्वचित चोरा।

स्पष्टीकरण : वर्णाश्रमानुसार 25 साल तक ब्रह्मचारी तत्पश्चात छब्बीसवीं साल से युवा गृहस्थचारी की आयु सीमा पूर्व काल में थी। सयानी सीता की आयु यदि बीस साल मानी जावे तो किशोर अवस्थावाले राम की आयु सीता की अपेक्षा बहुत ही कम हुई।

शेष के लिए अवलोकन कीजिए आयटम नं. 5 और 18

आयटम नं. 15

6. सीता अपने पति राम को सिडी तथा मूर्ख कहा करती थी।
7. सीता राम से कहती थी कि तुम मानवीय गुणों से रहित मनुष्य हो।
8. तुम आकर्षक-शक्ति तथा हाव-भाव से रहित हो।
9. तुम (राम) उस स्त्री व्यापारी से अच्छे नहीं हो जो अपनी स्त्री को किराए पर उठाकर जीविका चलाना चाहता है। तुम मुझसे लाभ उठाना चाहते हो।
10. वाल्मिकी रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 30/3-8-9 के अनुसार सीता ने वनवास के पहिले राम से कहा–"क्या मेरे पिता मिथिलेश महाराज जनक ने देखने में पुरुष–किन्तु वस्तुतः स्त्री-पुरुष राम को अपना जामात बना लिया था। यदि वे ऐसा समझते, तो आपको कदापि अपनी कन्या न देते। आप अपनी चिरसंगिनी युवती एवं सती स्त्री औरों को सौंपना चाहते है। हे राम! आप मुझे जिस भरत की वशवर्तिनी होकर रहने की सलाह दे रहे है और जिसके कारण आपका अभिषेक रुक गया है। हे नाथ! आप ही उनके आज्ञाकारी बने, मैं नहीं बनूंगी।8।

आयटम नं. 16

18. वनवास जाते समय नदी (गंगा) पार करते हुए सीता ने गंगा नदी से प्रार्थना की–"हे गंगा, यदि मैं सकुशल अयोध्या लौट आऊंगी–तो मैं तुम्हें हजारों गाएं और मदिरा (शराब) से परिपूर्ण वर्तन चढ़ाऊंगी।"–(अयोध्या काण्ड अध्याय 52)
1. वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 52/82 से 90 के अनुसार

वन गमन के समय जब नाव गंगा जी से कहा—हे देवी (गंगा) बुद्धिमान महाराज दशरथ के पुत्र राम अपने पिता की आज्ञापालन करने के लिए बन जा रहे हैं। माता तुम उनकी रक्षा करना। चौदह वर्ष बन में बिताकर वे मेरे और लक्ष्मण के साथ लौटेंगे। हे सुभगे! उस समय यदि मैं सकुशल लौटी और मेरी कामना पूर्ण हो गई—तो मैं प्रसन्न मन से तुम्हारी पूजा करूंगी। हे त्रिपथगे! तुम्हारा प्रभाव तीन लोक में फैला हुआ है। यहां तुम समुद्र देव की पत्नी बनकर दिखाई देती हो। हे देवि गंगा! मैं प्रणाम-पूर्वक तुम्हारी विनती करती हूं। यदि नर श्रेष्ठ राम सकुशल लौटकर अयोध्या का राज्य पा लेंगे तो मैं आपको प्रसन्न करने के लिए एक लाख गौ तथा अन्न ब्राह्मणों को दान दूंगी। हे देवि (गंगा) मैं अयोध्या लौट कर हजार घड़ा मदिरा (शराब) तथा मांसयुक्त भात अर्पण करके तुम्हारी पूजा करूंगी। तुम्हारे तटपर जितने देवता, तीर्थ और देवस्थान हैं उन सब का पूजन करूंगी।"

2. वाल्मिकी रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 55/19 से 21 के अनुसार—"यमुना के बीच पहुंच कर सीता ने यमुना को प्रणाम किया और मनौती मानकर कहा—"हे देवि यमुने! आपका कल्याण हो। जैसे मैं तुम्हें पार कर रही हूं—उसी तरह यदि मेरे पतिदेव अपना व्रत पार करके लौटे तो सौ घड़े मदिरा (शराब) चढ़ाकर आपका पूजन करूंगी।" ऐसा कहा और हाथ जोड़कर उन्होंने आशीष मागी।

आयटम नं. 17

20. जब कभी राम सीता को न देखकर उदास होता था—तो लक्ष्मण कहा करता था—"तुम एक साधारण स्त्री के लिए क्यों परेशान हो।" (अरण्य काण्ड अ. 66)

1. वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 66/14 के अनुसार सीताहरण के पश्चात लक्ष्मण ने राम से कहा—"हे वीर! सीता मर गई हो या उसका अपहरण हो गया हो—फिर भी आपको संसार के पामर (नीच) प्राणियों के समान विषाद नहीं करना चाहिए।"

आयटम नं. 18

24. "क्या सीता ने उसे फटकारा? नहीं, बिल्कुल नहीं। रावण की इस समय सम्मान-पूर्ण आगवानी की गई। स्वागत किया गया। बिना अपनी अवस्था अधिक प्रकट किए उसने रावण के समक्ष अपने सुन्दर यौवन की प्रशंसा की।" (अरण्य काण्ड अध्याय 46, 47)

1. वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 46/32 से 35 के अनुसार सीताहरण के समय सीता ने रावण की आवश्यक सभी सामग्रियों से पूजा की। तदनुसार उसे बैठने के लिए आसन दिया। पैर धोने के लिए जल दिया और तत्पश्चात भोजन करने की प्रार्थना की।
   सीता बोली—"हे ब्राह्मण देवता। यह बैठने के लिए आसन है। आप निश्चित रूप से बैठकर भोजन करें।"
2. वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 47/4 व 11 के अनुसार सीताहरण के समय सीता ने रावण से कहा—"बारह वर्ष तक मैं इक्ष्वाकु वंशियों के घर में रही। 4। तेरे तेजस्वी पति राम की उम्र 25 वर्ष की है और मेरी अठारह साल की है। 11।"
3. वाल्मिकी रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 118/24 के अनुसार सीता ने अनुसूईया से कहा—"जब मैं सयानी होकर पति के योग्य हो गई तो मेरे पति (जनक) को ऐसी चिंता हुई—जैसे किसी मनुष्य का सर्वस्व लुट जाय और व निर्धन होकर सोचने लगे।"
4. 'अग्निवंश' रामायण के अनुसार—"विवाह के समय राम सीता की अवस्था क्रमानुसार 15 तथा 6 वर्ष की थी। वनवास के समय 27 और 18 की थी। राज्यभिषेक के समय 42, 43 वर्ष की थी।" —रामकथा अनुच्छेद 179
5. वाल्मिकी रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 20/45 में राम बन गमन के पूर्व माता कौशल्या ने राम से कहा, "हे राघव! तुम्हारा जन्म हुए सत्रह वर्ष बीत गए।"
6. तुलसीदास कृम रामचरित मानस बाल काण्ड के अनुसार—श्याम गौर मृदु वयस किशोरा। लोचन सुखद विश्वचित चोरा।

7. रामलिगमृत सर्ग 5/1-63 रामारण्यगमनम् के अनुसार–विवाह के समय राम सीता की आयु क्रमशः 15 व 6 वर्ष की थी। परन्तु चौथे अध्याय में सीता की आयु 16 वर्ष होना लिखा है। –रामकथा अनुच्छेद 222

स्पष्टीकरण : अनसुइया के समक्ष सीता के कथनानुसार सयाने का तात्पर्य पुरुष के लिए 25 वर्ष अैर स्त्री के लिए 20 वर्ष में 12 साल अयोध्या में रहीं अर्थात बनवास के समय सीताहरण हुआ 32 वर्ष में 13 जोड़ने पर सीताहरण के समय सीता की आयु 45 वर्ष की थी। उसने रावण को 18 वर्ष बताई। अतएव स्त्री का कम आयु बताना ही अपने यौवन की स्वयं-प्रशंसा करना माना जाता है।

आयटम नं. 19

26. जब रावण उसे अपनी गोद में लिए जा रहा था–तब वह अर्द्ध नग्न थी। अर्थात् वह स्वयं अपने स्तन खोले हुए थी। (अरण्य काण्ड अध्याय 54)

1. वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 49/17 के अनुसार "रावण ने बाएं हाथ से कमल नयनी सीता की गर्दन और दाहिने हाथ से दोनों जांघे पकड़ी।"
2. वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 52/10 व 15 के अनुसार जटायु हरण के पश्चात–"रावण ने उन (सीता) के केश पकड़ लिए। 10।"
3. वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 54/2 व 3 के अनुसार "विशाल नयनों वाली सीता ने सुवर्ण सदृश्य चमकता हुआ दुपट्टा उतारा, उसके एक छोर में अपने कुछ मांगलिक आभूषण बांधे और उसे इस आशा से उन बंदरों के बीच (जो ऋष्यमूक पर्वत पर बैठे थे) गिरा दिया कि ये बंदर सीता हरण की सूचना राम को दे देंगे।

स्पष्टीकरण : प्रथम पैराग्राप की क्रिया द्वारा किसी स्त्री को उठाया जाए–तो वह अर्द्ध नग्न की सीमा ही कही जाएगी और अन्तिम पैराग्राफ की क्रिया द्वारा यदि दुपट्टा फेंका जाय तो वह स्तन खोलने की सीमा कही जाएगी।

आयटम नं. 20

28. रावण ने अपने यहां सीता से कहा–"आओ हम देनों मिलकर आनंद (संभोग) करें। तब सीता अर्द्धोन्मिलित आंखों युक्त सिसकियां भरती रहीं।" (अरण्य काण्ड अ. 55)

29. रावण ने कहा–"हे सीता, हमारा-तुम्हारा मिलन ईश्वर कृत है। ऋषियों को भी भाया है। (अरण्य काण्ड अ. 55)

30. सीता ने कहा–"कि तुम मेरे अंगों का आलिंगन करने के लिए स्वतंत्र हो; मुझे उसकी रक्षा करने की आवश्यकता नहीं। मुझे इस बात का पश्चाताप नहीं कि, मैंने भूल की है। (अरण्य काण्ड अध्याय 56) इससे इस परिणाम पर पहुंचा जा सकता है, कि सीता ने रावण को अपने साथ दुर्व्यवहार करने की अपनी (स्पष्ट) अनुमती दी।

1. वाल्मिकी रामायण अरण्यकाण्ड सर्ग 56/32 से 37 अनुसार रावण ऐसी बातें कह कर सीता को फुसला रहा था और सीता आंचल से मुंह ढांककर आंसू बहाती हुई धीरे-धीरे रो रही थी।... हे सीते! अब धर्म नष्ट हो जाने की लज्जा करना बेकार है। हे देवी! तुमसे जो मैं प्रेम की प्रार्थना कर रहा हूं। वह ऋषि समम्मत है। मैं तुम्हारे कोमल चरणों को अपने मस्तक पर रखकर विनती करता हूं, कि मेरी बात मान लो। तुम मुझे अपना दास समझ कर शीघ्र प्रसन्न हो जाओ। कामदेव के बाणों से पीड़ित रावण ने ये बातें कहीं। फिर वह बोला, रावण किसी स्त्री के पैर पर मस्तक रखकर प्रणाम नहीं करता। सीता से ऐसा कहकर यम के वशीभूत रावण ने अपने मन में यह समझ लिया कि सीता ने मेरी बात मान ली है।
2. वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 56/21 के अनुसार सीता ने रावण से कहा कि, "इस निश्चेष्ट (बिना इच्छावाले) शरीर को तुम चाहे बांधो या मार ही डालो।"
3. वाल्मिकी रामायण युद्ध काण्ड सर्ग 111/8 से 10 आयटम नं 21 का पुनः अवलोकन कीजिए।

स्पष्टीकरण : मुंह को ढांक कर आंसू बहाते हुए रोने की क्रिया को ही अर्द्धोन्मिलित सिसकियां भरना कहा जाएगा।

आयटम नं. 21

32. सीता ने राम को उत्तर दिया–"तुम सत्य कहते हो, किन्तु तुम ही बताओ कि मैं क्या कर सकती थी। मैं केवल अबला स्त्री हूं। मेरा शरीर उसके अधिकार में था। मैंने स्वेच्छा से कोई भूल नहीं की थी। तथापि मैं मन से तुम्हारे निकट रही हूं। ईश्वर की ऐसी ही इच्छा थी। (युद्ध काण्ड अध्याय 119)

1. वाल्मिकी रामायण युद्ध काण्ड सर्ग 119/8 से 10 के अनुसार सीता ने राम को उत्तर दिया–"जिस समय रावण ने मेरे शरीर को छुआ था मैं विवश थी। उसने मेरी इच्छा से मुझे नहीं छुआ। दैव की ऐसी ही इच्छा थी। मैं निर्दोष हूं। जिस हृदय पर मेरा अधिकार है, वह आज भी आंप में अनुरक्त है। शरीर पर मेरा कोई भी अधिकार नहीं था। मैं निर्बल स्त्री होने के कारण उसकी रक्षा नहीं कर सकती थी। इसलिए मैं निर्दोष हूं।

आयटम नं. 22

34. जंगल में सीता ने दो पुत्रों को जन्म दिया। (उत्तर काण्ड अध्याय 66)
35. अन्त में जब राम ने इस संबंध में सीता से शपथ खाने को कहा तो अस्वीकार करते हुए वह मर गई। (उत्तर काण्ड अध्याय 17)

1. वाल्मिकी रामायण उत्तर काण्ड सर्ग 66/1 के अनुसार रात को शत्रुघ्न वहां (वाल्मिकी के आश्रम में) ठहरे थे, इसी रात में सीता ने दो पुत्रों को जन्म दिया।
2. वाल्मिकी रामायण उत्तर काण्ड सर्ग 17/18 के अनुसार जिस समय सीता की शपथ ली जा रही थी–उसी समय एक बहुत बड़ा अद्‌भुत दृश्य उपस्थित हो गया। एक दिव्य सिंहासन पृथ्वी फोड़कर निकला। वह सिंहासन नागों के सिर पर रखा था। उन नागों का दिव्य रूप था और उनके शरीर पर दिव्य रत्न विराजमान थे। उस सिंहासन पर पृथ्वी देवी बैठी थी। उन्होंने दोनों हाथों से सीता को पकड़कर सिंहासन पर बैठा लिया। सीता के बैठते ही व सिंहासन पृथ्वी में घुसने लगा।

3. तिब्बती रामायण, कथा-सरित्सागर (9,1,83-93) कश्मीरी रामायण, मसिही रामायण, गोविन्द रामायण, पाश्चात्य वृत्तांत नं. 7, 8, 17 आनन्द रामायण (5,4, 62-68) रामकियेन (अध्याय 41) रामजातक ब्रह्मवक्र, रामकेर्ति, सेरीराम तथा हियाकत महाराज रावण के अनुसार वाल्मिकी ने कुश की सृष्टि की तथा सिंहली रामकथा के अनुसार वाल्मीकि ने कुश के अतिरिक्त एक और दूसरे पुत्र की सृष्टि की। –रामकथा अनु. 743-744
उपरोक्त ग्रंथों के अनुसार सीता के केवल एक ही पुत्र पहले 'लव' पैदा हुआ था।

आयटम नं. 23

36. सीता स्वयं उस (रावण) पर मोहित हो गई थी। सीता ने रावण कि विषयेच्छा का स्वयं अनुसरण किया था। रावण पर मोहित न होने की दशा में वह सीता को छूत तक नहीं सकता था क्योंकि रावण को श्राप दिया गया था–"वह किसी स्त्री को उसकी इच्छा के विरुद्ध स्पर्श करेगा तो उसका सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।

1. वाल्मिकी रामायण युद्ध काण्ड सर्ग 13/13-14 के अनुसार रावण ने महापाश्व्र से कहा–जब मैंने 'पुञ्जिकस्थला' नामक अप्सरा के साथ शक्ति-पूर्वक संभोग किया, तब 'ब्रह्मा' ने क्रुद्ध होकर कहा–"हे रावण! आज से तू यदि किसी स्त्री के साथ इस तरह जबरदस्ती भोग (संभोग) करेगा तो तेरे सिर के टुकड़े हो जाएंगे।"
2. वाल्मिकी रामायण उत्तर काण्ड सर्ग 26/55-56 के अनुसार 'कुबेर' के पुत्र 'नल कुबेर' की स्त्री के साथ जब रावण ने शक्तिपूर्वक संभोग किया तब नल कुबेर ने रावण को श्राप दिया "अब वह (रावण) किसी स्त्री के साथ बल-पूर्वक भोग (संभोग) न कर सकेगा, यदि ऐसा करेगा, तो उसके सिर के सौ टुकड़े हो जाएंगे।"

आयटम नं. 24

37. राम अपनी साली के साथ सीता के कमरे में गया। राम ने सीता को अपने विजन पर रावण का चित्र बनाए हुए अपने सीने पर चिपकाए

हुए सोती हुई पाया। यह बात श्रीमती चंद्रावती द्वारा लिखित 'बंगाली रामायण' के पृष्ठ 199 और 200 में पाई जाती है।

1. कृतिवास रामायण (7-44-45) चन्द्रावती कृत रामायण गाथा, सेरीराम, काश्मीरी रामायण, भारतीय साहित्य आगरा वर्ष 2 अंक 3, पृष्ठ 79, दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह कृत भोजपुरी लोकगीत पृष्ठ 27, कृष्णदेव उपाध्याय कृत भोजपुरी ग्रामगीत 51, रामनरेश त्रिपाठी कृत लोकगीतों में रामकथा, मैथिलीशरण गुप्त अभिनंदन ग्रन्थ पृष्ठ 661, मसिही रामायण, रामायणसार, सेरतकाण्ड, आनन्द रामायण, हिकायत महाराज रावण, रामदास गोड़ कृत हिन्दुत्व पृष्ठ 141, सिंहल द्वीप की रामकथा, रामकेर्ति (सर्ग 75) और रामकियेन (अध्याय 40) के अनुसार राम द्वारा सीता के त्याग का कारण रावण काचित्र है। –रामकथा अनु. 723, 724

आयटम नं. 25

29. रामायण के अनुसार हम कह सकते हैं–"राम एक अयोग्य व्यक्ति था और सीता एक व्यभिचारिणी स्त्री थी।"

1. राम के लिए अवलोकन कीजिए आयटम नं 35
2. सीता के लिए अवलोकन कीजिए आयटम नं 36

आयटम नं 26

यदि राम का (सीता को जंगल में छोड़ने का) कृत्य उचित मान लिया जाए तो यह सभी को मान लेना चाहिए कि, सीता रावण द्वारा गर्भवती हुई थी।

1. वाल्मिकी रामायण उत्तर काण्ड सर्ग 43/16 से 22 के अनुसार राम से विदुषक भद्र ने कहा–रावण वध से सीता का उद्धार अवश्य हुआ, परन्तु रावण के स्पर्श से जो दोष उत्पन्न हुआ, रामचन्द्र ने उसका कोई विचार नहीं किया और सीता को पवित्र समझकर घर में रख लिया। जैसा राजा होगा, वैसी ही प्रजा भी तो होगी (16 से 19 हे राजश्रेष्ठ सभी नगरों और गांवों में लोग ऐसी बातें किया करते हैं। 20... इस बात को सुनकर मित्रों ने भी राम से दुखी हृदय से कहा, कि राजन! भद्र की बात सत्य है। 21-22।

सर्ग 45/18 के अनुसार राम ने लक्ष्मण से कहा–"गंगा नदी के उस पार तमसा नदी के निकट वाल्मिकी आश्रम है। वहीं एकान्त में सीता को छोड़कर शीघ्र लौट आओ।"

उत्तर काण्ड सर्ग 48/8 में जब लक्ष्मण ने सीता को जंगल में छोड़ दिया तब सीता ने लक्ष्मण से कहा–"मैं अभी गंगा में डूबकर मर जाती, पर ऐसा नहीं कर सकती, क्योंकि मैं गर्भवती हूं" इसका समर्थन कालिदास के रघुवंश (सर्ग 14), उत्तर रामचरित (अंक 1) कुन्दमाला, दशावतार चरित, आध्यात्म रामायण (7,4,47) और आनन्द रामायण (5,3,21) से भी होता है, केवल नामों का अन्तर क्रमशः भद्र, गुप्तचर, दुर्मुख, गुप्तचर व विजय है। रामकथा अनु. 717

तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस' लव कुश काण्ड 9, छन्द 1 के अनुसार दूत ने राम से कहा एक धोबी अपनी स्त्री को डांटकर व्यंग्यवचन कह कर सुना रहा था। कृपानिधान रामचन्द्रजी ने दूत के वचन सुनकर उन्हें अपने हृदय में रख लिया। रात्रि में स्पप्न में भी वही दृश्य देखकर जगतपति रामजी सवेरे जागने पर अपार दुःख से भर गए।

उपरोक्त कथा 'गुणाढ्य कृत अप्राप्त बृहतकथा' में विद्यमान थी और अब सोमदेव भट्ट कृत कथा-सरितासागर (9,1,66) में एक दिन अपने नगर में गुप्त वेश में घूमते हुए स्वयं राजा राम ने यह...घटना देखी।

भागवत पुराण (9,11) का कथानक भी कथा-सरितासागर से मिलता जुलमा है।

जेमिनी अश्वमेध (अध्याय 26) व पद्म पुराण (4,55) के अनुसार वह व्यक्ति धोबी था। रामकथा अनुच्छेद. 720

तामिल रामायण (उत्तर काण्ड 7, 7) व आनन्द रामायण (5-27-30) के अनुसार भी धोबी के इस कथ्य का समर्थन होता है।

नोट : आनन्दरामायण 9-5-34 के अनुसार राम ने स्वर्गारोहण के समय धोबी को स्वर्ग जाने की अनुमति नहीं दी। –रामकथा अनु. 720

तिब्बती रामायण के अनुसार जो कथा सरितासागर व भागवत पुराण का विकसित वृत्तांत प्रतीत होता है। राम ने स्वतः किसी पुरुष से जो अपनी स्त्री को वह पर पुरुष के साथ भी अपनी काम पीड़ा शांतकर, कहकर फटकार रहा था, कि अपना जन अपवाद सुना–तब राम छीपकर उस स्त्री

से मिले। उस स्त्री के स्त्रियों के विषय में राम को समझाते हुए कहा—गर्मी से पीड़ित मनुष्य जिस प्रकार शीतल सरिता का निरन्तर स्मरण करता है—ऐसे ही काम पीड़ित स्त्री रूपवान पुरुष का निरंतर स्मरण करती रहती है। जब तक उसे कोई देखता अथवा सुनता है—वह निंदनीय अपराध नहीं करती, लेकिन एकान्त में बन्धन से मुक्त होकर वह पर पुरुष के साथ भी अपनी काम पीड़ा शांत कर लेती है।"—रामकथा अनु. 721

डॉक्टर एफ.डब्ल्यू. थोमस के अनुसार वह व्यक्ति संभवतः एक लिच्छवी (धोबी) है।

वाल्मिकी रामायण उत्तर काण्ड सर्ग 17/2-3 के अनुसार राम ने वाल्मिकी से कहा—"हे धर्मेश! आपका कथन सत्य है। मुझे आपके पुनित वाक्यों पर विश्वास है। लंका विजय के बाद सीता ने देवताओं के सामने शपथ ली थी। इसलिए मैं इनको पवित्र समझकर अयोध्या ले आया था।

स्पष्टीकरण : राम ने सीता की अग्निपरीक्षा नहीं ली थी, कवल शपथ ली थी।

सीता की अग्निपरीक्षा न लेने का समर्थन महाभारत रामोपाख्यान अध्याय 275 हरिवंश पुराण, अनात्मक जातक, श्याम का राम जातक, खोतानी रामायण, तिब्बती रामायण तथा गुणभद्र कृत उत्तर पुराण आदि से भी होता है। इन ग्रंथों में सीता की अग्निपरीक्षा का अभाव है। —रामकथा अनु. 601

राम कथा अनु. 541 के अनुसार वाल्मीकि रामायण में रावण कामी का मन सीता पर आसक्त था। इस बात को सभी जानते थे।

राम का अन्तर्द्वन्द्व' (कविता) लेखक अरविन्दकुमार; प्रकाशक सरिता जुलाई 1957 ई. और राम का अन्तर्द्वन्द्व आलोचनाओं और आपत्तियों का उत्तर, लेखकर—अरविन्दकुमार। प्रकाशक—सरिता, दिल्ली बुक कम्पनी एम/12 कनाट सरकस, नई दिल्ली के अनुसार अवलोकन कीजिए—

सीता का वनवास... सीता का था नाम, बहाना सीता का था... कपटी था दशशीश... नहीं नहीं... तो क्या सीता डिगी न होगी... इसकी केवल... सीता का...।

वाल्मीकि रामायणयुद्ध काण्ड सर्ग 118 के अनुसार—राम के हृदय के अचानक उद्‌गार, जो उन्होंने सीता के प्रति कहे—

(राम ने सीता से कहा—"आश्रम पर मेरे न रहने के समय कपटी राक्षस रावण ने तुम्हारा हरण किया था। दैवकोप से ही यह बात हुई थी। उस दैवकोप को मैंने मनुष्य होकर भी दूर कर दिया। 5। शत्रु से बदला लेने के लिए जो बात एक मनुष्य कर सकता है। वह मैंने रावण को मारकर पूरी कर दी है। इससे मेरी प्रतिष्ठा की रक्षा हुई। 13। तुम रावण के यहां बहुत दिनों तक रही हो। इसलिए मुझे तुम्हारे चरित्र पर संदेह हो गया है। तुम मेरे सामने खड़ी हुई उसी तरह अच्छी नहीं लग रही हो, जिस तरह दुखती हुई आंखों को दीपक अच्छा नहीं लगता। 17। इसलिए हे सीते! अब तुम जहां चाहो—वहां चली जाओ। मैं मुमसे किसी तरह के संबंध नहीं रख सकता। 18। उत्तम कुल में उत्पन्न होकर कभी भी तेजस्वी पुरुष दूसरे के घर में रही हुई स्त्री को प्रेम भरे दृश्य से स्वीकार नहीं करेगा। 19। हे सीते! हरण करने के समय रावण ने तुम्हें गोद में उठाया और बुरे नेत्रों से देखा है। तब मैं एक महान कुल में उत्पन्न होकर तुमको किस तरह स्वीकार कर सकता हूं। 20। मैंने रावण को मारकर उसके हाथों से तुम्हारा उद्धार कर दिया। मेरा उद्देश्य पूरा हो गया। मेरा बदला मिल गया। अब तुम्हारे साथ मेरा कोई संबंध नहीं है। तुम जहां चाहो, वहां चली जाओ। 21। हे कल्याणी! मैंने बहुत विचार किया—बहुत सोचा, समझा। अन्त में यही निश्चित रहा। इसलिए अब तुम अपने जीवन निर्वाह के लिए लक्ष्मण या भरत के पास जाकर रह सकती हो। 22। शत्रुघ्न, सुग्रीव या राक्षस—राजा विभीषण के पास जाकर रहो या जहां अच्छा समझो—वहां जाकर रह सकती हो। 23। हे सीते! अपने घर में रहती हुई तुम्हारे इस मनोहर रूप को देखकर राक्षस-राज रावण इतने दिनों तक काम पीड़ा को न सह सका होगा।"

आयटम नं. 27

ऐसी दशा में यह सिद्ध करना कि, न सीता भ्रष्ट थी और न राम गुण्डा तथा विश्वासघाती प्रकट करता है कि, भ्रष्टता और नीचता क्षम्य नहीं है।

1. अवलोकन कीजिए राम के लिए आयटम नं 35 व सीता के लिए आयटम नं. 36।

आयटम नं. 28

9. लक्ष्मण ने राम को बताया कि तुम्हें धोखा देने के लिए दशरथ और कैकेई ने अपनी पूर्व सुनिश्चित योजनानुसार तुम्हें राजगद्दी देने में भिन्न-भिन्न मतों का अनुसरण किया है।
10. बाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 23/9 से 11 के अनुसार लक्ष्मण ने राम से कहा कि, पापी महाराज दशरथ और कैकेई के प्रति आपको संशय क्यों नहीं होता? हे धर्मात्मा! जो धर्म का छलावा करके आपको धोखा देना चाहते है। उनसे आप सावधान क्यों नहीं होते? वे अपना काम बनाने के लिए आप सरीखे सदाचारी के साथ शठता करके आपको निकाल बाहर करना चाहते हैं। यदि उनका यह षड्यंत्र न होता–तो वे आपके अभिषेक में विघ्न क्यों डालते? रही वरदान की बात–सो यदि ऐसी कोई साजिश न होती–तो घर के आदान-प्रदान का निपटारा पहले ही हो गया होता। हे वीर! आपको अलग करके भरत के अभिषेक की योजना सर्वथा लोक विरुद्ध है। मैं इसे नहीं सह सकता। आप मुझे क्षमा करें।

आयटम नं. 29

14. जब भरत ने वन में जाकर राम से अनुनय-विनय की–"तुम लोग चलो और अयोध्या का राज्य करो।" तब लक्ष्मण ने क्रोधपूर्वक कहा कि "मैं भरत को मारने जा रहा हूं।"
15. वाल्मिकी रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 16/21 से 30 के अनुसार लक्ष्मण ने राम से कहा, कि हे रावव! इसी भरत के कारण आपको, मुझे और सीता को कितने कष्ट सहने पड़े हैं। आपको अपने सनातन राज्याधिकार से वंचित होना पड़ा है। रघुवीर! हमारा शत्रु भरत आया हुआ है। वह हमारा बांधव है। इसे मारने में मैं कोई दोष नहीं देखता। जिसने पहले अपराध किया है, उसे मारने में अधर्म नहीं होगा। यह हमारा पूर्वापराधी है। हे राघव! इसने धर्म को त्याग दिया है। इस दुष्ट के मर जाने पर आप निश्चित होकर सारी पृथ्वी का शासन करें। राज्य की चालचित्र कैकेई अपने बेटे को मेरे हाथों इस प्रकार मरा हुआ देखें। जैसे हाथियों द्वारा उखाड़ कर वृक्ष धराशायी

कर दिया जाता है। मां कैकेई, मंथरा और उसके संबंधियों को भी समाप्त कर दूंगा। आज यह धरती बड़े भारी पाप से मुक्त हो जाएगी। हे राधव! आज मैं मैं अब तक की रुकी हुई क्रोधाग्नि शत्रु सेना के ऊपर इस प्रकार छोड़ूंगा–जैसे जल राशि पर आग छोड़ी जाती है। आज मैं अपने तीखे बाणों से शत्रु के सैनिकों को काटकर इस चित्रकूट के जंगल को अनेक रुधिर से सोचूंगा। मेरे बाणों की मार से जिन हाथियों और घोड़ों की अतड़िया बहार निकल आएंगे–उन्हें बनैले पशु घसीटेंगे। मरे हुए मनुष्यों के शव को यहां के सियार व भेड़िए आदि खाएंगे। आज मैं इस महान अरण्य में सेनासहित भरत को मारकर अपने धनुष और बाण के ऋण से उऋण हो जाऊंगा। इसमें कोई संशय नहीं है।

1. भावार्थ रामायण (2, 15) के अनुसार चित्रकुट में भरत और लक्ष्मण का युद्ध होता है। राम ने दोनों को अलग कर दिया। –रामकथा अनु. 434

आयटम नं. 30

16. उस (लक्ष्मण) ने सूर्पनखा से कहा, कि सीता चरित्रहीन है। उसकी छातियां ढल चुकी है। अरण्य काण्ड अध्याय 18
17. सीता के प्रति उसका बर्ताव सीता के सन्देह का कारण बन चुका था। वह उससे प्रेम करता था और उसके साथ संभोग करना चाहता था।
18. उस (लक्ष्मण) ने अपने ज्येष्ठ भाई की स्त्री के प्रति राम से कहा कि, सीता को चाहे कोई भगा ले जाए। चाहे वह मर जाए। यह कोई बड़ी बात नहीं है। क्या हमें ऐसी नीच स्त्री के लिए कष्ट सहने चाहिए?

1. वाल्मिकी रामायण अरण काण्ड सर्ग 18/11-12 के अनुसार लक्ष्मण ने सूर्पनखा से कहा, कि सीता कुरूप है, कर्कशा है। देखने में भयानक है और उसका पेट धंसा हुआ है। अतएव राम उस बुढ़िया को छोड़कर तुम्हारा ही सम्मान करेंगे। संसार में भला ऐसा कौन समझदार मनुष्य होगा–जो तुम जैसी लावण्यमयी ललना को छोड़कर मानव कन्या से प्रीति करेगा।

2. स्कन्द पुराण (नगर खण्ड अध्याय 20) के अनुसार 'पितृकुपिका तीर्थ' में पहुंच कर राजा दशरथ के श्राद्ध का आयोजन (बनवास के समय में) करते हैं। सीता कहीं छिप जाती है और लक्ष्मण को विप्रों की सेवा करना पड़ता है। श्राद्ध के बाद सीता फिर दिखाई देती है। जिससे लक्ष्मण को इतना क्रोध आ जाता है, कि वह साथरी (चटाई या बिछौना) के लिए पत्ते तथा पैर धोने के लिए पानी ले आना अस्वीकार करते है। बाद में कोपरक्त-लोचन लक्ष्मण क्रोध में लाल आंखें किए हुए दूर से राम को सोते हुए देखते है तथा उनके मन में राम का वध करने और सीता को अपनी पत्नी बनाने का विचार उठता है।

हत्वेनं राघव सुप्तं सीतां पत्नी विधाय च।
कीं गच्छामि निज स्थानं विदेशं वापि दूरतः ॥45॥

प्रातः राम तथा सीता दक्षिण के लिए प्रस्थान करते है। लक्ष्मण राम के वध का अवसर ढूंढ़ते हुए, दिनभर पीछा करते हैं।

लक्ष्मणोऽपि धनुः सज्य कृत्वा संधाय सायकम् ॥
अनुब्रजति पृष्ठस्थसतस्य छिद्रं विलोकयन् ॥49॥

संध्या के समय 'गौकर्ण तीर्थ' में पहुंच कर लक्ष्मण राम के पास जाकर अपना अपराध स्वीकार करते हैं तथा राम से क्षमा मांगते हैं...।—रामकथा अनुच्छेद 462

1. पद्म पुराण सृष्ट खण्ड अध्यय 28, 126-190 के अनुसार राम के प्रति लक्ष्मण का विद्रोह तथा बाद में उनका पश्चाताप है। —रामकथा अनु. 462
4. खोतानी रामायण में सीता को राम और लक्ष्मण दोनों की सम्मिलित पत्नी माना गया है। रामकथा अनु. 462
5. वाल्मिकी रामायण अरण्य सर्ग 45/5 से 8 व 21 से 27 के अनुसार जब मारीच ने मरते समय ही लक्ष्मण! हा सीते! कहा। तब सीता ने कुपित होकर कहा—"लक्ष्मण! जान पड़ता है, कि आपने भाई राम के मित्र बनकर तुम भी उनके शत्रु हो, तभी तो ऐसी दशा में तुम दौड़कर उनके पास नहीं पहुंचते। लक्ष्मण! तुम चाहते हो, कि राम मारे जाए और सीता का मैं अपनी स्त्री बना लूं। मुझे पाने के लोभ से ही तुम राम के पास नहीं जा रहे हो। जितनी तुम्हारे मन में दुर्भावना है, उतनी भाई पर प्रीति नहीं है। यही कारण है कि, तुम उन्हें देखने नहीं जाते बल्कि, चुपचाप यहां ही बैठे हो।"

6. पुनः सीता ने लक्ष्मण से कहा—"ओ अनार्य! हो क्रूर! ओ कुलांगार!!! मैं समझती हूं, कि राम का विनाश ही तुझे विशेष प्रिय है। उन्हें विनाशोन्मुख देखकर ही तू ऐसी बातें बना रहा है। लक्ष्मण! जो तू कह रहा है। उसमें विस्मय की कोई बात नहीं है। तेरे जैसे क्रूर और कपटी मित्र ऐसा ही करते हैं। तू बड़ा दुष्ट है। मुझे अपनी स्त्री बनाने के लिए या कि भरत की प्रेरणा से अकेला (अर्थात अपनी पत्नी रहित) हमारे साथ वन में आया है। लक्ष्मण! तुम अच्छी तरह समझ लो। नीलकमल सदृश्य श्याम और कमलदल सम नेत्रों वाली राम की पत्नी होकर तुम जैसे नीच की भार्या मैं कदापि न होऊंगी। मैं तुम्हारे सामने ही प्राण त्याग दूंगी। राम से बिछड़ कर मैं क्षण भर भी न जिऊंगी।"
7. तुलसीदास कृत रामचरित मानस अरण्य काण्ड के अनुसार लक्ष्मण से मर्म-वचन सीता जब बोली।
8. वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 66/14 में लक्ष्मण से कहा है वीर! सीता मर गई हो या उनका अपहरण हो गया हो—फिर भी आपको संसार के पमार प्राणियां के समान विषाद नहीं करना चाहिए।

आयटम नं. 31

7. भरत की भी बहुत स्त्रियां थी।
1. वाल्मिकी रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 10/69 व 72 के अनुसार चित्रकुट में राम ने भरत से कहा कि, तुम अपनी स्त्रियों को सदा प्रसन्न रखते हो और उनकी रक्षा करते हो न? उनकी बातों परि विश्वास तो नहीं रखते हो और उन्हें अपनी कोई गुप्त बात नहीं बता देते?
2. पुनः कहा तुम्हारी स्त्रियां और श्रुति, (अनुभव अन्य ज्ञान) तो सफल है?

आयटम नं. 32

1. सीता से वार्तालाप करते हुए उस (हुनमान) ने निर्लज्जता तथा असभ्यतापूर्ण शब्दों का प्रयोग किया था–यहां तक कि उसने मनुष्य-लिंग के विषय में भी सीता से बातचीत की थी–जो कि उसे स्त्रियों के समक्ष नहीं करनी चाहिए थी।
2. वाल्मिकी रामायण सुन्दर काण्ड सर्ग 35/17 व 20 के अनुसार हनुमान ने लंका की अशोक वाटिका में परिचय बताते हुए सीता से कहा कि, राम की भौंहे, बाहु और अण्डकोष ये तीनों लंबे हैं... उनके बाल, पैर की रेखाएं और पुरुष-चिह्न अर्थात लिंग कोमल हैं। उनकी पीठ, उनका पुरुष चिह्न अर्था लिंग और जांघे मोटी हैं।
   उनके बाहु, जानु, उर और गण्डस्थल ये चारों बराबर है। उनकी भौंहे, नासिक के छिद्र, आंखें, कान, होंठ, कुचाग्र, केहुनी, कलाई, जांघे, अण्डकोष, कमर, हाथ, पैर और नितम्ब अर्थात चूतड़ ये चौदहों अंग बराबर हैं।... अंगुलियों के पोर, बाल, रोएं नख, त्वचा, पुरुष चिह्न अर्थात लिंग, दाढ़ी और बुद्धि सूक्ष्म हैं।

आयटम नं. 33

सीता रावण के लिए भोजन परोसती थी।

1. लंका में सेनापति बैठे हुए रावण ने उस (सीता) से कहा, सीते! लज्जा न करो। हमारा तथा तुम्हारा मिलाप दैवी योजनानुसार है। इसका स्वागत सम्पूर्ण ऋषि और मुनि करेंगे। इस पर सीता ने उत्तर दिया, कि तुम मेरे शरीर को यथेच्छ भोग कर सकते हो। मुझे अपने शरीर की चिंता नहीं।" अवलोकन कीजिए आयटम नं. 20 से 32

आयटम नं. 34

जहां तक सीता के प्रति राम का संबंध है–वह पाखंडी, कपटी, विश्वासघाती, स्त्री कृत निर्बल, बिहुना मेहरा और झूठा था। उसका भाई लक्ष्मण उपद्रवी, प्रजा पीड़क था। जिसने अपने पिता को मार डालने का साहस किया था। वह लुच्चा व लम्पट था। जो गद्दी प्राप्त करने हेतु कोई भी कार्य करने में नहीं हिचकिचाया। अवलोकन कीजिए निम्न हेडिंग–

1. रामचरित।
2. लक्ष्मण चरित।
3. रामायण
4. रामायण में अपमानित शूद्र।
5. रामायण में अपमानित नारी।
6. रामायण में ब्राह्मणी गरिमा।

आयटम नं. 35

राम का अहिल्या तथा पहाड़ों, नदियों, बेरो का पेड़, कुक्कूट, बगला व गिलहरी के प्रति संबंध परिशिष्ट अवलोकन कीजिए।

1. सीता का चरित्र

1. अवलोकन कीजिए सच्ची रामायण के मान्यता प्राप्त सीता संबंधी सभी पृष्ठ।
2. अवलोकन कीजिए सीता से संबंधित आयटम नं 15, 16, 18 से 23 व 26 आदि।
3. महावीर चरित्र (अंक 1) के अनुसार विश्वामित्र ने अपने आश्रम पर सीता और उर्मिला को बुलाया। वहीं राम सीता को और लक्ष्मण उर्मिला को देखकर आकर्षित हो गए। रामकथा अनु. 311
4. वाल्मिकी रामायण सुन्दर काण्ड सर्ग 38 में इन्द्र के पुत्र जयन्त की कहानी अवलोकन कीजिए–
   लंका की अशोक-वाटिका में सीता ने हनुमान से कहा–"हे दुत हनुमान! तुम मेरे प्रिय स्वामी से जाकर सर्वश्रेष्ठ चिह्न-रूप में यह कहना कि, चित्रकुट पर्वत के उत्तर-पूर्व दिशा में मंदाकिनी नदी के किनारे कंद-मूल और फलों से युक्त सिद्धों के आश्रमों युक्त वनों में विहार करते हुए थक कर आप मेरी गोद में आ बैठे थे। 12-14। उसी समय मांस की इच्छा से एक कौआ वहां आया और मुझे चोंच से मारने लगा। मैंने पत्थर फेंककर उसे भगाना चाहा–पर वह नहीं भागा। उस मांस खाने वाले कौए ने किसी तरह मेरा पीछा नहीं छोड़ा। 15, 16। मैं उस कौए पर क्रोध करके भागने की इच्छा से

दौड़ी। उसी समय मेरा वस्त्र कमर के कुछ नीचे खिसक गया। जिसे आपने देखकर हंस दिया था। इससे मुझे पहले क्रोध और बाद में लज्जा आई। मैं लौट कर आपकी गोद में जा बैठी और रोने लगी। उस भोजनार्थी कौए द्वारा घायल होकर मैं आपके पास गई थी। 17, 18। इसके बाद मैं आपकी गोद में लेट गई। मुझे देखकर आपने मनाया 19। मैं आंखें पोछ रही थी—उस समय आपने मुझे कौए पर क्रुद्ध देखा। 20। इसके बाद श्रम-वश मैं आपकी सो गई और आप भी मेरी गोद में सो गए। 21। तब मैं आपकी गोद में उठकर बैठ गई। उसी समय सहसा उस कौए ने मेरे स्तन पर चोंच मारी। 22। फिर तो वह बार -बार उड़कर मुझे चोंच मारने लगा जब मेरे रूधिर की बूंदे आप पर गिरी, तो आप जाग गए। 23। उस कौए ने जब मुझे दुःख दिया, तब आनन्द के साथ सोते हुए आपको मैंने आपसे पूछा—"हे नागनासोरू! तुम्हारे स्तन में किसने घाव कर दिया है।! 24, 26। वह कौन है। जो पांच भयंकर मुखवाले सर्प से खेल करना चाहता है?" ऐसा कहकर आपने मेरी ओर ताकते हुए रक्त-रंजित तथा तीखे नखों वाले कोए को बैठे देखा। पृथ्वी पर वायु के समान चलने वाला वह कौआ इन्द्र का पुत्र था। उसे देखकर आपके नेत्र लाल हो गए। 27-29।

5. लक्ष्मण ने सीता की रक्षा हेतु श्याम देश तथा ब्रह्मदेश की रामकथा के अनुसार तीन रेखाएं, तेलगू द्विपद रात (3, 18) के अनुसार सात रेखाएं व तुलसीदास कृत रामचरित मानस (अर. काण्ड), खोतानी रामायण सेरीराम, हिकायत महाराज रावण, मधुसूदन द्वारा सम्पादित महानाटक (अंक 3, 65) कृतिवास रामायण, आनंद रामायण (2, 778), भावार्थ रामायण (3,35), सूरसागर (स्कन्ध 9,5,3) असमिया गीतरामायण, रामचन्द्रिका 812, 18) तथा पाश्चात्य वृत्तान्त नं. 13 के अनुसार एक रेखा खींची थी। —रामकथा अनु. 499
   नोट : सीता ने उस रेखा को स्वतः पार किया था।
6. वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 45 के अनुसार सीता ने लक्ष्मण से मार्मिक वचन कहे।
7. कश्मिरी रामायण के अनुसार सीता ने रावण से कहा—"जटायु को रक्त में सने पत्थर खिलाईये। वह उन्हें खाकर गिर जावेगा। रावण

ऐसा ही करता है और जटायु पृथ्वी पर गिर पड़ता है। —रामकथा अनु. 470

8. खोतानी रामायण तथा तिब्बती रामायण में रावण ने जटायु को रक्त से सने धातुओं के टुकड़े खिला कर मार डाला। —रामकथा अनु. 470
9. पाश्चात्य वृत्तान्त नं. 3 में रावण ने अपनी जांघ के खून से सेना पत्थर खिलाया। —रामकथा अनु. 470

2. राम चरित्र

1. अवलोकन कीजिए सच्ची रामायण के मान्यता प्राप्त राम से संबंधित पृष्ठ राम से संबंधित सभी आयटमें के उत्तर।
2. तुलसीदास कृत रामचरित मानस बाल काण्ड के अनुसार गौतम की स्त्री अहिल्या श्रापवश पत्थर बन गई। राम के चरण स्पर्श से पुनः स्त्री बन गई।

वाल्मिकी रामायण बाल काण्ड सर्ग 48 के अनुसार गौतम की स्त्री अहिल्या शापवश निराहहार रहकर अदृश्य हो गई। सर्ग 50 के अनुसार राम दर्शन से सबका दिखाई देने लगी।

महाभारत, शान्ति-पर्व अध्याय 258 के अनुसार गौतम के क्रोधवश अपने पुत्र, चिरकारी को अहिल्या का वध करने का आदेश दिया। पुत्र ने उसे जंगल में छोड़कर जंगली जानवर के खून की तलवार दिखाकर अपने पिता को अहिल्या वध की सूचना दी। क्रोध शान्त हो जाने पर पुनः ग्रहण कर लिया रामकथा अनु. 345

3. तुलसीदास कृत रामचरित मानस बाल काण्ड के अनुसार राम ने सीता को जनकपुर की वाटिका में देखकर लक्ष्मण से कहा "हम नहीं मदन दुन्दभी दीन्ही।"
   वाल्मीकि रामायण किष्किन्धा काण्ड सर्ग 1/22-23 में राम ने लक्ष्मण से कहा—"मुझे काम देव सता रहा है।"
4. वाल्मिकी रामायण बाल काण्ड सर्ग 73 में राम के सामने लक्ष्मण का विवाह उर्मिला के साथ हुआ।
   अरण्य काण्ड सर्ग 18 में राम ने सूर्पनखा से कहा, कि मेरा छोटा भाई लक्ष्मण कुंवारा (अविवाहित) है।

वाल्मिकी रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग 20 में राम ने माता कौशल्या से कहा—"मैं बन में कन्दमूल फल खाऊंगा।"

आयटम नं. 13 में वर्णित राम ने वनवास में खूब मांस खाया।

5. वाल्मिकी रामायण काण्ड सर्ग 97 में भरत आगमन के समय लक्ष्मण से चित्रकूट में राम ने कहा—"लक्ष्मण! यदि तुम राज्य के लिए ऐसी बातें करते हो, तो जब भरत यहां आवे, मैं उनसे कहूंगा कि अयोध्या का राज्य तुम लक्ष्मण को दे दो।" परन्तु भरत ने आगमन पर राम ने भरत से उपरोक्त शब्द नहीं कहे।

6. वाल्मिकी रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 107 में राम ने भरत से कहा—"जब पिताजी ने तुम्हारी माता से विवाह किया था तभी तुम्हारे नाना के समक्ष वे (महाराजा दशरथ) प्रतिज्ञा कर चुके थे कि उनकी कन्या से जो पुत्र उत्पन्न होगा वही राज्य पाएगा।"

अनामक जातक, जैन पउचरियं, तिब्बती रामायण, सेरीराम, सिंहली रामकथा व पाश्चात्य वृत्तांत नं. 1, 12 व 14 के अनुसार राम स्वेच्छा से वनवास गए। रामकथा अनु. 446

वाल्मिकी रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 31 व 53 आदि में कैकेई आदि पर व्यर्थ ही राम ने नाना प्रकार के दोषारोपण किया।

वाल्मिकी रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 92 में भरद्वाज ने श्रीराम से कहा था। "कैकेई को दोष नहीं देना चाहिए। राम का निर्वासन सबके लिए भलाई का कारण होगा।"

7. तेलगू रङ्गनाथ रामायण (1, 14 व 2, 2) कम्दा रामायण (2, 2, 41 व 58, 32) सेरीराम और रामक्रियन (अध्याय 14) के अनुसार राम ने समय-समय पर मन्थरा को मारा। —रामकथा अनु. 454

8. वाल्मिकी रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग 101 में राम ने जाबालि से कहा—"जैसे चोर दंडनीय होता है, वैसे ही बौद्ध भी दण्ड का पात्र होता है। लोकायतिक और नास्तिक भी उसी तरह दंडनीय होते हैं।"

9. वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 26 से 30 के अनुसार राम ने क्रमशः दूषण, त्रिशरा व खरा को चौदह हजार राक्षसों सहित मारा। भट्टि काव्य (4,41) सरलदास महाभारत (वन पर्व) रामायण ककविन (4,71) तथा सेरीराम के अनुसार राम और लक्ष्मण दोनों ने मिलकर खर, दूषण व त्रिशरा आदि का सामना किया।

10. वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 67 के अनुसार जटायु ने राम से कहा—"सीता को रावण हर ले गया है। फिर भी रामकथा अनुच्छेद 447 के अनुसार वही राम कुक्कुट, बगुला, गिलहरी और बेर के वृक्षो से सीता कापता पूछते फिरते है।

11. वाल्मिकी रामायण किष्किन्धा काण्ड 17 में बालि ने राम से कहा—"छिप कर मेरा वधन करने से तुम्हें क्या लाभ हुआ?" राम ने सर्ग 18 के अनुसार कहा—"तुमने छोटे भाई की स्त्री का हरण किया है। तुम्हारा यह कृत्य सनानत धर्म के विरुद्ध है।" परन्तु जब सर्ग 29 के अनुसार सुग्रीव ने बालि की विधवा पत्नी तारा को अपनी पत्नी बना लिया तब राम चुप रहे।

12. आयटम नं. 7 से 11 के अतिरिक्त वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 67/24 में जटायु मिलन के समय राम ने लक्ष्मण से कहा—"राज्य निकल गया। पुनः युद्ध काण्ड सर्ग 11/50 में रावण द्वारा लक्ष्मण के शक्ति मारी जाने के समय राम ने हनुमान व सुग्रीव से कहा—राज्य का छुटना।...इन बातों से मैंने घोर नरक के समान दुख पाया है।" अयोध्या काण्ड सर्ग 110/29 के अनुसार राम सरयु नदी के गोप्तार घाट में लक्ष्मण सहित स्नान करके विष्णु लोक चले गए।

उत्तर काण्ड सर्ग 74/14 व 15 में मनु की बताई हुई वर्णव्यवस्था के विरुद्ध तपस्या करनेवाले शूद्र तपस्वी शम्बूक का वध राम ने सर्ग 76 के अनुसार किया। पाश्चात्य वृत्तांत नं. 12 के अनुसार राम पुनर्जन्म का प्रचार सिंहल द्वीप में करना चाहते थे। रावण ने विरोध किया। —रामकथा अनु. 487

आनन्द रामायण जन्म काण्ड (9, 5, 34) व पूर्ण काण्ड सर्ग 4/6 के अनुसार राम द्वारा मंथरा और धोबी को स्वर्ग जाने की अनुमति नहीं मिली। —रामकथा अनुच्छेद 720, 755 आनन्द रामायण पूर्ण काण्ड 4/6 के अनुसार अगले जन्म कृष्णावतार के समय मन्थरा ने पूतना और धोबी ने कंस के रजक (धोबी के रूप में जन्म लिया। —रामकथा अनु. 755

सरलदास की महाभारत के अनुसार चित्रकूट से घुमते घामते राम लक्ष्मण व सीता सहित 'गया' तीर्थ में पहुंचे। रामलक्ष्मण पितृ-कर्म

हेतु 'गेंडा' जानवर मारने गए। पितृ-क्रम का समय आ गया, तब सीता ने बालू के सात पिण्ड राम के पूर्वजों को दिए। राम की वापसी पर दक्षिणा देने की बात ब्राह्मणों ने नहीं माना, तब सीता ने उन ब्राह्मणों को अपने सब कपड़े दे दिए और कमल पत्रों से अपने शरीर को ढंक लिया।—रामकथा अनु. 434

13. बलरामदास रामायण के अनुसार राम ने यह सोचकर मन्दोदरी को दूसरे विवाह के लिए बाध्य किया, क्योंकि उनकी पत्नी सीता का जो अनादर हुआ है, उसका प्रतिकार होना चाहिए।—रामकथा अनु. 572

मदसूदन द्वारा सम्पादित महानाटक के अनुसार—

'मन्दोदरी तब विभीषण पट्टराज्ञीभूयादिमां च परिपलय वीर **लड़काम।** 9/103। अर्थात मन्दोदरी विभीषण की पटरानी बन जाए। —रामकथा अनु. 572

14. राम वन की प्रत्येक मुसीबतों को जानते थे, फिर भी सीता के हट के कारण उन्हें बन में आपने साथ ले गए। राम जानते थे कि सोने का हिरण नहीं होता है फिर भी सीता की हठ के कारण उसके पीछे चल दिए।

15. सेरी राम के अनुसार हनुमान ने राम से सीता की खोज के लिए लंका जाना इस शर्त पर स्वीकार किया कि उनके साथ राम ने स्नान करने का आदेश देकर इस शर्त को स्वीकार कर लिया। —रामकथा अनु. 524

16. 'वैनिशमेंट ऑफ सीता' लेखक अरविन्द कुमार के अनुसार राम कायर थे, क्योंकि उन्होंने केवल एक व्यक्ति के विरोध पर गर्भवती सीता को जंगल में छोड़ दिया था।

3. लक्ष्मण चरित्र

1. अवलोकन कीजिए सच्ची रामायण के मान्यता प्राप्त लक्ष्मण संबंधी पृष्ठ।
2. अवलोकन कीजिए लक्ष्मण संबंधी आयटम नं. 12, 13, 28 से 30 आदि।
3. वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग 21/1 से 10 में लक्ष्मण ने

कौशल्या से दशरथ और कैकेई को दुर्वचन कहे। सर्ग 23/1 से 49 में लक्ष्मण ने राम से भरत आदि को दुर्वचन कहे।

4. तुलसीदास कृत रामचरित मानस बाल काण्ड में परशुराम को लक्ष्मण ने दुर्वचन कहे—

बिहंसि लखन बोले मृदुवानी। अहो मुनीश मह्य भटमानी।
कोटि कुलिस सम बंधन तुम्हारा। व्यर्थ धरहु धनु बाण कुठारा॥
विद्यमान रन पाई रिपु कायर करहिं प्रलाप।
मातु पितहिं उऋण भये नींके। गुरु ऋण रहा सोचबड़ जी के।

5. विमलसूरि कृत 'उपमचरिंय' (युद्ध पर्व 54) के अनुसार नल द्वारा पराजित राजा समुद्र ने अपनी चार कन्याएं लक्ष्मण को दीं। —रामकथा अनु. 66

इसी ग्रन्थ 'पउमचरिय' (युद्ध पर्व 61 से 64) के अनुसार जब लक्ष्मण को रावण ने शक्ति मारी, तब द्रोणामेध की कन्या विशल्या लक्ष्मण का उपचार करती रही। बाद में दोनों का विवाह हो गया। —रामकथा अनु. 60

विमलसूरि कृत 'पउमचरियं' उत्तरचरित (पर्व 85 से 91) वन भ्रमण (पर्व 33-42) तथा गुणभद्र कृत 'उत्तर प्राण' के अनुसार लक्ष्मण की सोलह हजार पत्नियों की चर्चा है, जिनमें वनमाला, रतिमाला व जितपद्मा प्रमुख है। —रामकथा अनु. 60 से 64

6. पाश्चात्य वृत्तांत नं. 14 पृ. 619 के अनुसार राम ने लक्ष्मण को सीता के मार डालने का आदेश दिया। लक्ष्मण ने मारा नहीं, बल्कि किसी वृक्ष का लाल रंग बाण चढ़ाकर राम को विश्वास दिलाया कि सीता का वध हो चूका है। —रामकथा अनु. 721
7. वाल्मिकी रामायण युद्ध काण्ड सर्ग 85 के अनुसार जब मेघनाद निकुम्भिला देवी की पूजा कर रहा था, तब लक्ष्मण ने उसे पूजा करते समय मारा।

4. रामायण

1. अवलोकन कीजिए सच्ची रामायण के मान्यता प्राप्त सभी पृष्ठ।
2. अवलोकन कीजिए सभी आयटम।

3. वाल्मिकी रामायण बाल काण्ड सर्ग 14 व 16 में अध्वमेघ यज्ञ की घटना तथा पुत्र प्राप्ति हेतु कौशल्या द्वारा घोड़े का वध आदि।
स्पष्टीकरण : पुत्र प्राप्त हेतु अश्वमेध है, शुद्ध वीर्य और शुद्ध रज के होने के साथ मासिक धर्म एवं बच्चे दानी में किसी प्रकार की खराबी का न होना, उपरोक्त यज्ञ आदि नहीं।.

4. रामचरित्र के पैरा नं. 12 के अनुसार स्वर्ग, नर्क, पुनर्जन्म व मनुस्मृति वाले (ऊंच-नीच वाले) धर्म की प्रचार पुस्तिका रामायण है।

5. वाल्मिकी रामायण बाल काण्ड सर्ग 74/4 से 7 के अनुसार जनक ने रामविवाह के समय दहेज में बहुत सा धन कई-कई लाख गाएं, अच्छे-अच्छे कंबल, करोड़ो कपड़े, सुंदर और अलंकृत हाथी, घोड़े तथा पैदल सेना, सौ सुन्दर कन्याएं, सुन्दर दास-दासी, सोना और मूंगे (जवाहरात) आदि भी बड़े मन से दिए।
इसके पहले सर्ग 73/30 के अनुसार जनक ने राम को सीता का दान किया।
स्पष्टीकरण : आज दहेज प्रथा हमारी प्रगति में बाधक है।

6. वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 64/34 के अनुसार राम ने लक्ष्मण से कहा कि–"गोदावरी नदी सीता का पता नहीं बताती है। मैं गोदावरी को सुखा दूंगा।"

7. किष्किन्धा काण्ड सर्ग 61/16 के अनुसार सम्पति के पंख सूर्य का पीछा करने पर जल गए। सर्ग 63/13 के अनुसार पंख निकल आए।

8. वाल्मीकि रामायण युद्ध काण्ड सर्ग 75 के अनुसार कुम्भकरण की मृत्यु के बाद रात्रि में लंकादहन व विरोधियों को घेर7घेर कर मार डालना महानतम घृणित घटना है।

9. तुलसीदास कृत रामचरित मानस लंका काण्ड के अनुसार मेघनाद के मरे हुए शरीर के साथ उसकी स्त्री सुलोचना सती हो गई।

10. वाल्मिकी रामायण युद्ध काण्ड सर्ग 22 के अनुसार समुद्र ने राम के पूछने पर कहा–"उत्तर में मेरा पवित्र 'दुमकुल्य' प्रदेश है। वहां पर भयंकर रूपवाले तथा भयंकर कार्य करने वाली पापी अहीर आदि दस्यु रहते है। तेरा जल पीते है। उन पापियों का स्पर्श भी असह्य है। आप अपना बाण वहीं फेंक दीजिए।" राम ने ऐसा ही किया।

11. वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 71/31 में कबंध ने राम से कहा–"सूर्य के घोड़े थक जाने से सूर्य (शीघ्र) अछूत न हो जाए, इसके पहिले ही मुझे गढ़े में डालकर जला दीजिए।

12. बाल काण्ड सर्ग 61-62, के अनुसार राजा अम्बरीश के नरमेध या में शुनःशेष की स्थिति।

13. भवभूति कृत उत्तर रामचरित नाटक (अंग 4) में वशिष्ट ने वाल्मिकी आश्रम में वाल्मिकी द्वज्ञरा प्रदत्त दो वर्ष आयु वाली 'कल्याणी' नामक गाय की बछिया के मांस से बना हुआ मधुपर्क ग्रहण किया।

14. सीता का त्याग करते समय एक राजा की हैसियत से एक कैदी की जीवन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति राम ने नहीं की।

15. वाल्मिकी रामायण बाल काण्ड सर्ग 7/13 में राजा दशरथ के राज्यकोष (खजाना) ब्राह्मणों व क्षत्रियों को बिना कष्ट पहुंचाए भरे रहते थे।

16. युद्ध काण्ड सर्ग 131/22-56 में भरत ने 14 वर्ष बाद राम को दसगुना धन, रत्नों के घर, खजाना, राजमहल और सेना दी।
स्पष्टीकरण : इतना अधिक कर (टैक्स) वैश्यों और शूद्रों को ही देना पड़ा

17. बाल काण्ड सर्ग 6/19 में राजा दशरथ के राज्य में क्षत्रिय ब्राह्मणों के घोर अनुयायी थे। शूद्र अपने धर्म में तत्पर रहते हुए चारों वर्णों की सेवा करते थे।
युद्ध काण्ड सर्ग 131/15 में राम ने दस हजार वर्ष राज्य किया। इसी सर्ग के श्लोक नं. 104 में राम के राज्य में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र लोभरहित होकर अपने-अपने कार्यों में ही सन्तुष्ट रहा करते थे।

5. रामचरित मानस में अपमानित शूद्र

1. **लोक वेद सब भांतिहि कीचा। जसु छांह छुई लेइय नींचा।**
2. **श्वपच, शबर, खस, यवन, जड़, पामर, कोल, किरात।**
3. **ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।**
4. **जो वर्णाश्रम तेलि, कुम्हारा। श्वपच, किरात, कोल, कलवारा।**
5. **आभीर, यवन, किरात, खस। श्वपचादि अति अध रूप जे।**
6. **कपटी, कायर, कुमति कुजाती। लोक, वेद, बाहर सब भांति।**

7. यह हमारि अति बड़ि सेवकाई। बेहिं न वामन वसन चुराई।
हम जड़ जीव, जीव गन घाती, कुटिल, कुचाली, कुमति कुजाती।
8. अधेम जति मैं विद्या पाए। भयउ यथा अहि दूध पिआये।
मानी, कुटिल कुभाग्य, कुजाति। गुरु कर द्रोह करहुं दिन राती।
9. अति दयाल गुरु स्वल्पान क्रोध। पुनि पुनि मोहि सिखाव सुवोधा।
जेहि ते नीच बड़ाई पावा। सो प्रथमहि हठि ताहि नसावा।
धूम अनल सम्भव सुनु भाई। सेहि बुझाय धन पदवी पाई।
रज पग नरी निरादर रहई। सब कर पद प्रहार नित सहई।
मरुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई। पुनि नृप नयन किरीअिन परई।
10. अब जन करहि बिप्र अपमाना, जानेस सन्त अनन्त समाना।
11. द्विज निन्दक बहु नरक भोग करि.
जग जनमहिं बायस शरीर धरि।

6. रामचरित मानस में अपमानित नारी बाल काण्ड

1. सुनहु सती तब नारि सुभाऊ। संशय अस न धरि उर काऊ।
2. सती कीन्ह चल तरहुं दुराऊ। देखऊ नारि स्वभाऊ प्रभाऊ।
3. किन्ह कपट में सम्भ सुन नारि सुहज जड़ अग्य।
4. नाथ उमा मम प्रान सम, ग्रह किंकरी करेहु।
क्षमहु सकल अपराध अब। होहि प्रसन्न वर देहु।
5. करेउ सदा शंकर पद पूजा। नारि धर्म पति देव न दूजा।
6. कत विधि सृजी नारि जग माहि। पराधीन सपनहुं सुख नाहि।
7. जदपि जोषिता नहिं अधिकारी। दासी मन, क्रम, वचन तुम्हारी।
8. अब मोहि आपन किंकर जानी, जदपि सहज जड़ नाहि अयानी।
9. चले जता मुनि दीन्ह दिखाई, पुनि ताड़का क्रोध करि धाई।
एकहि बाण प्राण हर लीन्हा। दीन जान तेहि निज पद दीन्हां।
10. चरण कमल रज चाहती, कृपा करहु रघुवीर।
मैं नारि अपावन, प्रभु जग पावन।
परसि जासु पद पंकज धूरी। तरी अहिल्या कृत अध भूरी।
11. जे परसि मुनि बनिता लही। गति रही जो पातक मई।
12. करि लोक, वेद विधानु, कन्या दानु नृप भुषत दियो।

13. कहि न जाइं कछु दाइज भूरी, रहा कनक मणि मंडप पूरी।
कंबल, वसन विचित्र पटोरे। भांति-भांति बहुमोल न थोरे।
गज, रथ, तुरग, दास अरु दासी। धेनु अलंकृत काम दुहासी ॥
14. बहुरि बहुरि भेटहि मन्तारी। कहहिं विरच रची कृत नारी।
15. तुलसी सीलु सनहे सहित, निज किंकरी करि मानवी।
16. नाथ मन्थरा मन्दमति, चेरी कैकेई केरि।
अजस पिटारी ताहि, कहि, गई गिरा मति फेरि॥
17. करई विचारू, कुबुद्धि, कुजाति। होई अकाज कवनि विधि राती।
देखि लागि मधु कुटिल किराती, जिमि गई तकई खेउ केहि भांति।
18. उत्तर देह नहिं लेई उसासू। नारि चरित करि ढारइ आंसू।
19. काने, खोटे, कुबेर, कुटिल कुचालि जनि।
तिय विशेष पुनि चेरि कहि, भरतु मातु मुसकानि।
20. नारि चरित चलनिधि अवगाहू।
सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ, सब विधि अगम अगाध दुराऊ।
निज प्रतिबिम्ब वरुक ग्राहि जाई, जानि न जाई नारि गति भाई
21. बिधिहु न नारि हृदय गति जानी,
सकल कपट अध अवगुन खानी।

आयटम नं. 36

राम की सम्पूर्ण मंडली में इस प्रकार के धूर्त, ठक, अधर्मी, विश्वासघात तथा भ्रातृद्रोही भरे पड़े थे तो भी वे देवता माने गए हैं। किन्तु रामायण की कथा के अनुसार इन कथित दैवीशक्ति के विरोधियों (सुग्रीव आदि सभी) को सत्यवादी और सभ्य कहकर उनकी प्रशंसा की गई है।

8. हनुमान

1. कामिल बुल्के कृत, रामकथा, अनु. 60, 696 से 699, 578, 579 आदि के अनुसार हनुमान की सहस्त्रों स्त्रियां विभिन्न ग्रंथों के आधार पर थीं। इनके अतिरिक्त विभिन्न स्त्रियों के साथ अनुचित संभोग करके उनसे पुत्रोत्पत्ति की।
वाल्मिकी रामायण युद्ध काण्ड सर्ग 128/43-44 के अनुसार राम आगमन की सूचना की प्रसन्नता में भरत ने पुरस्कार में हनुमान को

एक लाख गाएं, एक सौ गांव, वस्त्र भूषणों से युक्त जिनका रंग सोने के समान होगा, उन सुन्दर नाक और सुन्दर जांघों वाली श्रेष्ठ कुल ते उत्पन्न सोलह कन्याएं पत्नी बनाने के लिए दी।

2. आनन्द रामायण (1.99.25.27) के अनुसार हनुमान सीता की खोज में लंका गए। वहां उन्होंने दीपक बुझा दिया। इसी ग्रंथ (1.9.62.63) के अनुसार राक्षसनियों को नंगा किया। रावण के वस्त्र विभीषण के पलंग पर रख दिए।—रामकथा अनु. 579

   तत्वसंग्रह रामायण (5-3), पाश्चात्य वृत्तान्त नं. 1, पृ. 96 रामकेर्ति (सर्ग 6) और राम जातक के अनुसार भी हनुमान के औाद्र व्यवहार के वर्णन है।—रामकथा अनु. 598

3. कृतिवास रामायण के अनुसार ठगी द्वारा रावण का ब्रह्मास्त्र और सेरीसम के अनुसार खड्ग हनुमान ने मन्दोर से प्राप्त किया। आदि जिससे रावण शक्तिहीन हो गया। —रामकथा अनु. 598

4. वाल्मिकी रामायण किष्किन्धा काण्ड सर्ग 44 में राम व सुर्गी ने हनुमान को केवल सीता की खोज की आज्ञा दी थी, परन्तु उसने सुन्दर काण्ड सर्ग 54 के अनुसार लंका में आग लगा दी और अन्य उत्पात भी किया।

5. भावार्थ रामायण (4-1) के अनुसार हनुमान लंगोटी लगाए पैदा हुए। —रामकथा अनु. 512

   हिकायत सेरीराम के अनुसार राम के पुत्र हनुमान दोनों कानों में कुंछल पहने पैदा हुए। —रामकथा अनु. 657

   तुलसीदास कृत हनुमान चालीसा में बाल समय रवि लील लियो, तब तीनहुं लोक भयऊ अंधियारी।

   कृतिवास रामायण (6, 128) के अनुसार हनुमान ने अपनी छाती को नखों से चीर कर छाती के भीतर राम का नाम लिखा हुआ लक्ष्मण को दिखाया। —रामकथा अनु. 706

9. सुग्रीव

1. वाल्मिकी रामायण युद्ध काण्ड सर्ग 75 के अनुसार सुग्रीव ने हनुमान आदि को रात में लंका पर चढ़ाई करने व उस रात में ही जलाने की

   आज्ञा मानवता विरुद्ध दी।

2. वाल्मीकि रामायण किष्किन्धा काण्ड सर्ग 29/4 के अनुसार सुग्रीव ने बालि वध के बाद तारा से विवाह किया।

10. विभीषण

1. सरस्वती कंठाभरण (5, 394) आदि विभिन्न ग्रंथों में विभीषण ने मन्दोदरी (रावण की विधवा पत्नी) से विवाह किया। —रामकथा अनु. 572

परिशिष्ट

स्पष्टीकरण

विभिन्न पाठकों ने स्पष्टीकरण मांगे। उनमें से कुछ स्पष्टीकरण संक्षिप्त में लिखे जाते हैं–

1. आयटम नं. 5 सीता की जन्म कथा।

(1) जनकात्मजा सीता–पउमचरिय (पर्व 26) के अनुसार जनक की विदेहा पत्नी के गर्भ से सीता और भामण्डल (बहिन व भाई) जुड़वा पैदा हुए। भामण्डल को पैदा होते ही एक देवता ने उठाकर किसी अन्य राजा के यहां छोड़ दिया।–रामकथा अनु. 407

(2) भूमिजा सीता–वाल्मिकी रामायण बाल काण्ड सर्ग 66 के अनुसार राजा जनक यज्ञ के लिए भूमि तैयार करने हेतु हल चला रहे थे। उन्हें भूमि में सीता मिली। वाल्मिकी रामायण को गौड़ीय (3, 4) व पश्चिमोत्तरीय (3, 2) पाठों के अनुसार हल जोतते समय जनक के आकाश में सुन्दर मेनका नामक अप्सरा को देखा और मन में सन्तानार्थ उसके साथ संभोग करने की इच्छा उत्पन्न हुई। आकाशवाणी हुई कि मेनका के समान अति सुन्दर एक पुत्री होगी। आगे बढ़कर तुरन्त भूमि से सीता निकल पड़ी। पुनः आकाशवाणी हुई "मनकायाः समुत्पन्न कन्येयं मानसी तव" अर्थात मेनका से उत्पन्न वह कन्या तुम्हारी मानस पुत्री है। –रामकथा अनु. 409

कृतिवास रामायण के अनुसार जनक किसी समय अति सुंदरी उर्वशी को देखकर काम पीड़ित हो गए। उनका वीर्य भूमि पर गिर पड़ा। पृथ्वी गर्भवती हो गई। बहुत समय बाद हल जोतते समय उन्हें पृथ्वी में एक डिम्ब मिला, उसमें से सीता निकली।

नोट–यह प्रसंग पूर्णचंद्र दे, पूर्णचंद्र शील, ताराचंददास, वंशवासी प्रेम व सुबोधचंद्र मजूमदार आदि के संस्करण में मिलता है।–रामकथा अनु. 409

3. रावण सीता–वसुदेवहिण्ड के अनुसार मन्दोदरी के शरीर का लक्षण जानने वाले विद्वानों ने कहा–"इसकी पहली सन्तान से कुल नाश हो जाएगा।" रावण जो कि इस घटना को जानता था। मन्दोदरी के पिता विद्याधर वंशीय राजा मय से मन्दोदरी के साथ विवाह का प्रस्ताव रखा। विवाह के पश्चात उत्पन्न प्रथम पुत्री को रावण ने रत्नों के साथ मंजुषा में बंद करके मंत्री को आदेश दिया कि इसे कहीं छोड़ दे। मंत्री ने इसे जनक के खेत में रख दिया जो कि हल जोतते समय मिली। गुणभद्र के उत्तर पुराण के अनुसार मारीच के अनुसार मारीच के जनक के राज्य में उस मंजुषा को गाड़ दिया था।
पुराण (अध्याय 42, 62) के अनुसार मन्दोदरी की पुत्री सीता अति सुन्दर थी, जो बाद में जमीन से निकली।

सीता मन्दोदरीगर्भे सम्भूता चारूरूपिणी ॥
क्षेत्रजा मनयाप्यस्य रावणस्य रघूत्तम ॥ –रामकथा अनु. 412

4. पद्मजा सीता–क्षेमेन्द्र कृत दशावतार चरित्र के अनुसार एक जंगल के तालाब के किनारे रावण ने लिंग स्थापित किया। शिव के पूजन हेतु तालाब में कमल के फूल लेने गया–तो उसे सोने के कमल पर एक कन्या दिखाई दी। उसे रावण ने पुत्री के रूप में ग्रहण कर मन्दोदरी को दे दिया। कुछ दिन बाद नारद ने मन्दोदरी से कहा–यह लड़की रावण का प्रेम पात्री बनेगी (कन्या भविष्यति अभिलाष भूमि चपलेन्द्रस्य)" यह सुनकर मन्दोदरी ने उस कन्या को सोने की पेटी में बन्द करवा कर किसी दूर देश में गड़वा दिया, जो जनक को हल जोतते समय मिली। –रामकथा अनु. 418
वाल्मिकी रामायण उत्तर काण्ड सर्ग 17 के अनुसार बृहस्पति के पुत्र ब्रह्मर्षि कुशध्वज की कन्या विष्णु को पति बनाने के लिए जंगल में तप कर रही थी। उसका अति सुन्दर रूप देखकर उससे संभोग करने के लिए रावण पुष्पक विमान से नीचे उतरा। इनकार करने पर रावण ने वेदवती के सिर के बालों को पकड़ा। तपस्विनी वेदवती के हाथ ने

तलवार की तरह बालों को काट दिया और अग्नि में जलकर मर गई–"मैं अगले जनम में तेरी मौत का कारण बनकर विष्णु सहित आऊंगी।

वाल्मिकी रामायण टीकाकार गोविन्द राज के अनुसार रावण ने कुछ दिन पश्चात एक दिन वेदवती को उसी जंगल में कमल के पत्ते पर कन्या के रूप में बैठे देखा। वह उस कन्या को लंका ले गया। लक्षण जानने वाले मंत्रियों ने कहा–"हे रावण यह कन्या आपकी मृत्यु का कारण बनेगी।" रावण ने उसे समुद्र में बहा दिया, जो किसी व्यक्ति द्वारा जनक के पास पहुंच जाती है।–रामकथा अनु. 419

नोट : श्लोक नं. 33 के बाद के क्षेपक में उपरोक्त कथा लिखी है।

5. रक्तजा सीता–अद्‌भुत रामायण के अनुसार रावण दिग्विजय के लिए निकला। दण्डकारण्य के तपस्वियों ने धन की कमी के कारण करके रूप में कुछ खून की बूंदे एक पात्र में दी। गुत्समद ऋषि के मन्त्र के प्रभाव से लक्ष्मी उस पात्र में मौजूद थी। रावण ने लंका में उस पात्र को मन्दोदरी की सुरक्षा में रखवा दिया। रावण दूसरी विजय यात्रा में चला गया। मन्दोदरी ने उसे पी लिया। वह गर्भवती हो गई। तीर्थयात्रा को निकली। मन्दोदरी ने गर्भ गिराकर भ्रूण (मांस का लोथड़ा) कुरुक्षेत्र में गाड़ दिया, जो जनक को हल जोतते समय कन्या रूप में मिला। –रामकथा अनु. 420
6. अग्निजा सीता–आनन्द रामायण के अनुसार पद्माक्ष ने कठोर तपस्या द्वारा लक्ष्मी को पुत्री के रूप में प्राप्त करके उसका नाम पद्मा आग में जल कर मर गई। कुछ दिन पश्चात उसे अग्नि कुंड से निकलती हुई रावण ने देखा। पद्मा पुनः अग्निकुंड में कूद पड़ी। रावण अग्नि बुझा कर पांच रत्नयुक्त राख की ढेरी को एक पेटी में लेकर लंका में आया। वहां उसे कोई उठा न सका। खोलने पर कन्या निकली, जो मन्दोदरी की सलाह से मिथिला में गाड़ दी गई। ब्राह्मण के शूद्र हलवाहे को पेटी मिली। शूद्र हलवाहे ने वह पेटी अपने मालिक ब्राह्मण को दी। ब्राह्मण ने उसे जनक को दी। उस पेटी में जो कन्या निकली वही सीता है। –रामकथा अनु. 422
7. फलजा सीता–ब्रह्मचक्र के अनुसार रावण की वाटिका में एक वृक्ष से कन्या उत्पन्न हुई। बाग के माली ने उसे रावण को दी। रावण को

देखकर कन्या ने यक्षिणी का रूप धारण कर लिया। रावण ने उसे घड़ा में बन्द करके समुद्र में बहा दिया। घड़ा समुद्र के किनारेवाले कन्नक नामक नगर के पास पहुंचा। एक तपस्वी ने उस नगर के निःसंतान राजा को यह भेद बता दिया। राजा ने उस घड़ा को निकाला। उनमें से कन्या निकली। वही सीता है।–रामकथा अनु. 425

8. दशरथात्मजा सीता– बौद्ध ग्रन्थ दशरथ जात खण्ड 4 के अनुसार राम, लक्ष्मण तथा सीता दशरथ की रानी कौशल्या की सन्तानें हैं। उस राणी के मर जाने के बाद नई रानी कैकेई से भरत नामक पुत्र पैदा हुआ। राम, लक्ष्मण व सीता बनवास में भाई बहन के रूप में रहे। वनवास से लौटने पर राम व सीता का आपस में विवाह हुआ। –रामकथा अनु. 51 व 427

नोट : दशरथ जातक में दशरथ को वाराणसी का राजा बताया गया है।

9. भाट की बेटी सीता–भारतीय साहित्य आगरा वर्ष 2, अंक 3, पृष्ठ 74 के अनुसार ब्रज के लोकगीतों में पाया जाता है, कि सीता भाट की बेटी है। शिकार खेलते हुए राग सीता का परिचय प्राप्त कर अपने पिता दशरथ से सीता के पिता को पत्र लिखाते हैं। तब सीता का पिता कहलाता है :

   "हम तौ के भाट भिखारिया और तुम राजा महाराज। हम तुम्हें कैसे होइगी सजनई। –रामकथा अनु. 407

2. आयटम नंबर 22, लव कुश की जन्मकथा

विभिन्न ग्रन्थों से स्पष्ट है, कि लव व कुश जुड़वा पैदा नहीं हुए केवल लव पहले पैदा हुए।

3. आयटम नंबर 23, रावण को दिए गए श्रापों की कथा

पहले वाला श्राप दूसरी घटना के समय निष्फल सिद्ध हुआ, इससे स्पष्ट सिद्ध है, कि किसी पर किसी के श्राप का कोई असर नहीं होता हैं घटना या घटनाएं अब जब समाप्त हो जाती है, तब पुरानी श्राप वाली बात झूठी लिख दी जाती है।

4. आयटम नंबर 26 सीता चरित्र में जयन्त की कथा

भारत के कमांडर–इन चीफ को पुराने जमाने में इन्द्र कहा जाता था उस इन्द्र का मन चला पुत्र जयन्त था। जयन्त अपने काम के लिए कौवा की भांति चतुर व चालाक था। जयन्त कौवा नहीं था। वास्तविक कौवा प्रकृति के नियमों के विरुद्ध कभी भी जीवित व्यक्तियों का मांस खाता हुआ आज तक विदेशियों को कथाओं में भी नहीं देखा गया, वरना अब तक विश्व के करोड़ो कौवे विश्व के करोड़ों जीवित पुरुषों, स्त्रियों, बच्चों और बूढ़ों को खा जाते। सीता अपने द्वारा अपनी छाती लहु-लुहान होने से बच सकती थी, नहीं बचाया। हिफाजत-खुद- इख्त्यारी (स्वयं-रक्षा) के अन्य अधिकारों का भी इस्तेमाल नहीं किया। सीता की लीला सीता ही जाने।

5. आयटम नंबर 26 सीता में सीता का लक्ष्मण को राम की मदद के लिए न जाने पर उनसे मार्मिक वचन कहना। वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 40/27 में लक्ष्मण से कहा–"राम से बिछुड़ कर मैं क्षण भी न जिऊंगी।

   क्षण और भी भाषा के दो शब्द ध्यान देने योग्य है। जो सीता क्षणभर भी राम से बिछुड़ कर नहीं जीवित रह सकती थी, वह लगभग एक वर्ष राम से बिछुड़ कर लंका में कैसे जीवित रही। इसमें सिद्ध है, कि सीता की बात टिकाऊ नहीं थी।
6. आयटम नंबर 26 सीता चरित्र में जटार्यु की कथा–सीता को मददगार जटायु की रक्षा करना चाहिए थी। सीता ने उसकी रक्षा की कोई बात किसी ग्रन्थ के अनुसार नहीं कही। बल्कि जुटायु को मार डालने की तरकीब रावण को बताई। इससे स्पष्ट है, कि सीता जान बूझकर रावण के साथ गई।
7. आयटम नंबर 35 राम चरित्र में अहिल्या की कथा।

   महाभारत से सिद्ध हो गया कि अहिल्या पत्थर बनकर मार्ग में नहीं पड़ी थी। वाल्मिकी रामायण जबरन अंधविश्वास की बात मानने के लिए बाध्य करती है।
8. आयटम नंबर 35–राम चरित्र में राम द्वारा पहाड़ों, नदियों, बेर, कुक्कुट, बगुला व गिलहरी आदि से सीता का पता पूछने की कथा।

1. वाल्मिकी रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 64 के अनुसार राम ने हिरण, पहाड़ व गोदावरी नदी आदि से सीता का पता पूछा कहा हे पहाड़। तू तेरी बात का उत्तर नहीं दे रहा। इसलिए मैं तुझे अपने बाणों की आग से जलाकर भस्म कर दूंगा।"

   पुनः कहा–"लक्ष्मण! आज मैं गोदावरी नदी को सुखा दूंगा। यदि यह मुझे सीता का पता न बताएगी, तो मैं ऐसा अवश्य करूंगा।" ध्यान देने योग्य बात है कि, जब पहाड़ को नहीं जलाया तथा गोदावरी नदी को क्यों नहीं सुखाया। स्पष्ट है कि, ऐसा नहीं किया जा सकता। केवल शब्दों की सजावट है।
2. बलरामदास रामायण के अनुसार से राम ने पम्पा सरोवर के पास चकवा-चकवी से संभोग रत अवस्था में सीता का पता पूछा। चक्रवाक ने निंदा करते हुए कहा–"तुम इतना भी नहीं जानते कि, इस समय बाधा डालना अनुचित है।" राम ने श्राप दिया कि, तुम दोनों का मिलन कभी नहीं होगा। चक्रवाक की प्रार्थना पर राम ने श्राप में संशोधन किया कि, दिन में मिलन व रात में अलगाव रहेगा। –रामकथा अनुच्छेद 474
3. बलरामदास रामायण के अनुसार बगुला ने सीता का पता बताया। राम ने बगुला को वरदान दिया कि, बरसात में तुम्हारी मादा तुम्हारे लिए भोजन इकट्ठा कर दिया करेगी। –रामकथा अनुच्छेद 474
4. बलरामदास रामायण के अनुसार कुक्कट (मुर्गा) ने कहा–"रावण सीता को ले गया है।" राम ने वरदान स्वरूप कहा कि, तुम्हारे सिर पर सप्त शाखा लाल मुकुट रहेगा। जो तुमको मारेगा, वह मेरा शत्रु होगा।

नोट : इसीलिए संभवतः उड़ीसा में कुक्कुट को राम पक्षी कहते हैं। –रामकथा अनु. 474

5. एम.सी. मित्र जर्नल डिपार्टमेंट ऑफ लेटर्स कलकत्ता, भाग 4, पृष्ठ 303-304 के अनुसार मुण्डा व विर्होर जाति की रामकथाओं के अनुसार सीता की खोज में जब बगुला ने राम की सहायता करना अस्वीकार कर दिया, तब राम ने दण्ड-स्वरूप उसकी गर्दन खींच कर लम्बी कर दी। बेर वृक्ष ने सीता की साड़ी के टुकड़े दिए। राम ने उसे

अमरत्व का वरदान दिया। गिलहरी ने सीता के जाने का रास्ता बताया। राम ने उसकी पीठ पर तीन रेखाएं खींच दी। –रामकथा अनु. 273

6. सेरीराम के अनुसार राम ने पुरस्कार-स्वरूप बगुला की गर्दन लम्बी कर दी। –रामकथा अनु. 474
7. संन्यासी रामकथा के अनुसार राम ने गिलहरी की पीठ पर तीन रेखाएं बना दीं और कहा कि चाहे कितनी ऊंची जगह से गिरे, चोट नहीं लगेगी। –रामकथा अनु. 474
8. आयटम नं. 26 में हनुमान चरित्र की विशेष कथा

1. हनुमान बानर क्षेत्रिय आदिवासी थे। द्रविड़ भाषा का शब्द है–आण-मति, आण-नर व मति कपि। जिसका अर्थ है–नर कपि। –रामकथा अनु. 103, 711
2. पहले नाम कुछ और था जब हनुमान पहाड़ पर से गिरे, तब इनकी हनु (ठोढ़ी) टेढ़ी हो गई, तब इन्द्र ने इनका नाम हनुमान रखा। –रामकथा अनु. 711
3. गुणभद्र के उत्तर पुराण (पर्व 668-280) के अनुसार हनुमान अपना शरीर अणु के समान छोटा बना सकते थे इसलिए नाम अणुमान पड़ा। –रामकथा अनु. 711
4. वाल्मिकी रामायण उत्तर काण्ड सर्ग 35 के अनुसार केसरी सुमेरू पर्वत पर राज्य करते थे। इनकी पत्नी अंजनी के गर्भ में वायु ने शंकर के वीर्य से हनुमान को पैदा किया। पैदा होते ही हनुमान सूर्य को फल समझकर उसे खाने के लिए दौड़े। उस दिन सूर्य ग्रहण था। राहु ने समझा मेरा आहार समाप्त हुआ जाता है। उसने इन्द्र से फरियाद की। इन्द्र ने हनुमान को वज्र मारा। इस वज्र की चोट से अनुमान की बाई हनु टूट गई। इन्द्र ने हनुमान नाम रखा।
5. वाल्मिकी रामायण किष्किन्धा काण्ड सर्ग 66 के अनुसार सुमेरू पर्वत के राजा केसरी की पत्नी अंजनी के साथ वायु ने जंगल में संभोग किया। इस प्रकार हनुमान पैदा हुए।
6. पुनः सर्ग 67/32 के अनुसार हनुमान को केसरी व वायु का पुत्र कहा गया है।

7. मेकानिफ, की सिख रिलीजन भाग 6, पृष्ठ 52 के अनुसार गौतम ने गंगा स्नान से वापस आकर अपनी लड़की अंजनी से इंद्र की ओर इशारा करते हुए पूछा–"यह कौन है?" बेटी अंजनी ने उत्तर दिया ('माजार' अर्थात माजार या मां का जार) इस दो अर्थ वाली बात अर्थात मार्जार का मतलब है–बिल्ली व माता का यार (प्रेमी) को सुनकर गौतम ने अपनी पुत्री को गर्भवती हो जाने का श्राप दिया। –रामकथा अनु. 347
8. ई.एण्डहोवेन–फॉकलोर ऑफ गुजरात इंडियन एंटीक्वेरी भाग 40, सप्लीमेंट पृ. 54 के अनुसार उपरोक्त श्राप के कारण शिव से वरदान पाने के लिए अंजनी तपस्या करने लगी। शिव की आज्ञा से नारद ने अंजनी के कान में मंत्र दिया। अंजनी गर्भवती हो गई और हनुमान को जनम दिया। –रामकथा अनु. 672
9. भविष्य पुराण (प्रति सर्ग पर्व, चतुर्थ खण्ड 10, 31-36) के अनुसार गौतमी की पुत्री का नाम अंजनी है। पती का नाम केशरी है। शिव ने रूद्र तेज के रूप में केसरी में प्रवेश किया–केसरी ने अंजनी के साथ रमण किया। इतने में वायु ने भी केशरी के शरीर में प्रविष्ट होकर अंजनी के साथ रमण किया। अंजनी गर्भवती होकर हनुमान को जन्म दिया। –रामकथा अनु. 673
10. रामकथा अनु. 673 के अनुसार एक ऋषि ने कहा–"इस समिपी स्वच्छ जल वाले तालाब में स्नान करनेवाला व्यक्ति पशु बन जाता है और उस पंक्ति जलवाले तालाब में नहाने से पुनः आदमी बन जाता है। राम व सीता ने एक दिन स्वच्छ जल व तालाब में सनान किया। दोनों वानर व वानरी बन गए, संभोग किया। वानरी रूप सीता गर्भवती हो गई। लक्ष्मण ने दोनों को फांसकर पंकित जलवाले तालाब में डुबो दिया। वे पुनः राम व सीता बन गए। राम ने सीता का भ्रूण अर्थात मांस का लोथड़ा निकाल लिया। वायु ने सुई की नोक पर रखकर अंजनी के मुख में रख दिया। अंजनी गर्भवती हो गई। हनुमान कुंडल पहने पैदा हुए।
11. सेरीराम के अनुसार राम अंजनी को देखकर मोहित हो गए। उनका वीर्य पतन हो गया। राम ने उसे दोना रखकर वायु के द्वारा अंजनी

के मुख में रखवा दिया। अंजनी गर्भवती हुई, हनुमान पैदा हुए जो राम पुत्र कहलाए। –रामकथा अनु. 675

12. विर्होर रामकथा के अनुसार सीताहरण के बाद अंजनी के गर्भ में से ही राम लक्ष्मण को देखकर हनुमान चिल्ला उठे। "दादा रुकिए–मैं आपके साथ जाना चाहता हूं।" हनुमान ने जन्म लिया। राम लक्ष्मण के साथ सीता की खोज में चल दिए।"–रामकथा अनुच्छेद 512
13. वाल्मीकि रामायण उत्तर काण्ड सर्ग 36/45 के अनुसार हनुमान ने सूर्य के सामने उल्टे-उल्टे चल कर काव्याकरण विद्या पढ़ी।
14. महानाटक अंक 14 के अनुसार वाल्मिकी ने लिखा कि रावण के बाणों की मार से राम के शरीर से खून की बूंदे निकली। हनुमान ने कहा कि, मैंने नहीं देखीं। दोनों आपस में झगड़ते हुए राम के पास गए। राम ने कहा वाल्मीकि का कथन सत्य है। राम ने हनुमान से कहकर हनुमान द्वारा पत्थर की शिलाओं पर लिखी हुई रामायण को वाल्मिकी के अनुरोध पर समुद्र में फिकवा दी। राजा भोज ने उसे निकालकर पं. दामोदर मिश्र द्वारासम्पादन कराया। –रामकथा अनु. 690
15. रामकियेन अध्याय 33 के अनुसार हनुमान ने सीता की खोज करते समय हिन्दुस्तान के दक्षिणी पर्वतीय भाग की गुफा में प्रवेश करते ही पुष्पमानी अर्थात स्वयंप्रभा के संभोग किया–उसके बाद उसे स्वर्ग भेज दिया। –रामकथा अनु. 526
16. पउमचरिय (पर्व 52) के अनुसार लंका में प्रवेश करते समय हनुमान ने व्रज मुख का वध करके उसकी पुत्री लंका सुन्दरी से युद्ध किया। अन्त में दोनों एक दूसरे पर मोहित होकर रात भर प्रेम कीड़ा करते हैं। –रामकथा अनु. 536
17. मैरावण चरित्रम् अध्याय 10 के अनुसार लंका दहन के बाद समुद्र में स्नान का पसीना मछली ने निकल लिया। मछली गर्भवती हो गई। मदली के पुत्र का नाम मस्सराज है।–रामकथा अनु. 696
18. सेरीराम पातानी पाठ के अनुसार मछलियां अपनी रानी की आज्ञानुसार पुल नष्ट करने लगीं। हनुमान ने रानी के पास जाकर पुल बंधवाया। रानी के पति की गैरहाजिरी में उससे करके एक पुत्र उत्पन्न किया। –रामकथा अनु. 578

19. रामकियेन अध्याय 26 के अनुसार रावण ने अपनी नागकथा स्वर्ण मच्छा को पुल नष्ट करने के लिए भेजा। वह अपनी सेनासहित पुल नष्ट करने लगी। हनुमान स्वर्णमच्छा के पास लाए। उससे पुल बंधवाया। उसके साथ संभोग करके मच्छानु नामक पुत्र उत्पन्न किया। –रामकथा अनु. 578
20. रामकियेन अध्याय 25 के अनुसार रावण की आज्ञा से विभीषण की पुत्री बेंजकाया सीता का रूप बनाकर मृतवत बहती हुई राम ने समुद्र में देखी। विभीषण द्वारा पहचानी जाने पर राम ने हनुमान के साथ उसे लाने भेज दिया। रास्ते में हनुमान ने बेंजकाया को लुभाकर उसके साथ संभोग करके असुराफद नामक पुत्र उत्पन्न किया। –रामकथा अ. 579
21. रामकियेन के अनुसार अप्सरा श्राप-वश वानरी बन गई थी। हनुमान ने उनके साथ संभोग किया और उसकी सहातया से विरूंचउंग का वध किया।–रामकथा अ. 613
22. रामकियेन अध्याय 34 के अनुसार जिस समय रावण अपने भाई को जगाने के उद्देश्य से यज्ञ कर रहा था उस समय हनुमान ने रावण का भेष बनाकर मन्दोदरी के साथ संभोग किया। यज्ञ असफल हुआ।

आयटम नं. 36 विभीषण के शरणागत की कथा

1. वाल्मिकी रामायण युद्ध काण्ड सर्ग 15 के अनुसार जब विभीषण ने रावण से कहा, "सीता को वापस दे दो।" सर्ग 16 के अनुसार रावण ने विभीषण की बात नहीं मानी। तब विभीष्ण राम की शरण में समुद्र पर पुल बंधने के पहले ही चला गया। सर्ग 37/7 के अनुसार उसके साथ उसके चार मंत्री अनल, शरळा, सम्पाति व प्रघस (प्रमाति) भी चले गए।
2. वाल्मिकी रामायण सुन्दर काण्ड सर्ग 54/16 के अनुसार हनुमान ने सीता की खोज के समय विभीषण का घर नहीं जलाया था।
3. पद्म पुराण पाताल खण्ड (112, 220) के अनुसार इन्द्रजित के वध के बाद व सेरीराम के अनुसार समुद्र पार करने के बाद विभीषण राम की शरण में गए थे। –राम कथा अ. 571

विष्णु ने पृथ्वी पर अवतार धारण करने के पश्चात बहुत से कष्टों और यातनाओं का अनुभव किया–जिनके कारणों को आर्यों के पवित्र पुराण वर्णन करते है। वे कारण ये हैं कि–

विष्णु ने पहिले बहुत से दुराचार्य पूर्ण घृणित अमानवीय कार्य किए थे। जिसके दंड और दुष्परिणाम स्वरूप उसे उन ऋषियों, मुनियों द्वारा श्राप दिए गए–जिनके प्रति उसने अपराध किए थे। ये श्राप क्यों? क्योंकि उस विष्णु ने (बिरह) मुनि की स्त्री को मार डालने का घृणित पाप किया था।

उस (विष्णु) ने मनुष्यों के समख दिनदहाड़े जालंधर की स्त्री का सतीत्व छला तथा लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न यदि राजा दशरथ से पैदा न होकर, कथित पुरोहितों द्वारा पैदा हुए–तथापि आर्यधर्म के अनुसार कोई दोष या पाप न हुआ। यह बात उनके शास्त्रों में लिखी है, कि यदि कोई ब्राह्मण-स्त्री निःसंतान है–तो वह निश्चित दशाओं में किसी दूसरे आदमी से संतान उत्पन्न करा सकती है इस बात के प्रमाण तथा समर्थन के लिए आर्यों की दूसरी पुस्तक महाभारत देखी जा सकती है। बिना यज्ञ के बहाने अपने परिवार के गुरु 'व्यास' द्वारा बहुत सी विधवा स्त्रियां अनुचित एवं शास्त्र विरुद्ध संबंधों से माताएं बन गई थी। धृतराष्ट्र व पांडु इसी कोटि की संताने थी। महाभारत में इस प्रकार के बहुत से जन्म पढ़ने को मिलते है।

सीता को प्राप्त करने के लिए सीता की माता ने किसी अपरिचित मनुष्य से संभोग किया था और उत्पन्न बच्चे को एक जंगल में फेंक दिया था। सीता ने स्वयं स्वीकार किया है, कि मेरे माता-पिता के अज्ञात होने के कारण मेरा विवाह विलंब से हुआ है।

पुराणों में एक विचित्रता और पढ़ी जाती है, कि कई स्त्रियों ने मनुष्यों से नहीं–बल्कि जानवरों से भी गर्भ धारण किए थे।

इन बातों से प्रकट है, कि संतान उत्पन्न कर सकने में 'यज्ञ' का कोई महत्त्व तथा शक्ति नहीं है–बल्कि ये इच्छित आनंद, उत्सव मनाने, शराब पीने और गोश्त खाने के साधन-मात्र थे।

अब हम रामायण की विशेषताओं पर ध्यान दें–जैसा कि हम उसमें पढ़ते है।

19. रामकियेन अध्याय 26 के अनुसार रावण ने अपनी नागकथा स्वर्ण मच्छा को पुल नष्ट करने के लिए भेजा। वह अपनी सेनासहित पुल नष्ट करने लगी। हनुमान स्वर्णमच्छा के पास लाए। उससे पुल बंधवाया। उसके साथ संभोग करके मच्छानु नामक पुत्र उत्पन्न किया। –रामकथा अनु. 578
20. रामकियेन अध्याय 25 के अनुसार रावण की आज्ञा से विभीषण की पुत्री बेंजकाया सीता का रूप बनाकर मृतवत बहती हुई राम ने समुद्र में देखी। विभीषण द्वारा पहचानी जाने पर राम ने हनुमान के साथ उसे लाने भेज दिया। रास्ते में हनुमान ने बेंजकाया को लुभाकर उसके साथ संभोग करके असुराफद नामक पुत्र उत्पन्न किया। –रामकथा अ. 579
21. रामकियेन के अनुसार अप्सरा श्राप-वश वानरी बन गई थी। हनुमान ने उनके साथ संभोग किया और उसकी सहातया से विरूंचउंग का वध किया।–रामकथा अ. 613
22. रामकियेन अध्याय 34 के अनुसार जिस समय रावण अपने भाई को जगाने के उद्देश्य से यज्ञ कर रहा था उस समय हनुमान ने रावण का भेष बनाकर मन्दोदरी के साथ संभोग किया। यज्ञ असफल हुआ।

आयटम नं. 36 विभीषण के शरणागत की कथा

1. वाल्मिकी रामायण युद्ध काण्ड सर्ग 15 के अनुसार जब विभीषण ने रावण से कहा, "सीता को वापस दे दो।" सर्ग 16 के अनुसार रावण ने विभीषण की बात नहीं मानी। तब विभीष्ज्ञण राम की शरण में समुद्र पर पुल बंधने के पहले ही चला गया। सर्ग 37/7 के अनुसार उसके साथ उसके चार मंत्री अनल, शरळा, सम्पाति व प्रघस (प्रमाति) भी चले गए।
2. वाल्मिकी रामायण सुन्दर काण्ड सर्ग 54/16 के अनुसार हनुमान ने सीता की खोज के समय विभीषण का घर नहीं जलाया था।
3. पद्म पुराण पाताल खण्ड (112, 220) के अनुसार इन्द्रजित के वध के बाद व सेरीराम के अनुसार समुद्र पार करने के बाद विभीषण राम की शरण में गए थे। –राम कथा अ. 571

4. महावीर चरित्र (5, 30) के अनुसार खरदूषण के वध के बाद विभीषण लड़का को छोड़कर अपने मित्र सुग्रीव के यहां रहने लगे थे। विभीषण ने राम व सुग्रीव की भेंट के पहले ही राम के पास आत्म समर्पण का पत्र भेजा था।—रामकथा 571
5. पउमचरियं (55, 22) के अनुसार विभीषण तीन अक्षौहिणी सेना के साथ राम की शरण में आए थे। —रामकथा अ. 571
6. भावार्थ रामायण (5, 38) व आन्नद रामायण (1, 10, 41, 45) में विभीषण की शरणागति के बाद हनुमान ने समुद्र की रेती में नई लंका बनाई। विभीषण का राजतिलक हुआ। —रामकथा अनु. 571

आयटम नंबर 36 में अंगद की कथा

1. वाल्मिकी रामायण युद्ध काण्ड 41/68 के अनुसार राम ने दूत अंगद से कहा—"रावण से कहना कि, यदि मेरी शरण में आकर सीता को नहीं देगा, तो विभीषण को लंका का राजा बनाया जाएगा।"
2. महानाटक (अंक 8-3) के अनुसार अंगद ने रावण के सिंहासन पर चढ़ कर रावण का अपमान किया। —रामकथा अनु. 585
3. आनन्द रामायण 1, 10, 221, तोरवे, रामायण 6, 10 भावार्थ रामायण 6,6 कृतिवास रामायण 6, 15, सरलदास महाभारत द्रोण पर्व, रामकेर्ति सर्ग 8, रामकियेन अध्याय 26 तथा कविचन्द्र कृत अंगद रायबार के अनुसार अंगद रावण की सभा में पहुंचकर अपनी पूंछ का कुंडल रावण के सिंहासन से भी ऊंचा बनाकर बैठ गए। —रामकथा अनु. 585
4. नरसिंह पुराण (15, 20) सरलदास महाभारत (द्रोण पर्व), आनन्द रामायण (1, 10, 236) तोरवे रामायण (6, 10) भावार्थ रामायण (6, 6) रव रामकेर्ति (सर्ग 8) के अनुसार अंगद ने रावण पर प्रहार किया। —रामकथा अनु. 585
5. कृतिवास रामायण (6, 17) भावार्थ रामायण (6, 6) बलरामदास रामायण वरामचन्द्रिका (16, 34) के अनुसार अंगद व रावण का मल्लयुद्ध हुआ। अंगद रावण का मुकुट ले आया। —रामकथा अनु. 585

6. सरलदास महाभारत के अनुसार अंगद ने मन्दोदरी का अपमान किया—रामकथा अनु. 585
7. बलरामदास रामायण के अनुसार अंगद के जाने के बाद हनुमान राम का बाण लेकर रावण को धमकी देने गए थे।—रामकथा 595
8. सेरीराम के अनुसार कुम्भकरण वध के बाद राम के दूत हनुमान से रावण ने कहा कि सीता को इस शर्त पर लौटा दूंगा, कि राम अपने भाई लक्ष्मण को बांध कर लंका भेज दें, क्योंकि उसने मेरी बहन सूर्पणाखा को कुरूप किया है। —रामकथा अनु. 5856
9. रामचन्द्रिका (16, 32) के अनुसार रावण ने कहा—सीता को इस शर्त पर लौटा दूंगा कि राम सुग्रीव को मारकर आनंद को राजा बना दें। विभीषण को बांधकर लंका भेज दें, सेतु नष्ट कर दें, हनुमान की पूंछ जला दी जाए और रूद्र की पूजा करें। —रामकथा अनु. 585
10. महानाटक (14, 1-2) के अनुसार रावण ने अपने दूत लोहिताक्ष को राम के पास इस शर्त पर भेजा, कि यदि राम परशुरामवाला परशु मुझे दे दें—तो बदले में सीता को लौटा दूंगा।—रामकथा अनु. 597

सेतु बांधने की कथा

1. वाल्मिकी रामायण युद्ध काण्ड सर्ग 22 के अनुसार राम की उपस्थिति में सुग्रीव की निगरानी में बानरी सेना ने पहिले दिन चौदह योजन, दूसरे दिन बीस योजन, तीसरे दिन इक्कीस योजन, चौथे दिन बाईस योजन व पांचववे दिन तेईस योजन पुल बांधा। इस प्रकार पांच दिन में कुल एक सौ योजन पुल बांधा गया।
2. विमलसुरि के पउमचरियं पर्व 54 के अनुसार राम मददगार राजा नल ने समुद्र को हराया। —रामकथा अनु. 73
3. हेमचन्द्र कृत जैन रामायण सर्ग 7 के अनुसार राम-लक्ष्मण आकाश मार्ग से लंका गए। राजा नल और राजा नील ने मिलकर राजा समुद्र और राजा सेतु को पराजित किया। —रामकथा अनु. 573
4. गुणभद्र कृत उत्तर पुराण सर्ग 68/52 के अनुसार राम व युवराज अंगद ने अनेक राजाओं को परास्त किया। —रामकथा अनु. 473
5. अभिषेक नाटक अंक 4 अनुसार वरुण ने समुद्र का जल दो भागों में बांट दिया। राम की सेना समुद्र तल से निकल गई। —रामकथा अनु. 573

6. हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड 15 जनवरी 1961 में वर्णित जावा के राम सीता नाटक के अनुसार समुद्र दो भागों में बांटा गया। राम सेनासहित लंका पहुंच गए। –रामकथा अनु. 573
7. पद्म पुराण पाताल खण्ड अध्याय 112 के अनुसार शिव के अजगव धनुष को राम ने समुद्र में फेंक दिया। उस पर सम्पूर्ण सेनासहित राम ने समुद्र को पार किया। –रामकथा अनु. 573
8. विर्होर रामकथा के अनुसार हनुमान नू पूंछ बढ़ा दी। राम व लक्ष्मसण ने उसी के द्वारा समुद्र पार किया। –रामकथा अनु. 573
9. पाश्चात्य वृत्तांत नंबर,.1 व 13 के अनुसार हनुमान की पूंछ द्वारा राम लक्ष्मण ने समुद्र को पार किया। –रामकथा अनु. 573
10. बुलेटीन एकोल एक्सट्रेम ओरियां भाग 12, पृष्ठ 47 के अनुसार कम्बोडिया में एक चित्र सुरक्षित हैं जिसमें हनुमान की पूंछ पर से राम लक्ष्मण लंका जाते हुए दिखाए गए हैं। –रामकथा अनु. 573

लंका से राम की वापसी की कथा–

1. पउमचरिय/पर्व 77-78 के अनुसार रावण वध के बाद राम आदि छह वर्ष तक लंका में रावण के राजमहल में रहे। नारद के समझाने पर अयोध्या गए। –रामकथा अनु. 605
2. सेरीराम के अनुसार रावण वध के बाद राम अधिक समय तक लंका में ठहरे। अयोध्यावासी भरत, शत्रुघन तथा राम की बहन किकेवी देवी भी लंका जाकर राम से मिली। विभीषण का विवाह किकेवी देवी के साथ हुआ। तत्पश्चात लंका से अयोध्या के लिए चला। –रामकथा अनु. 605
3. गुणभद्र के अनुसार रावण वध के बाद राम लक्ष्मण अयोध्या नहीं गए बल्कि दिग्विजय के लिए पैदल चल दिए। अनेक राजाओं को जीतते हुए 40 साल बाद पैदल अयोध्या पहुंचे।
4. महानाटक के अनुसार रावण वध के बाद राम पैदल अयोध्या के लिए चले। –रामकथा अनु. 566
5. गोपाललाल वर्मा कृत संथाली लोकगीतों में श्रीराम सारस दिल्ली 7. 2.60 पृष्ठ 43-45 के अनुसार रावण वध के बाद लौट कर राम ने संथालों के यहां रह एक शिव मन्दिर वनवाया तथा इसमें वे रोजाना सीता के साथ पूजा करने आते थे। –रामकथा अनु. 271
6. वाल्मिकी रामायण युद्ध काण्ड सर्ग 125 के अनुसार लंका से राम लक्ष्मण व सीता आदि पुष्पक विमान पर बैठकर अयोध्या आए।
7. वाल्मिकी रामायण युद्ध काण्ड 13/27 के अनुसार हनुमान ने भरत से कहा है कि, सुनिए प्रसन्न वानरों का भयानक गर्जन सुनाई पड़ रहा है। जान पड़ता है, कि वानर सेना गोमती पार कर रही है। देखिस सालवन से बड़ी धूल उड़ रही है। जान पड़ता है, कि बानरी सेना सालवन को हिला रही है। वह देखिए, यहां से अधिक दूरी पर चंद्र मंडल के समान ब्रह्म निर्मित पुष्पक विमान दिखाई पड़ रहा है। स्पष्ट सिद्ध है, कि यदि पुष्पक विमान होता तो नदी पार करने की क्रिया व वानरी सेना द्वारा सालवन को हिलाने कि क्रिया कदापि नहीं होती। हम दृढ़तापूर्वक कह सकते हैं, कि रामायण का युग पिछड़ा था। पुष्पक विमान नहीं था, केवल कल्पना थी।

रामकथाओं की भारी भिन्नता

1. रामचरित मानस व वाल्मिकी रामायण के अनुसार राम ने पम्पापुर के वानर गोत्रीय आदिवासी राजा बालि को मारा, परन्तु गुणभद्र कृत उत्तर पुराण 68/140/463 के अनुसार राम ने रावण से युद्ध करने के लिए राजा बलि से महामेध नामक हाथी मांगा। राजा बालि की दोनों सेनाओं में घनघोर युद्ध हुआ, लक्ष्मण ने एक तीक्ष्ण से बाण से राजा बालि का सिर काट लिया। –रामकथा अनु. 522
2. रामचरित मानस के अनुसार मेघनाद ने लक्ष्मण के पेट में शक्ति अर्थात कटार घुसेड़ दी–परन्तु वाल्मिकी रामायण के अनुसार राववण ने लक्ष्मण के पेट में शकित अर्थात करौली या चाकू मारा।
3. रामचरित मानस व वाल्मिकी रामायण के अनुसार राम ने रावण को मारा–परन्तु विर्होर कथा के अनुसार लक्ष्मण ने रावण को मारा। –रामकथा अनु. 595
4. वाल्मिकी रामायण के अनुसार राम के मित्र शृंगवेरपुर के राजा गुह थे, परन्तु महाभारत में सत्योपाख्यान पूर्वाध अध्याय 43 के अनुसार

राम की मृगया की शिक्षा देने वाले शृंगवेरपुर के राजा गुह।
राम के तीर चलाने और युद्ध-विद्या के श्री 1008 श्री गुरुवर महाराज थे।

5. कुछ रामकथाओं के अनुसार राम ने अकेले ही खर, दूषण व त्रिशरा को चौदह हजार राक्षसों सहित जो रावण के राज्य का अन्तिम सीमा दण्डकारण्य की रक्षा करते थे। मार डाला, परन्तु ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण खण्ड पर्व 62, 47 के अनुसार लक्ष्मण ने खर व दूषण का वध किया तत्पश्चात पर्व 45 के अनुरास खर व दूषण के राजमहल में राम व लक्ष्मण ठहरे। —रामकथा अनु. 466
6. पउमचरियं पर्व 45 व 54 के अनुसार विराध के सेवकों ने सीता की खोज की। लंका के युद्ध में राम की ओर से विरोध की सेना लड़ी। —रामकथा अनु. 458

निष्कर्ष

रामायण के सभी पात्रों राम आदि के चरित्र में भारी भिन्नता है। जैन धर्म के मानने वालों का विमलसुरि कृत पउमचरियं व गुणभद्र कृत उत्तर पुराण आदि में, बौद्ध धर्म के माननेवालों का दशरथ जातक आदि में, ईसाई धर्म के माननेवालों का मसिही रामायण आदि में, इस्लाम धर्म के माननेवालों का खोतानी रामायण में, पूर्वी देशों का रामकेर्ति, रामकियेन आदि रामायणों में, सिख धर्म मानने वालों का गुरु गोविंदसिंह कृत गोविन्द रामायण में और हिन्दुओं के किन्हीं नागरिक समुदाय का बाल्मिकी रामायण में, किन्हीं नागरिक समुदाय का तुलसीदास कृत मानस में, रसिक समुदाय नागरिक समुदाय का श्री रामावतार तरंगिणी व कृपानिवास पदावली आदि में तथा विभिन्न नागरिक समुदाय का विभिन्न रामायणों आदि में विश्वास है। उससे स्पष्ट है कि, करोड़ों की आबादी वाले भारत में किसी भी ग्रन्थ से किसी व्यक्ति या नागरिक समुदाय की धार्मिक भावनाओं को आज तक न तो कोई चोट पहुंची है, न अपमान हुआ है और भविष्य में न तो चोट पहुंचेगी, न अपमान होगा। इसका इससे बड़ा साक्ष यह है कि, आज तक इस बीमारी में किसी भी व्यक्ति का न हार्ट फेल हुआ न मरा। आदि आदि।

जिसका जिसमें विश्वास है, उसके विश्वास को आज तक किसी ने नहीं छिना और न छिन सकता है। सबका मन अपने अपने अधिकार में है। दूसरे के अधिकार में नहीं है।

वास्तव में किसी भी व्यक्ति के विश्वास को न चोट पहुंचती है और न अपमान होता है, बल्कि कुछ धूर्त राजनीतिक नेता सत्ता हथियाने और सामाजिक नेता झूठ बड़प्पन प्राप्त करने के लिए गरीबों और कम अकल

लोगों को बरगला कर बवंडर खड़ा करके अपने स्वार्थ की सिद्धि करते ह। जागृत समाज को चाहिए कि, उपरोक्त ऐसे दंभी नेताओं की बातों में कभी न आवें।

लेखक की मंशा है, कि विचारों को फैलने दीजिए। किसी बात को तब मानिए जब वह बात तर्क की कसौटी पर खरी उतरे। प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है, अतः अपनी बात पुराने जमाने के ग्रन्थ मनुस्मृति की आज्ञाओं की तरह मनवाने की कोशिश मत कीजिए। जियो और जीने दो। यही लेखक की मंशा है।